सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 204, नई दिल्ली, बुधवार 01 अक्टूबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 दिल्ली पुलिस ने आयोजित किया मेगा ड्रग डिस्ट्रक्शन इवेंट
06 गांव में विज्ञान: ग्रामीण जीवन में परिवर्तन के लिए एक नई रोशनी
08 दुर्गा पूजा केलिए भूबनेश्वर में ट्रैफिक जाम असहनीय हो गया है

वर्षा के बाद जलभराव और वीवीआईपी मूवमेंट ने थामी वाहनों की रफ्तार, तीन घंटे की बारिश में दिल्ली पानी-पानी

दिल्ली में मंगलवार को हुई बारिश से मौसम सुहाना हो गया लेकिन कई इलाकों में जलभराव के कारण भयंकर जाम लग गया। दुर्गा पूजा और वीवीआईपी मूवमेंट के कारण दक्षिणी पूर्वी उत्तरी और मध्य दिल्ली में ट्रैफिक बुरी तरह प्रभावित रहा। जखीरा रेलवे अंडरपास और संजय गांधी अस्पताल जैसे इलाकों में पानी भरने से लोगों को परेशानी हुई। मुंडका किराड़ी और अन्य क्षेत्रों में भी जलभराव से यातायात बाधित रहा।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली में मंगलवार सुबह हुई वर्षा के बाद दिल्ली का मौसम तो सुहाना हो गया, लेकिन कई जगहों पर जलभराव के कारण जाम भी लग गया। वहीं, दुर्गा पूजा के त्योहार और कई जगहों पर वीवीआईपी मूवमेंट के कारण खास कर दक्षिणी दिल्ली, पूर्वी दिल्ली, उत्तरी दिल्ली और मध्य दिल्ली में भारी जाम लग गया।

सड़कों पर वाहन रेंगते दिखे

जलभराव का सबसे अधिक असर जखीरा रेलवे अंडरपास के पास देखने को मिला। वहां जलभराव के कारण रोड नंबर 40, इंद्रलोक चौक, शास्त्री नगर और केडी मार्ग पर ट्रैफिक को डायवर्ट करना पड़ा। हालांकि शाम करीब 4:30 बजे के बाद वर्षा का पानी निकलने के बाद लोगों को थोड़ी राहत मिली। लगातार तीन घंटे हुई वर्षा के दौरान खासकर आफिस जाने वालों को परेशानी उठानी पड़ी। इस दौरान सड़कों पर वाहन रेंगते दिखे।

पानी ही पानी नजर आया

जानकारी के मुताबिक, मंगोलपुरी स्थित संजय गांधी अस्पताल के परिसर में आधा फीट पानी भर गया। अस्पताल के प्रवेश द्वार के पास पानी ही पानी नजर आया। जलभराव के कारण मरीजों व तीमारदारों को असुविधा का सामना करना पड़ा। मुंडका स्थित रोहतक रोड पर

लगभग एक फीट तक पानी भर गया। इस कारण वाहन रेंग-रेंग कर चलते नजर आए। इसके अलावा किराड़ी में सड़कों और रिहायशी क्षेत्रों में एक फीट से अधिक पानी भर गया। किराड़ी का 70 फुट रोड, मुबारकपुर रोड पर जलभराव की वजह से जाम लग गया और वाहन चालक काफी देर तक जाम में फंसे दिखाई दिए।

इन इलाकों में हो गया जलभराव

शर्मा कॉलोनी, अगर नगर और बृज बिहार में भी भारी जलजमाव की स्थिति नजर आई। वहीं वर्षा के कारण एनएच-नौ की सर्विस लेन पर विनोद नगर के पास जलभराव हुआ। पटपड़गंज रोड, लक्ष्मी नगर, शकरपुर, गीता कालोनी, गांधी नगर, कैलाश नगर, सबोली, हर्ष विहार, ब्रह्मपुरी, सीलमपुर, चौहान बांगर, मुस्तफाबाद समेत कई क्षेत्रों में जलभराव हुआ। वाहनों के इंजन में वर्षा का पानी जाने से वाहन बंद हो गए। लोग वक्त पर अपने गंतव्य तक नहीं पहुंच सके। वहीं महरौली बदरपुर रोड, संगम विहार, बदरपुर, जैतपुर, पुल प्रहलादपुर, गोविंदपुरी इलाकों में जलभराव होने से वाहन चालकों को परेशानी झेलनी पड़ी।

वीवीआईपी मूवमेंट के कारण रूट डायवर्ट

वहीं दुर्गा पूजा के त्योहार और वीवीआइपी मूवमेंट के कारण दोपहर तीन बजे के बाद सीआर पार्क के पास ट्रैफिक को डायवर्ट किया गया। इस कारण आउटर रिंग रोड (पंचशील-ग्रेटर कैलाश), लाल बहादुर शास्त्री मार्ग, जेबी टीटो मार्ग, इंद्र मोहन भारद्वाज मार्ग और सीआर पार्क मुख्य मार्ग प्रभावित हुए। गुरुद्वारा रोड, बिपिन चंद्र पाल मार्ग और सी.आर.पार्क/जीके-2 पर ट्रैफिक को बंद कर दिया गया था।

वेदव्यास में नहीं बनेगा कांच का हैंगिंग ब्रिज यह दुर्भाग्यपूर्ण - प्रदेश अध्यक्ष एन सी पी सरकार ने बदला निर्णय, बनेगा पैदल चलने योग्य सीमेंट ब्रिज

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला: लंबे इंतज़ार के बाद भी बेदव्यास में प्रस्तावित कांच का झूला पुल(हैंगिंग ब्रिज) अब नहीं बन पाएगा। राज्य सरकार ने सुरक्षा कारणों का हवाला देते हुए इस महत्वाकांक्षी योजना को बदल दिया है। अब कांच के पुल की जगह पैदल चलने योग्य सीमेंट ब्रिज का निर्माण किया जाएगा।

गौरतलब है कि वर्ष 2014 में केंद्र सरकार ने लगभग 25 करोड़ रुपये की मंजूरी दी थी, लेकिन तत्कालीन राज्य सरकार की अनुमति न मिलने से राशि वापस लौट गई। बाद में इस वर्ष 29 मार्च को राउरकेला दौरे पर आए राज्य के कानून, सड़क एवं भवन निर्माण मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन ने लगभग 35 करोड़ रुपये की लागत से काँच का आधुनिक झूला पुल बनाने की घोषणा की थी। छह माह बीत जाने के बाद भी काम शुरू नहीं हो सका और अब अचानक निर्णय बदल दिया गया है।

इस फैसले पर शहरवासियों और विभिन्न संगठनों की तीखी प्रतिक्रिया सामने आई है। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ राजकुमार यादव ने कहा कि ₹यदि सुरक्षा कारणों से योजना बदली जानी थी तो पहले ही साफ कर दिया जाता, ताकि जनता को भ्रमित न किया जाता। यह पूरी तरह स्थानीय प्रशासन के अक्षमता को जग जाहिर करता है जो कि यहां ही नहीं बल्कि विभिन्न मामलों में खुलकर सामने आई है"

जानकारी हो कि पिछले वर्षों में कई जनप्रतिनिधियों और संगठनों ने झूला पुल निर्माण की माँग उठाई थी। सर्वे रिपोर्ट में इसकी अनुमानित लागत लगभग 76 करोड़ बताई गई थी। भाजपा सरकार के सत्ता में आने के बाद काँच का पुल बनने की घोषणा हुई थी, लेकिन अब इसके स्थान पर सीमेंट का पैदल पुल बनाए जाने का निर्णय लिया गया है जिससे स्थानीय निवासियों में निराशा का माहौल है1 जानकारों के अनुसार राउरकेला को केवल राजस्व दोहन में अग्रणी श्रेणी दी जाती है किंतु जहां राजस्व लागत या राजस्व के खर्च की बात आती है तो वहीं इसके साथ भेदभावपूर्ण रवैया अपनाया जाता है जो कि अपने आप में दुर्भाग्यपूर्ण है।

"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत"
सेवा ही संकल्प है!

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है।

A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुँचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुफ़्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

क्या मिलेगा हमसे जुड़कर

Ground-level food distribution,

Getting children free education,

हम मानते हैं – छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

If you believe in humanity, equality, and service — then you're already a part of our family.

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज़ बनें इस बदलाव की।

Together, let's serve. Together, let's change.

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए

SCAN ME

नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़े,

www.tolwa.com/member.html

स्कैनर को स्कैन कर के भी आप टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से फार्म भर कर जुड़ सकते हैं,

वेब साइट पर www.tolwa.com पर भी जाकर आप फार्म भर के टोलवा ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं। www.tolwa.com

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com
www.tolwa.com

भाजपा के वरिष्ठ नेता दिल्ली की राजनीति के भीष्म पितामह मेरे पिता तुल्य पूजनीय विजय कुमार मल्होत्रा जी न सिर्फ दिल्ली में भाजपा के संगठन को मजबूत बनाया, वह मेरे जैसे लाखो कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शक रहे ।आज उनके पार्थिव शरीर को श्रद्धांजलि अर्पित कर उनके परिजनों को संवेदनाएँ व्यक्त कीं एवं दिल्ली की मुख्यमंत्री बहन रेखा गुप्ता जी, केंद्रीय मंत्री भाई हर्ष मल्होत्रा जी के साथ मल्होत्रा जी के साथ की यादें साझा की-
राजेश भाटिया ।

स्टॉल प्रस्ताव :
सिंगल साइड ओपन स्टोल : 2000
कॉर्नर साइड स्टोल : 3500
तीन साइड ओपन स्टोल : 4500
सिर्फ एक टेबल : 1000
सिर्फ दो टेबल : 1250

कार्यक्रम विवरण :
रक्षा गरबा-डांडिया और दुर्गा पूजा महोत्सव
स्थान : डीडीए ग्राउंड, रामलीला ग्राउंड के सामने, स्टेट ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी के बगल में, PNB बैंक के पीछे, सेक्टर 10, द्वारका, नई दिल्ली 110075

तारीखें : 22 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025
* दुकान का आकार : 10 फीट x 10 फीट
* शामिल सुविधाएँ :
* 2 कुर्सियाँ * 2 टेबल
*लाइट व चार्जिंग प्वाइंट

भुगतान की शर्तें :
* अग्रिम भुगतान आवश्यक
* बुकिंग के समय 50% भुगतान
* कब्जे के समय 50% भुगतान

संपर्क : इंदु राजपूत
मोबाइल : 9210210071

विशेष सूचना
नवरात्रि में मातारानी की खंडित मूर्तियाँ, टूटे हुए फ़ोटो, पुरानी चुनरियाँ और नवरात्रि में बोए गए जवारों का विसर्जन
● दशहरे के दूसरे दिन
● दिनांक : 3 अक्टूबर की सुबह
● स्थान : रक्षा नवरात्रि गरबा एवं दुर्गा पूजा ग्राउंड
स्थान विवरण :
रामलीला मैदान के सामने,
आरटीओ ऑथोरिटी के पास,
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली
संपर्क सूत्र : इंदु राजपूत, मोबाइल : 9210210071
सभी श्रद्धालुओं से निवेदन है कि इस पावन विसर्जन में सहभागी बनें।

"श्री श्री दुर्गा शरणम" तैंतीसवां सार्वजनिन दुर्गोत्सव

प्रिय महोदय,

आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी आपके शहर उत्तम नगर में 'उत्तम नगर कालीबाड़ी द्वारा शनिवार दिनांक 27 सितंबर, 2025 से 2 अक्टूबर, 2025 बृहस्पतिवार तक सी-50, मनसा राम पार्क, नई दिल्ली-59 में श्री श्री दुर्गा माँ की पूजा एवम् 20 अक्टूबर, 2025 सोमवार श्री श्री काली माँ की पूजा का भव्य आयोजन किया जा रहा है। अतः आप सबसे हार्दिक निवेदन है कि आप सब इस विशाल आयोजन में सम्मिलित होकर माँ दुर्गा एवम् काली माँ का आर्शीवाद प्राप्त करें और इस आयोजन को सफल बनायें।

प्रिय भक्तों!

हमें आपको यह सूचित करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि उत्तम नगर कालीबाड़ी, सी-50, मनसा राम पार्क, उत्तम नगर, नईदिल्ली-110059 में 33वें वर्ष दुर्गा पूजा एवं काली पूजा समारोह का आयोजन कर रही है। हम आपके परिवार और मित्रों को 27 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025 तक हमारे काली मंदिर में आयोजित होने वाले इस समारोह में शामिल होने के लिए सादर आमंत्रित करते हैं।

आइए एक बार फिर खुशियाँ बाँटें, अपनी आत्मा को समृद्ध करें और पारिवारिक माहौल में त्योहार का आनंद लें। आप सभी के उदार सहयोग और भागीदारी की हम बहुत सराहना करते हैं। दुर्गा पूजा पर और हमेशा आप पर ईश्वर की कृपा बनी रहे।

भवदीय

उत्तम नगर कालीबाड़ी,
मलय डे (अध्यक्ष) 7217666618
जयंत डे (सचिव) 9654385888
पिंकी कुंडू (सदस्य)

पूजा कार्यक्रम-2025

27 सितंबर 2025, (शनिवार). बोधन
28 सितंबर 2025, (रविवार) षष्ठी आमंत्रण और अधिबास
29 सितंबर 2025, (सोमवार) सप्तमी पूजा
30 सितंबर 2025, (मंगलवार) अष्टमी और संधि पूजा
1 अक्टूबर 2025, (बुधवार) नवमी पूजा
2 अक्टूबर 2025, (गुरुवार) दशमी पूजा और विसर्जन
पुष्पांजलि 11.00 बजे से 1:00 बजे तक,
प्रसाद वितरण 1.00 बजे से 1:30 बजे तक,
भोग वितरण 1.30 बजे से 3.00 बजे तक।
संध्या आरती- 7.00 बजे
श्री श्री काली पूजा सोमवार, 20 अक्टूबर, 2025

कार्यक्रम का स्थान:

कालीबाड़ी, सी-50, मनसा राम पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059

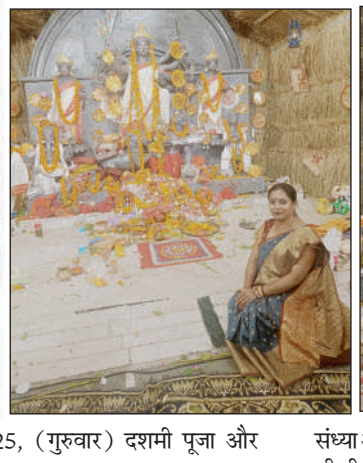

महानवमी आज

शारदीय नवरात्रि समाप्ति की ओर है। यह पावन पर्व महानवमी के दिन कन्या पूजन के साथ संपन्न होगा और इसके अगले दिन पूरे उल्लास और श्रद्धा के साथ विजयदशमी मनाई जाएगी। धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक नवरात्रि की अष्टमी और नवमी तिथियों पर कन्या पूजन का विशेष महत्व है। इस दिन घरों में कन्याओं को देवी का स्वरूप मानकर पूजा जाता है और उनके लिए भोज का आयोजन किया जाता है। इससे मां दुर्गा के साथ-साथ सभी देवी-देवताओं की कृपा भी जीवन पर बनी रहती है। यही नहीं कन्या पूजन के प्रभाव से घर-परिवार में समृद्धि, सुख-शांति और सौभाग्य का वास भी होता है। इस वर्ष महानवमी 1 अक्तूबर 2025 को मनाई जाएगी। इस दिन देशभर के देवी मंदिरों में भव्य अनुष्ठान, कन्या पूजन और महाआरती का आयोजन किया जाता है।

कन्या पूजन शुभ मुहूर्त

==========

* नवमी तिथि पर कन्या पूजन सुबह 4 बजकर 53 मिनट से 5 बजकर 41 मिनट तक कर सकते हैं।

* सुबह 8 बजकर 6 मिनट से 9 बजकर 50 मिनट के बीच आप कन्या भोज कर सकते हैं।

नवमी तिथि

==========

इस साल 30 सितंबर 2025 को शाम 6 बजकर 6 मिनट से नवमी तिथि की शुरुआत होगी। इसका समापन 1 अक्तूबर को शाम में 7 बजकर 2 मिनट पर होगा। ऐसे में महानवमी 1 अक्तूबर 2025 को मान्य होगी।

शुभ संयोग

==========

महानवमी पर पूर्वाषाढा नक्षत्र बन रहा है, जो सुबह 8 बजकर 6 मिनट तक रहेगा। इसके बाद उत्तराषाढा नक्षत्र का संयोग बनेगा। हालांकि, इस तिथि पर अतिगण्ड योग रहेगा। ज्योतिष दृष्टि से भी यह तिथि खास है। इस दिन सूर्य और बुध के कन्या राशि में होने से बुधादित्य योग बन रहा है।

कन्या पूजन के नियम

==========

* मान्यता है कि कन्या पूजन में 2 से 10 वर्ष तक की कन्याओं को शामिल करना चाहिए।

* माना जाता है कि कन्या भोज से पहले उनके चरण धोकर उनका आदर करना चाहिए। इससे देवी की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

* धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक कन्या पूजन में हमेशा 9 कन्याएं बैठानी चाहिए। हालांकि, आप इससे अधिक और 3, 5 या 7 कन्याओं को भी भोजन करा सकती हैं।

* कन्या पूजन में एक लड़के को भी अवश्य भोजन करना चाहिए, जिसे बटुक भैरव भी कहा जाता है। मान्यता है कि यह बहुत शुभ होता है और घर में सुख-समृद्धि आती है।

* कन्या पूजन में आप हलवा, पूरी, काले चने को अवश्य शामिल करें और अंत में उन्हें कुछ उपहार या रूपये देकर आशीर्वाद लें।

महानवमी का महत्व

==========

महानवमी केवल नवरात्रि का नौवाँ दिन ही नहीं है; यह आध्यात्मिक पूर्णता का भी प्रतीक है। भक्तों का मानना है कि देवी के पूर्व आठ स्वरूपों - शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि और महागौरी - की पूजा करने के बाद, यह यात्रा माँ सिद्धिदात्री के साथ समाप्त होती है।

यह दिन इस बात का प्रतीक है कि पिछले आठ दिनों की प्रार्थनाएँ और व्रत महानवमी पर अपने चरम पर पहुँचते हैं। यह दिन राक्षस महिषासुर पर देवी दुर्गा की अंतिम विजय का प्रतीक है। इस दिन माँ सिद्धिदात्री अपने भक्तों को आध्यात्मिक ज्ञान, शक्ति और दिव्य शक्तियाँ प्रदान करती हैं। यह नवरात्रि के समापन का भी प्रतीक है।

श्रीकृष्ण कृत देवी स्तुति ॥

ब्रह्मवैवर्तपुराण, प्रकृतिखण्ड के ६६वें अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण चंद्र, नारद मुनि को देवी स्तोत्र सुनाते हैं जो सम्पूर्ण विघ्नों का नाश करने वाला, सुखदायक, मोक्षदायक, सार वास्तु तथा भवसागर से पार होने का साधन है।देवी का यह स्त्रोत बल प्रदान करने वाला , शत्रु बाधा निवारक है।

श्रीकृष्ण उवाच

त्वमेव सर्वजननी मूलप्रकृतिरीश्वरी । त्वमेवाद्या सृष्टिविधौ स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका ।।

कार्यार्थे सगुणा त्वं च वस्तुतो निर्गुणा स्वयम् । परब्रह्मस्वरूपा त्वं सत्या नित्या सनातनी ।।

तेजःस्वरूपा परमा भक्तानुग्रविग्रहा । सर्वस्वरूपा सर्वेशा सर्वाधारा परात्परा ।।

सर्वबीजस्वरूपा च सर्वपूज्या निराश्रया । सर्वज्ञा सर्वतोभद्रा सर्वमंगलमंगला ।।

सर्वबुद्धिस्वरूपा च सर्वशक्तिस्वरूपिणी । सर्वज्ञानप्रदा देवी सर्वज्ञा सर्वभाविनी ।।

त्वं स्वाहा देवदाने च पितृदाने स्वधा स्वयम् । दक्षिणा सर्वदाने च सर्वशक्तिस्वरूपिणी ।।

निद्रा त्वं च दया त्वं च तृष्णा त्वं चात्मनः प्रिया । क्षुत्क्षान्तिः शान्तिरीशा च कान्तिः सृष्टिश्च शाश्वती ।।

श्रद्धा पुष्टिश्च तन्द्रा च लज्जा शोभा दया तथा । सतां सम्पत्स्वरूपा च विपत्तिरसतामिह ।।

प्रीतिरूपा पुण्यवतां पापिनां कलहाङ्कुरा । शश्वत्कर्ममयी शक्तिः सर्वदा सर्वजीविनाम् ।।

देवेभ्यः स्वपदो दात्री धातुर्धात्री कृपामयी । हिताय सर्वदेवानां सर्वासुरविनाशिनी ।।

योगनिद्रा योगरूपा योगदात्री च योगिनाम् । सिद्धिस्वरूपा सिद्धानां सिद्धिदा सिद्धयोगिनी ।।

ब्रह्माणी माहेश्वरी च विष्णुमाया च वैष्णवी । भद्रदा भद्रकाली च सर्वलोकभयंकरी ।।

ग्रामे ग्रामे ग्रामदेवी गृहदेवी गृहे गृहे । सतां कीर्तिः प्रतिष्ठा च निन्दा त्वमसतां सदा ।।

महायुद्धे महामारी दुष्टसंहाररूपिणी । रक्षास्वरूपा शिष्टानां मातेव हितकारिणी ।।

वन्द्या पूज्या स्तुता त्वं च ब्रह्मादीनां च सर्वदा । ब्राह्मण्यरूपा विप्राणां तपस्या च तपस्विनाम् ।।

विद्या विद्यावतां त्वं च बुद्धिर्बुद्धिमतां सताम् । मेधा स्मृतिस्वरूपा च प्रतिभा प्रतिभावताम् ।।

राज्ञां प्रतापरूपा च विशां वाणिज्यरूपिणी । सृष्टौ सृष्टिस्वरूपा त्वं रक्षारूपा च पालने ।।

तथान्ते त्वं महामारी विश्वस्य विश्वपूजिते ।कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च मोहिनी ।।

दुरत्यया मे माया त्वं यया संमोहितं जगत। यया मुग्धो हि विद्वांश्च मोक्षमार्गं न पश्यति ।।

इत्यात्मना कृतं स्तोत्रं दुर्गायाः दुर्गनाशनम् । पूजाकाले पठेद्यो हि सिद्धिर्भवति वाञ्छिता ।।

वन्ध्या च काकवन्ध्या च मृतवत्सा च दुर्भगा । श्रुत्वा स्तोत्रं वर्षमेकं सुपुत्रं लभते ध्रुवम् ॥

कारागारे महाघोरे यो बद्धो दृढबन्धने । श्रुत्वा स्तोत्रं मासमेकं बन्धनान्मुच्यते ध्रुवम् ॥

यक्ष्मग्रस्तो गलत्कुष्ठी महाशूली महाज्वरी । श्रुत्वा स्तोत्रं वर्षमेकं सद्यो रोगात्प्रमुच्यते ॥

पुत्रभेदे प्रजाभेदे पत्नीभेदे च दुर्गतः । श्रुत्वा स्तोत्रं मासमेकं लभते नात्र संशयः ॥ हिंस्रजन्तुसमीपे च श्रुत्वा स्तोत्रं प्रमुच्यते ॥

राजद्वारे श्मशाने च महारण्ये रणस्थले । गृहदाहे च दावाग्नौ दस्युसैन्यसमन्विते । स्तोत्रश्रवणमात्रेण लभते नात्र महादरिद्रो मूर्खश्च वर्षं स्तोत्रं पठेत्तु यः । विद्यावान् धनवांश्चैव स भवेन्नात्र संशयः ॥ संशयः ।।

इति श्रीब्रह्मवैवर्ते श्रीकृष्णकृतं दुर्गास्तोत्रं सम्पूर्णम्।

पंडित योगेश पौराणिक (ज्योतिषाचार्य)

काली मिर्च, KaliMirch

बारिश का मौसम अपने साथ नमी, कीटाणु और पाचन से जुड़ी समस्याएं लेकर आता है। ऐसे में हमारी प्रतिरोधक क्षमता कमज़ोर हो जाती है। आयुर्वेद कहता है कि मानसून के दौरान अग्नि (पाचनशक्ति) मंद हो जाती है, जिससे वात और कफ दोष बढ़ते हैं। इस मौसम में एक छोटी सी चीज़ बड़ी रक्षा कर सकती है — और वो है काली मिर्च।

काली मिर्च (BlackPepper) का आयुर्वेदिक महत्व

आयुर्वेद में काली मिर्च को "मरिच" कहा गया है, जो अग्निवर्धक, कफहर, वातहर और दीपन-पाचन गुणों से भरपूर है। इसे त्रिकटु (सौंठ, काली मिर्च और पिपली) में भी शामिल किया गया है, जो पाचन और इम्यूनिटी बढ़ाने की अति प्रभावशाली औषधि है।

गुणधर्म (Properties)

रुचिकरः स्वाद बढ़ाती है

कफघ्नः कफ से राहत देती है

अग्निदीपकः पाचन अग्नि को तेज़ करती है

श्लेष्महारीः बलगम को खत्म करती है

संवेदनाशकः जुकाम, सर्दी में उपयोगी

मानसून में काली मिर्च के चमत्कारी लाभ

1 सर्दी-जुकाम और खांसी में लाभकारी

मानसून में सर्दी और खांसी आम हैं। ऐसे में काली मिर्च रामबाण औषधि है।

नुस्खा

1 चम्मच शहद में 1/4 चम्मच काली मिर्च चूर्ण मिलाकर दिन में दो बार लें।

इससे बलगम साफ होता है और खांसी में राहत मिलती है।

2 पाचन शक्ति बढ़ाए

बारिश में अपच, गैस और एसिडिटी बहुत सामान्य है। काली मिर्च इन समस्याओं को दूर करती है।

नुस्खा

भोजन के बाद चुटकीभर काली मिर्च, सेंधा नमक और अजवायन को चबाएं।

इससे भूख बढ़ती है और पाचन बेहतर होता है।

3 इम्यून सिस्टम को मज़बूत बनाए

काली मिर्च में पाइपरिन नामक तत्व होता है, जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

नुस्खा

एक कप गर्म दूध में काली मिर्च और हल्दी डालकर रोज रात को पिएं।

4 मलेरिया और वायरल बुखार से बचाव

मानसून में मलेरिया और वायरल आम हो जाते हैं। काली मिर्च शरीर को संक्रमण से लड़ने में मदद करती है।

नुस्खा

तुलसी की पत्तियों, अदरक, काली मिर्च और लौंग से काढ़ा बनाकर सेवन करें।

5 त्वचा और बालों के लिए फायदेमंद

मानसून में स्किन एलर्जी और बाल झड़ने की समस्या बढ़ती है। काली मिर्च इन समस्याओं को दूर करती है।

नुस्खा

काली मिर्च का पेस्ट नींबू रस के साथ लगाएं। यह डैंड्रफ और स्किन इंफेक्शन में मदद करता है।

आयुर्वेदिक प्रयोग

त्रिकटु चूर्ण

काली मिर्च, पिपली और सौंठ तीनों मिलकर बनाते हैं त्रिकटु चूर्ण। मानसून में इसका उपयोग कफनाशक, अग्निवर्धक और प्रतिरक्षक गुणों के लिए किया जाता है।

कैसे लें

त्रिकटु चूर्ण आधा चम्मच शहद के साथ रोज सुबह लें।

सावधानियां

अत्यधिक मात्रा में काली मिर्च लेने से गर्मी, एसिडिटी और प्यास बढ़ सकती है।

गर्भवती महिलाएं चिकित्सक से सलाह लेकर ही सेवन करें।

शुद्ध और अच्छी गुणवत्ता वाली काली मिर्च का ही प्रयोग करें।

ग्रंथों में वर्णन

चरक संहिताः मरिच को "कफनाशक एवं अग्निवर्धक" बताया गया है।

भावप्रकाश निघंटुः "मरिच तिक्तोष्णा दीपनी" यानी स्वाद में कड़वी, गुण में तीव्र और पाचन को बढ़ाने वाली।

निष्कर्ष

कभी रसोई के कोने में उपेक्षित पड़ी काली मिर्च वास्तव में मानसून में आरोग्य का प्रहरी है। इसकी मदद से हम सर्दी-जुकाम से लेकर पाचन और रोग प्रतिरोधक क्षमता तक हर पहलू में लाभ उठा सकते हैं। यह न सिर्फ स्वाद को बढ़ाती है, बल्कि शरीर की रक्षा भी करती है।

अपनी कुल परंपरा को जानने से, धर्म-पथ पर चलना सुगम हो जाता है। यह कुल परंपरा ही है जो हमें हमारे पूर्वजों से जोड़ती है।

कुल परंपरा के द्वारा हम अपने पूर्वजों के रीति-रिवाज से जुड़ते हैं जो धर्म/संस्कारों से हमें जोड़ते हैं। कुल परंपरा के द्वारा हम अपने कुल देवी/कुलदेवता से लेकर अपने पूर्वजों के रीति रिवाज व संस्कारों से जुड़े रहते हैं। हमें आधुनिक तथाकथित विचारधारा में न पड़कर, अपनी कुल परंपरा का संरक्षण करना चाहिए। अभी तो हमारे बच्चों को यह भी नहीं पता कि हमारे घर की कुलदेवी अथवा कुल देवता क्या/कौन हैं? उनके गुण/देषणा क्या है? यदि घर के बच्चों को अपने वेद, शाखा, सूत्र इत्यादि के बारे में नहीं पता तो हम अपने धर्म की रक्षा कैसे करेंगे? वैसे यह प्रश्न बहुतायत में उठता है कि धर्म की रक्षा करनी किससे है? हमें तो धर्माचरण करना है। ध्यान रहे कि जिस प्रकार प्रकाश के न रहने में, अंधेरे का अस्तित्व स्थापित हो जाता है उसी प्रकार धर्म के मार्ग में न चलने पर, अधर्म का अस्तित्व बनने लगता है। होश रहे कि यदि आज सनातन में भाई-बहन, पिता-पुत्री के बीच में अनैतिक संबंध नहीं है, तो इसका मूल कारण हमारी धार्मिकता ही है। आखिर धर्म ही तो है जो हमें अनैतिक कार्य करने से रोकता है अन्यथा पाश्चात्य/मुगल संस्कृति में तो भोग के लिए, मात्र स्त्री और पुरुष होना ही काफी है। इसलिए केवल धर्म का पक्ष या विरोध की चर्चा में ही न उलझें। समझें अपने धर्माचरण को, अपनायें अपने जीवन में धर्म को, तो हम देखेंगे कि अंधकार मिटने लगा। प्रकाश जीवन में फैलने लगा। इसलिए सर्वप्रथम हम सब लोग धर्म के मार्ग में चलें। होश रहे कि कुल परंपरा के पालन करने से धर्माचरण होता है और जिधर धर्म है, उधर अधर्म नहीं रह सकता।

हमारे वृद्ध माता-पिता के प्रति हमारा व्यवहार

क्या हम बूढ़े नहीं होंगे? सोचिए,

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह सहज

हरदा मध्य प्रदेश

क्या वह असली समर्पण है या केवल दिखावा? यह सवाल हर उस व्यक्ति के मन में जरूर आता है जो अपने बुजुर्ग माता-पिता के साथ समय गुजारता है या उनके प्रति कर्तव्य का एहसास करता है। क्या हम वास्तव में उनके लिए दिल से समर्पित हैं, उनकी सेवा करते हैं, उनकी जरूरतों को समझते हैं, या केवल समाज में अच्छा दिखने के लिए उनके साथ कुछ दिखावटी व्यवहार करते हैं? समर्पण का मतलब है बिना किसी स्वार्थ या अपेक्षा के अपने माता-पिता की सेवा करना। उनके शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक सुख को समझना और सम्मान देना। यह समर्पण केवल शब्दों या दिखावे तक सीमित नहीं होता, बल्कि उनकी छोटी-छोटी जरूरतों पर ध्यान देना, उनकी बात सुनना, उनके साथ समय बिताना और उन्हें प्यार जताना है। अक्सर, परिवार और समाज की अपेक्षाओं से दबाव में आकर हम वृद्ध माता-पिता के साथ केवल बाहरी तौर पर अच्छा व्यवहार करते हैं। मंदिर, मिलन समारोह, रिश्तेदारों के मिलने-जुलने में उनका साथ देते हैं लेकिन असल जीवन में उनकी सांत्वना या सहारा बनने में कंजूसी कर देते हैं। यह दिखावा इसलिए भी होता है क्योंकि हमें लगता है कि इससे हमारी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। हम सभी का जीवन एक चक्र की तरह है — एक समय हम युवा होते हैं, एक दिन वृद्धावस्था में पहुंचेंगे। यदि उस समय हमारे बच्चे हमारे साथ वैसा ही दिखावटी व्यवहार करेंगे जैसा हम करते आए हैं, तो हमारा अकेलापन और पीड़ा कितनी गहरी होगी? यह सोचना जरूरी है कि पिता-माता का सम्मान और सेवा कोई बोझ नहीं बल्कि जीवन का एक पुण्य कार्य है। यह हमारा कर्तव्य है कि हम निस्वार्थ भाव से अपने बुजुर्गों का साथ दें। उनकी भावनाओं को समझना, उनकी बात ध्यान से सुनना, रोजमर्रा की छोटी-छोटी जरूरतों में उनकी मदद करना, उन्हें अकेला महसूस न होने देना, उनके लिए समय निकालना, स्वास्थ्य और सुरक्षा का पूरा ध्यान रखना और उनके अनुभवों और ज्ञान का सम्मान करना, उनका मार्गदर्शन लेना असली समर्पण के लिए जरूरी है। वृद्ध माता-पिता के प्रति हमारा व्यवहार दिखावे से ऊपर उठकर असली, सच्चे और समर्पित होना चाहिए। आज हम उनके लिए जो करते हैं, वही कल हमें चाहिए होगा। इसलिए अपनी सोच बदलिए और अपने बुजुर्गों के साथ अपने रिश्ते को गहराई से जोड़िए, ताकि आने वाले दिनों में भी हमें वह सम्मान और प्यार मिल सके जो हम आज उन्हें देना भूल रहे हैं। हम सब को याद रखना चाहिए — हम भी एक दिन वृद्ध होंगे, और उस समय हमें अपने बच्चों से वही सहानुभूति और सम्मान चाहिए होगा। क्या हम आज से ही इस बदलाव को स्वीकार करेंगे?

भीड़ जमावडा होने का बन रहीं पैमाना...!

अभिनेता से नेता बने विजय की चुनावी रैली,
मचती भगदड़ दुर्भाग्यपूर्ण स्तब्ध करती शैली।
भीड़ होती बेकाबू 'उन्मत्तता' में न रहता काबू,
ये चालीस मासूम जिंदगियाँ निगल गया बाबू।

आखिर देश कब तक ऐसी त्रासदियाँ झेलेगा,
समाज और शासन की नाकामी कोई रोकेगा।
क्यों व्यवस्थाएं भीड़ नियंत्रण करने में विफल,
हरदम पीड़ा देने वाली ताकतें ही क्यों सफल?

क्यों? भीड़ जमावडा होने का बन रहीं पैमाना,
शांतिपूर्ण आयोजन का चला गया हैं जमाना।
अभिनेता को देखने की ऐसी क्या हैं दीवानगी,
चीख,पुकार एवं दर्द को देते आ रहें परवानगी।
(संदर्भ-नेता बने विजय की चुनावी रैली में मची भगदड़)

संजय एम तराणेकर

राजनैतिक व्यंग्य-समागम : ये जेन ज़ी, जेन ज़ी क्या है! :

कोई बताएगा कि ये जेन ज़ी क्या बला हैं? बताइए, बेचारे छप्पन इंची छाती वालों तक को डरा के रखा हुआ है। और डर भी छोटा-मोटा नहीं, थर-थर कंपाने वाला डर। ऐसा डर जैसे कोई भूत देख लिया हो। देखा नहीं, कैसे जेन ज़ी का नाम लेने भर से सोनम वांगचुक को गिरफ्तार कर लिया गया। वह भी राष्ट्रीय सुरक्षा कानून में यानी राष्ट्र की सुरक्षा को खतरे में डालने के लिए। अब राष्ट्र को लगे न लगे, पर छप्पन इंच वालों को तो सुरक्षा खतरे में लग ही रही होगी। वर्ना वांगचुक से उन्हें खास प्यार भले ही नहीं रहा हो, पर पहले दुश्मनी तो हर्गिज नहीं थी। उल्टे वांगचुक ने तो एक जमाने में थैंक यू मोदी जी का ट्वीट भी किया था। यह तब की बात है जब मोदी जी-शाह जी, कश्मीरी अब्दुलों की चूड़ी टाइट करने के चक्कर में, जम्मू-कश्मीर को तोड़ने-फोड़ने लगे हुए थे।

वांगचुक ने समझा कि हर चीज के लिए श्रीनगर का मुंह देखने से छुट्टी मिली। अब जो भी होगा, लेह से होगा, लेह-लद्दाख वालों की मर्जी से होगा। वह तो बाद में उनकी समझ में आया कि गद्दी तो मोदी जी-शाह जी श्रीनगर से उखाड़ कर दिल्ली ले गए। कहां तो वे लेह-लद्दाख से श्रीनगर की दूरी का रोना रो रहे थे और कहां अब हर चीज के लिए दिल्ली का मुंह देखना पड़ेगा। दिल्ली के मुकाबले तो श्रीनगर बहुत नजदीक था।

श्रीनगर के मुकाबले दिल्ली से लेह भले दूर हो, पर राष्ट्र सेठ, ''जिसका नाम नहीं ले सकते'', दिल्ली के बहुत नजदीक था। नजदीक क्या, वह तो दिल्ली में ही था। दिल्ली में होना भी क्या, वह तो खुद ही दिल्ली था -- नयी दिल्ली। नयी दिल्ली में शाही तख्त था और शाही तख्त के पीछे राष्ट्र सेठ। शाही तख्त से हुक्म जारी हुआ -- जो राष्ट्र सेठ मांगे सो राष्ट्रहित, अज़ दिल्ली ता लेह-लद्दाख।

राष्ट्र सेठ ने लद्दाख में नारा लगाया, राष्ट्र की जमीन, सो राष्ट्र सेठ की जमीन और सूरज से बिजली निकालने के नाम पर एक शहर के बराबर जमीन पर कब्जा कर लिया। दिल्ली ने कहा, यही विकास है। साथ में जोड़ दिया -- इब्तदा-ए-इश्क है रोता है क्या, आगे-आगे देखिए होता है क्या। लेह-लद्दाख वाले डर गए। ये वाला विकास नहीं चाहिए, का शोर मचाने लगे। मोदी जी-शाह जी ने समझाने की कोशिश भी कि विकास तो विकास है, उसमें ये वाला और वो वाला नहीं करते। विकास जैसा भी हो, उसका विरोध करना अच्छी बात नहीं है। राष्ट्र सेठ का विरोध कर के, राष्ट्र-विरोध करने की गलती नहीं करें। पर पहाडियों का पत्थरों वाला अड़ियल सुभाव, नहीं माने तो नहीं ही माने। लगे आंदोलन करने और वह भी गांधीवादी तरीके से। कभी पांच दिन की भूख हड़ताल, तो कभी पंद्रह दिन और कभी अनिश्चित कालीन भूख हड़ताल। कभी धरना, कभी बंद। भीड़ बढ़ती गयी। यहां तक कि चुनाव में खतरा नजर आने लगा। नतीजा सामने है। मांगा छठा शेड्यूल, मिली गोली, कर्फ्यू और गिरफ्तारी, वह भी अकेले वांगचुक की नहीं, सैकड़ों की।

आप पूछेंगे कि इसमें जेन ज़ी कहां आ गयी? जेन ज़ी आ गयी, क्योंकि वांगचुक ने अपने एक भाषण में जेन ज़ी का नाम ले दिया। फिर क्या था, जेन ज़ी लेह में आ गयी। असल में जेन ज़ी तो पहले ही दरवाजे पर खड़ी थी। उसका डर हवाओं में था। खासतौर पर दिल्ली की हवाओं में। और डर हवाओं में क्यों न होता? जेन ज़ी नाम का एलान कर के जेन ज़ी ने राजगद्दी भले ही नेपाल में ही पलटी हो, पर उसकी शुरूआत तो और पहले हो चुकी थी। कोई कहता है अरब सप्रिंग, तो कोई कुछ और कहता है। और तो और खुद हमारे पड़ौस में पहले श्रीलंका, फिर बांग्लादेश और अब नेपाल; तख्त पर तख्त लुढ़कते जा रहे हैं। डरना तो बनता है। खासतौर पर उनका जो तख्त पर तो बैठे हैं पब्लिक के नाम पर और खुल्लमखुल्ला नजदीकी बढ़ा रहे हैं, तरह-तरह के धन्नासेठों से।

नौजवानों का धीरज टूट रहा है। न करने को काम और न गुजारे को जेब में छदाम। और तख्तेशाही पर बैठने वालों का बिना कहे यह साफ एलान कि हमसे आगे भी कोई उम्मीद मत रखना। चुनाव से हमें हटाने की तो सोचना भी मत! ऐसे में छप्पन इंची छाती की कोई कितनी भी शेखी मार ले, डरना तो बनता है। डर तो सब को लगता है। पांव सब के कांपते हैं। पर इस डर के आगे भी उनकी जीत नहीं है। इस डर के आगे गोलीबारी है, गिरफ्तारी है।

छप्पन इंची छाती डर रही है। गिरफ्तारियां कर रही है, पुलिस-मिलिटरी आगे कर रही है, पर डर रही है। डर रही है, तभी तो जेन ज़ी का जिक्र भर करने पर, सुरक्षा कानून में गिरफ्तारियां कर रही है। और छप्पन इंची छाती डर रही है, इसलिए लोग उसे और भी डरा रहे हैं। एक नयी हवा यह कहने की चल रही है कि जेन ज़ी तो हर जगह है और वह भी हमेशा से। लोग कह रहे हैं कि भगतसिंह भी अपने टैम के जेन ज़ी ही तो थे। नौजवान तो थे ही। पढ़े-लिखे भी थे। बदलाव चाहते थे। और अपनी कल्पना के बदलाव के लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने को तैयार थे। यानी जैसे तब भगत सिंह यहां पैदा हुए थे, जेन ज़ी अब यहां भी प्रकट हो सकता है। अचानक से प्रकट हो सकता है। इतनी ज्यादा बेरोजगारी है कि बेरोजगार नौजवानों का हुजूम जो कभी दिल्ली, तो कभी लखनऊ, कभी पटना, तो कभी जयपुर, कभी देहरादून तो कभी बेंगलुरु में, कभी भर्ती परीक्षा के लिए, तो कभी परीक्षा में पेपर लीक के खिलाफ, प्रदर्शनों में पुलिस की लाठियां खा रहा है, अब तक अपने अंदर छुपे जेन ज़ी को नहीं पहचान सका, इसी में हैरानी की बात है। पर चोर की मां कब तक खैर मनाएगी। अब्दुल की चूड़ी टाइट होने की झूठी खुशी से, नौजवान पीढ़ी कब तक अपने भूखे पेट को बहलाएगी? राज करनी वालों को डर तो लगेगा ही।

खैर! गद्दीधारियों का यह डर अच्छा है। इस डर के आगे, गद्दीधारियों की नहीं, पब्लिक की जीत है। सो जेन ज़ी को आने दो। गद्दीधारियों को इसे अपने खिलाफ कभी चीन, कभी नेपाल, कभी बांग्लादेश और कभी सोरोस का षडयंत्र बताने दो, पर जेन ज़ी को आने दो। भगतसिंह को रास्ता दिखाने दो, जेन ज़ी को आने दो।

(इस व्यंग्य स्तंभ के लेखक वरिष्ठ पत्रकार और 'लोकलहर' के संपादक हैं।)

टैक्सी बसों वालो के साथ काफी सालो से लगातार हो रही ज्यादतियों और आर्थिक, मानसिक शोषण के खिलाफ उठाई आवाज

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली टैक्सी एन्ड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन नें प्रेस क्लब ऑफ़ इंडिया, दिल्ली में टैक्सी बसों वालो के साथ काफी सालो से लगातार हो रही ज्यादतियों और आर्थिक, मानसिक शोषण के खिलाफ सरकार और प्रशासन के खिलाफ एक प्रेस कॉन्फ्रेंस करी.

ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट का कहना है की काफी सालो से सरकार और प्रशासन हमारी मांगो को अनसुना कर रहा है. इसलिए दशहरा के पावन पर्व पर, जिस त्यौहार में अन्याय पर न्याय की जीत के लिए रावण का पुतला दहन किया जाता है.

उसी तरह हम भी अन्याय करने वालो का पुतला दहन करेंगे.

काफी मुद्दे है :-

1. एथनोल जिसको सरकार पेट्रोल डीजल में 20% मिलाकर दे रही है. सबसे बड़ी बात यें है की जब हम सरकार के या प्राइवेट पेट्रोल पंप पर पूरे पैसे पेट्रोल /डीजल के दे रहें है तो सरकार का पेट्रोलियम मंत्रालय किस क्यों हमें 100% पेट्रोल /डीजल नहीं दे रहा है.अगर किसी भी पदार्थ में कोई भी इंसान मिलावट करता है तो उन इंसानो को सरकार या प्रशासन जेल भेज देता है, और उसकी दूकान या फैक्टरी सील कर देता है. एथनोल की मिलावट करने से हमारी गाड़ियों को को भी नुकसान हो रहा है, कल को इसी एथनोल की वजह से गाड़ियों के इंजन खराब होंगे. फिर यें सरकार और प्रशासन और इनकी एजेन्सी हमारी गाड़ियों को स्क्रैप बनाएंगी.

हमारी मांग यें है की जो भी पेट्रोल डीजल हमें दिया जा रहा है वो 100% असली हो. और जिन्होंने भी पेट्रोल/डीजल में मिलावट करी है, उनको सजा हो साथ ही ऐसे लोगो की फैक्ट्री सील की जाए. और इनकी सारी की सारी सम्पति की कुर्की हो और वो पैसा जनता को वापिस किया जाए. डीजल पेट्रोल सस्ता करके. और 100% डीजल/पेट्रोल दिया जाए.

2. भारत के परिवहन मंत्रालय नें

भारत की जनता को आर्थिक और मानसिक शोषण करने के लिए ट्रैफिक के जुर्माने 10 गुना बड़ा दिए. अगर गलती से किसी ड्राइवर नें यूनिफार्म नहीं पहनी तो उसके गाडी मालिक पर 10 हजार का जुर्माना और ड्राइवर पर भी 10 हजार का जुर्माना. यें कहाँ तक उचित है. और तो और दिल्ली में कहीं स्पीड 80 किलोमीटर प्रति घंटा है तो कहीं 40 किलोमीटर प्रति घंटा, ना वहाँ कहीं स्पीड का बोर्ड लगा होता है, कैमरे जरूर लगा रखे है जो भारी भरकम ऑनलाइन चालान करके हमारे हर गरीब टैक्सी बस वालो को ट्रैफिक पुलिस द्वारा भेजते रेहते है. रोड टूटे हुए है, ट्रैफिक सिग्नल ख़राब होते है, रोड पर पानी भरा होता है, घंटो जाम में महिलाये, बुजुर्ग, बच्चे और हमारे ड्राइवर भूखे प्यासे गाड़ियों में फसे रेहते है. सरकार या प्रशासन पर क्यों नहीं जुर्माना किया जाता, इन को भी सजा होनी चाहिए, इनकी भी सम्पति जब्त होनी चाहिए. जैसे यें छोटी छोटी बातो में हमारी गाड़ियों को जब्त करते है.

3 इन्शुरन्स ना होने पर 10 हजार का जुर्माना पुलिस और इनफ़ोर्समेंट द्वारा किया जाता है, लेकिन इन्शुरन्स कम्पनिया कभी पूरा क्लेम नहीं देते बल्कि महीनों और सालो लगा देते है क्लेम देने में. सरकार तो GST के नाम पर अपन पैसा वसूल करके साइड हो जाती है. कभी सरकार नें पूरा क्लेम ना देने पर या देरी से क्लेम देने पर इन्शुरन्स कम्पनी पर जुर्माना लगाया है.

हमारी मांग है की इन्शुरन्स ना होने पर कोई जुर्माना ना लगाया जाए. या फिर इन इन्शुरन्स कम्पनियो पर भी जुर्माना लगाया जाए.

4 पेनिक बटन के नाम पर दिल्ली में अरबो रुपए का भरस्टाचार हो चूका है, जबकि दिल्ली में बीजेपी सरकार भी आये हुए 8 महीने हो गए लेकिन अभी भी 5 रुपए के पेनिक बटन के नाम पर 9000 रुपए से लेकर 22000 रुपए तक लिए जा रहें है. जबकि आज तक दिल्ली सरकार और इसके परिवहन विभाग नें कोई कॉल सेंटर अभी तक नहीं बनाया. हमारी मांग यह हैं की जब तक यह कॉल सेंटर नहीं बनाया जाता तब तक इसके पैसे नहीं हमसे नहीं लिए जाए और जो आज तक हमारे पैसे लिए गए हैं सरकार के परिवहन विभाग के वेंडर द्वारा वो सारे हमारे पैसे वापस करें जाएं.

साथ ही गाड़ियों की फिटनेस के समय पेनिक बटन की अनिवार्यता खत्म करी जाए.

5 कमीशन फॉर एयर क्वालिटी मैनेजमेंट द्वारा प्रदुषण के नाम पर हमारी बीएस-4 डीजल टैक्सी बसों को बंद ना कराया जाए, क्योकि हमारी टूरिस्ट टैक्सी बसें आल इंडिया टूरिस्ट परमिट होती हैं और ज्यादातर दिल्ली से बाहर रहती हैं.

इसलियर हमारी जितनी गाड़ियों की लाइफ हैं उतना उनको चलने दिया जाए यह हमारी मांगे है क्यूंकि प्रदुषण के नाम पर यह जानबूझकर हमारी गाड़ियों को स्क्रैप बनाने पर तुले हैं.

हम इस बार दशहरे के पावन पर्व पर रावण की जगह, एथनोल, पेनिक बटन, बड़े हुए ट्रैफिक चालानो की बुराइयों और भ्रष्टाचार का पुतला जलाएंगे, जो बुराइयां हमारे समाज में हमारे भारत देश को कमजोर कर रही है हम उनका पुतला दहन करना चाहते हैं और पूरी जनता में यह जागृति जगाना चाहते हैं की जनता हमेशा बुराई का पुतला जलाएं जिससे हमारे देश में बुराई और भ्रस्टचार खत्म हो और हमारा देश समृद्ध हो और खुशहाल हों।

दिल्ली पुलिस ने आयोजित किया मेगा ड्रग डिस्ट्रक्शन इवेंट, 2027 तक नशामुक्त दिल्ली के लक्ष्य की ओर एक और ठोस कदम

रावण दहन से पहले, मादक पदार्थों का दहन : उपराज्यपाल दिल्ली पुलिस मादक पदार्थों के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति पर दृढ़ : पुलिस आयुक्त

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नईदिल्ली। दिल्ली पुलिस ने मेगा ड्रग डिस्ट्रक्शन इवेंट का भव्य आयोजन कर नशीले पदार्थों के खिलाफ अपने अभियान को एक नई ऊंचाई दी। यह कार्यक्रम न केवल वर्षों की जब्त की गई भारी मात्रा में नशीली दवाओं के विनाश का प्रतीक बना, बल्कि राजधानी को 2027 तक नशामुक्त बनाने के मिशन की दिशा में एक ठोस और साहसी कदम भी रहा। कार्यक्रम में उपराज्यपाल श्री विनय कुमार सक्सेना एवं पुलिस आयुक्त श्री सतीश गोलछा, आईपीएस की गरिमामयी उपस्थिति रही, जिन्होंने दिल्ली पुलिस के नशा-विरोधी अभियान को मजबूती और दिशा प्रदान की।

रावण दहन से पहले, मादक पदार्थों का दहन : उपराज्यपाल

उपराज्यपाल ने कार्यक्रम की शुरुआत रावण दहन से पहले, मादक पदार्थों का दहन के प्रेरक नारे के साथ की और दिल्ली पुलिस की अथक कार्यशैली की सराहना करते हुए कहा, यह पहल न केवल दिल्ली को नशे के जाल से मुक्त कराने की दिशा में निर्णायक कदम है, बल्कि युवाओं के उज्ज्वल भविष्य को सुरक्षित करने की गारंटी भी है।

ऑपरेशन कवच और जीरो टॉलरेंस नीति

पुलिस आयुक्त श्री सतीश गोलछा ने कहा कि दिल्ली पुलिस मादक पदार्थों के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति पर दृढ़ है। ऑपरेशन कवच जैसी रणनीतिक पहलों के माध्यम से न केवल बड़े स्तर पर जब्ती की गई है, बल्कि तस्करी के नेटवर्क को जड़ से समाप्त करने की दिशा में ठोस कदम उठाए गए हैं। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि केवल तस्करों को गिरफ्तार करना ही नहीं, बल्कि मादक पदार्थों की आर्थिक रीढ़ तोड़ना और जन-जागरूकता को बढ़ाना पुलिस की प्राथमिकताओं में शामिल है।

1,847 किलोग्राम नशीले पदार्थ नष्ट, अंतरराष्ट्रीय बाजार मूल्य ₹35 करोड़ से अधिक

इस अवसर पर कुल 1,847 किलोग्राम नशीले पदार्थों को नष्ट किया गया, जिनमें शामिल थेः गांजाः 1,729.687 किलोग्राम, चरसः 92.70 किलोग्राम, हेरोइनः 3.726 किलोग्राम, कोकीनः 189 ग्राम, एम्फेटामाइनः 215.640 ग्राम, ट्रामाडोल/अल्प्राजोलम टैबलेट्सः 20.50 किलोग्राम - इनकी अनुमानित अंतरराष्ट्रीय बाजार कीमत ₹35 करोड़ से अधिक आंकी गई है।

50 वर्षों की जब्ती का ऐतिहासिक विनाश

विशेष रूप से उल्लेखनीय यह है कि इस बार केवल हालिया नहीं, बल्कि 1974 से लेकर 2025 तक के मामलों में जब्त की गई नशीली दवाओं को नष्ट किया गया। यह कार्रवाई माननीय सर्वोच्च न्यायालय के आदेशों के अनुपालन में गठित समितियों की निगरानी में संपन्न हुई।

अब तक ₹13,796 करोड़ मूल्य के नशीले पदार्थ नष्ट

पिछले तीन वर्षों में ₹नशा मुक्त भारत अभियान₹ के तहत दिल्ली पुलिस द्वारा लगभग 43,648 किलोग्राम से अधिक नशीले पदार्थ नष्ट किए जा चुके हैं, जिनका अंतरराष्ट्रीय मूल्य ₹13,796 करोड़ से अधिक आंका गया है। प्रमुख तिथियाँः 21 दिसंबर 2022 – 2,888 किग्रा, 26 जून 2023 – 15,700 किग्रा, 20 फरवरी 2024 – 10,631 किग्रा, 17 दिसंबर 2024 – 10,601 किग्रा, 24 जनवरी 2025 – 1,575 किग्रा, 3 अप्रैल 2025 – 1,624 किग्रा, 26 जून 2025 – 1,629 किग्रा, 29 सितंबर 2025– 1,847 किग्रा।

सख्त कार्रवाई और आंकड़े

2025 में अब तकः 1,674 मामले दर्ज, 2,163 तस्करों की गिरफ्तारी हुई, जब्त संपत्तिः ₹21.5 करोड़ की संपत्ति जब्त, ₹5 करोड़ की संपत्ति जब्ती प्रक्रिया में हैं। पीआईटी-एनडीपीएस अधिनियम के तहत निरोधः 4 तस्करों पर आदेश जारी, 32 के विरुद्ध प्रक्रियाधीन हैं।

2027 तक नशामुक्त दिल्ली – सामूहिक संकल्प

यह आयोजन गृह मंत्रालय और नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (NCB) द्वारा घोषित ड्रग डिस्ट्रक्शन पखवाड़ा (15–30 सितंबर 2025) के अंतर्गत किया गया। दिल्ली पुलिस की यह पहल इस राष्ट्रीय अभियान का हिस्सा बनकर एक प्रेरक मिसाल बनी है। मेगा ड्रग डिस्ट्रक्शन इवेंट, 2027 तक नशामुक्त दिल्ली कार्यक्रम केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि मादक पदार्थों के विरुद्ध छेड़े गए युद्ध का उद्घोष था। दिल्ली पुलिस के इस निर्णायक कदम ने यह संदेश स्पष्ट कर दिया है कि दिल्ली को नशामुक्त बनाना एक सपना नहीं, बल्कि एक संकल्प है, जिसे 2027 तक हर हाल में पूरा किया जाएगा।

बिहार की राजनीति: एक जटिल और अनोखा राजनीतिक परिदृश्य

शम्स आग़ाज़

बिहार की राजनीति भारतीय लोकतंत्र का एक अनोखा और जटिल उदाहरण है, जहाँ सामाजिक, धार्मिक और क्षेत्रीय तत्व एक-दूसरे से जुड़कर चुनावी परिणामों पर गहरा प्रभाव डालते हैं। राज्य की राजनीतिक फिजा को जाति आधारित वोटिंग पैटर्न, नेताओं की छवि, विकास के वादे और राष्ट्रीय स्तर पर बने विमर्श तय करते हैं। जातिगत समीकरण, विशेष रूप से यादव, कोइरी, दलित और ब्राह्मण समुदायों की राजनीतिक निष्ठाएं आज भी चुनावों में निर्णायक भूमिका निभाती हैं। धार्मिक पहचान, खासकर मुस्लिम वोट बैंक, विभिन्न पार्टियों की रणनीति का एक केंद्रीय हिस्सा बना हुआ है। हाल के वर्षों में ₹सैकुलर बनाम कम्युनलर₹ का विमर्श बिहार की राजनीति में प्रभावी रहा है। आरजेडी, कांग्रेस और वामपंथी दल खुद को सैकुलर ताकतों के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जबकि बीजेपी और उसके सहयोगियों को हिंदुत्व विचारधारा से जोड़ा जाता है। इस विमर्श ने खासकर युवाओं और शहरी तबके पर गहरा असर डाला है। इसके साथ ही नई राजनीतिक ध्रुवीकरण, क्षेत्रीय दलों का उभार और रोजगार, शिक्षा, महंगाई और बुनियादी सुविधाओं जैसे जन मुद्दे भी अब चुनावों को प्रभावित कर रहे हैं। बिहार की राजनीति अब केवल पारंपरिक आधारों पर नहीं बल्कि एक जटिल और बदलते सामाजिक ताने-बाने के तहत आकार ले रही है।

जैसे-जैसे राज्य में आगामी विधानसभा चुनावों की तैयारियां तेज हो रही हैं, दो नई राजनीतिक ताकतें इंडिया गठबंधन, विशेषकर आरजेडी और कांग्रेस के लिए एक गंभीर चुनौती के रूप में उभर रही हैं। ये हैं प्रशांत किशोर की पार्टी ₹जन सुराज₹ और असदुद्दीन ओवैसी की एआईएमआईएम। भले ही इन दोनों दलों की विचारधारा अलग हो, लेकिन इनका प्रभाव एक समान दिशा में दिखता है सैकुलर वोटों का बंटवारा। इस विभाजन का सीधा लाभ बीजेपी और एनडीए को हो सकता है।

बिहार के पिछले दो विधानसभा चुनाव, यानी 2015 और 2020, इस बात के स्पष्ट संकेत देते हैं कि वोट शेयर में मामूली बदलाव भी सत्ता का संतुलन बदल सकता है। 2015 में आरजेडी, जेडीयू और कांग्रेस का महागठबंधन स्पष्ट बहुमत से जीता था। आरजेडी को 80 सीटें और 18.4% वोट, जेडीयू को 71 सीटें और 16.8% वोट, जबकि कांग्रेस को 27 सीटें और 6.7% वोट मिले थे। बीजेपी को तब 53 सीटें और 24.4% वोट मिले थे, जबकि उसकी सहयोगी एलजेपी और आरएलएसपी को क्रमशः 2.8% और 2.6% वोट मिले। कुल मिलाकर महागठबंधन को 41.9% वोट शेयर के साथ स्पष्ट बढ़त मिली थी।

लेकिन 2020 का चुनावी परिदृश्य काफी बदला हुआ था। जेडीयू इस बार बीजेपी के साथ एनडीए में शामिल हो चुकी थी, जिससे चुनावी समीकरण बदल गए। बीजेपी को 74 सीटें और 19.5% वोट, जेडीयू को 43 सीटें और 15.4% वोट मिले। एलजेपी को भले ही केवल एक सीट मिली, लेकिन उसने 5.6% वोट हासिल कर कई सीटों पर महागठबंधन को नुकसान पहुंचाया। वहीं, आरजेडी ने 75 सीटें जीतकर सबसे बड़ी पार्टी का दर्जा पाया और 23.1% वोट हासिल किए। कांग्रेस को 19 सीटें और 9.5% वोट मिले, जबकि वामपंथी दलों ने 16 सीटें जीतकर गठबंधन को मजबूत किया। लेकिन कुल मिलाकर महागठबंधन का वोट शेयर 37% रहा, जबकि एनडीए को 37.3% वोट मिले। मात्र 0.3% के अंतर ने सरकार बनाने का मौका एनडीए को दे दिया।

इन आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि बिहार की राजनीति में 1-2% वोट का हेरफेर भी सत्ता का रुख बदल सकता है। यही वजह है कि प्रशांत किशोर और ओवैसी की पार्टियों की सक्रियता महागठबंधन के लिए बड़ी चुनौती बन सकती है। प्रशांत किशोर ने अपनी राजनीतिक यात्रा ₹जन सुराज₹ के नारे से शुरू की है, जिसमें दावा किया गया है कि उम्मीदवारों का चयन गांव-गांव जाकर लोगों की राय से किया जाएगा। वे खुद को जाति और धर्म की राजनीति से अलग, एक नई किस्म की जन आधारित राजनीति का प्रतीक बताने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन बिहार जैसे राज्य में, जहाँ मतदान का फैसला अक्सर जाति, बिरादरी और धर्म के आधार पर होता है, वहाँ शुरुआत में ऐसे दलों को वही वोट मिलते हैं जो आमतौर पर बीजेपी के विरोधी यानी सैकुलर वोट माने जाते हैं। अगर जन सुराज 5 से 7% वोट भी हासिल कर लेती है तो यह ज्यादातर वे वोट होंगे जो महागठबंधन को मिल सकते थे, और इससे बीजेपी को सीधा लाभ होगा।

दूसरी ओर एआईएमआईएम की भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। 2020 में ओवैसी की पार्टी ने सीमांचल क्षेत्र में पांच सीटें जीतकर सबको चौंका दिया था। सीमांचल में मुस्लिम आबादी का अनुपात अधिक है और यहाँ के मुद्दे बाकी बिहार से अलग हैं। ओवैसी ने इन मुद्दों को उठाया और मुस्लिम वोटरों में अपनी जगह बनाई। हालाँकि बाद में उनके कुछ विधायक आरजेडी में शामिल हो गए, लेकिन यह साबित हो गया कि एआईएमआईएम मुस्लिम वोट पर प्रभाव डालने की क्षमता रखती है। अगर आने वाले चुनावों में एआईएमआईएम सीमांचल और अन्य मुस्लिम बहुल इलाकों में फिर से सक्रिय होती है, तो आरजेडी और कांग्रेस को मुस्लिम वोटों के बिखराव से भारी नुकसान हो सकता है, क्योंकि यही वोट महागठबंधन की रीढ़ रहे हैं।

तेजस्वी यादव ने पहले भी स्पष्ट रूप से एआईएमआईएम को महागठबंधन में शामिल करने से इनकार किया था। उनके अनुसार ओवैसी की पार्टी सैकुलर वोट को विभाजित करती है और अंततः इसका फायदा बीजेपी को मिलता है। यह बात 2020 के नतीजों से भी प्रमाणित होती है, जहाँ सीमांचल की कई सीटों पर एआईएमआईएम उम्मीदवारों ने इतने वोट ले लिए कि अगर वही वोट आरजेडी या कांग्रेस को मिलते, तो जीत महागठबंधन की होती। तेजस्वी यादव की रणनीति मुस्लिम वोटों को एकजुट रखने की है और किसी अन्य सैकुलर या धार्मिक पार्टी को इस क्षेत्र में प्रवेश से रोकने की है।

अब सवाल यह है कि बिहार के आगामी चुनाव में ये तमाम कारक किस तरह प्रभाव डालेंगे। यदि जन सुराज 5 से 10% वोट लेने में सफल होती है और एआईएमआईएम सीमांचल में अपनी पुरानी सफलता दोहराती है, तो महागठबंधन की राहें मुश्किल हो जाएंगी। फिलहाल महागठबंधन की सबसे बड़ी उम्मीद यही है कि उसके वोटरों में बीजेपी विरोधी भावना अब भी मजबूत है, और यदि यह भावना बनी रहती है तो वोटों का बिखराव रुक सकता है। लेकिन यदि महागठबंधन आंतरिक मतभेदों, कमजोर नेतृत्व या टिकट वितरण में गलती का शिकार होता है, तो नई पार्टियों के लिए रास्ता खुल सकता है। ऐसे में सबसे अधिक फायदे की स्थिति में बीजेपी नजर आती है, जिसका वोट बैंक पिछले कई चुनावों से काफी स्थिर रहा है। 2015 की हार के बावजूद बीजेपी को सबसे ज्यादा 24.4% वोट मिले थे, और 2020 में 19.5% वोट पाकर वह सबसे बड़ी पार्टी बनी। इसलिए अगर सैकुलर वोट बैंक बंटता है, तो यह बीजेपी के लिए एक सुनहरा मौका बन सकता है।

इन सभी पहलुओं को देखते हुए कहा जा सकता है कि बिहार का अगला चुनाव संभवतः एक त्रिकोणीय मुकाबले का रूप ले सकता है, जहाँ एक ओर बीजेपी और उसके सहयोगी एनडीए, दूसरी ओर महागठबंधन और तीसरी ओर जन सुराज व एआईएमआईएम जैसी नई पार्टियाँ होंगी। हालांकि इन दोनों नई पार्टियों का असर मुख्य रूप से सैकुलर वोटरों पर पड़ेगा, जिससे सीधा नुकसान महागठबंधन को होगा। यदि तेजस्वी यादव एआईएमआईएम को साथ लेने से इंकार की नीति पर कायम रहते हैं और प्रशांत किशोर अपनी जन अभियान के ज़रिए उल्लेखनीय वोट बटोरने में सफल हो जाते हैं, तो यह चुनाव बिहार की राजनीति में एक नए राजनीतिक संतुलन की नींव रख सकता है।

दलित-पिछड़े वर्ग की सबसे बड़ी समस्या क्या है

राजेश कुमार पासी

हर समाज को ऐसे ही अपराधी और नेता मिलते हैं जिसके वो लायक होता है। ये बात प्रसिद्ध चिंतक रूसो ने कही थी और उनका ये कथन दलित एवं पिछड़े समाज पर पूरी तरह से लागू होता है। दलित और पिछड़े नेता अपने समाज की लड़ाई का दावा करते हैं लेकिन उनकी सारी लड़ाई अपने और अपने परिवार तक सीमित हो जाती है। यही हालत आरक्षण से नौकरी पाने वाले दलितों की है। वो एक तरफ आरक्षण की नौकरी को समाज का प्रतिनिधित्व कहते हैं तो दूसरी तरफ नौकरी मिलने के बाद समाज की तरफ देखते तक नहीं हैं। सवाल उठता है कि दलितों और पिछड़ों में इतना स्वार्थ क्यों है कि वो समाज के लिए संघर्ष करने के नाम पर सिर्फ अपना ही भला कर पाते हैं।

वास्तव में जो लोग सदियों तक शोषित और पीड़ित रहे हों, उन्हें अचानक वो सब मिल जाए जिसकी कल्पना कुछ समय पहले नहीं की जा सकती थी तो व्यक्ति सबसे पहले अपनी और अपने परिवार की खुशी के बारे में ही सोचता है। जातिवाद के आधार पर बनी पार्टियों के नेता सबसे बड़े वंशवादी साबित हो रहे हैं क्योंकि उनके लिए देश, समाज और धर्म से पहले उनका परिवार आता है। यही कारण है कि बाबा साहब अम्बेडकर के बाद दलित समाज अच्छे नेताओं के लिए तरसता रहा है। कांशीराम ने दलित राजनीति को नई राह दिखाई लेकिन उनके जाने के बाद बसपा की हालत दिनोंदिन नीचे की ओर जा रही है। आज बसपा कहने को राष्ट्रीय पार्टी है लेकिन वो उत्तर प्रदेश तक सिमट गई है। धीरे-धीरे बसपा उत्तर प्रदेश में भी कमजोर होती जा रही है।

लोकतंत्र में कोई राजनीतिक पार्टी जल्दी से खत्म नहीं होती लेकिन जब वो सत्ता की लड़ाई से बाहर हो जाए तो उसे खत्म ही माना जाना चाहिए। आज उत्तर प्रदेश में मुकाबला भाजपा और सपा के बीच रह गया है। जहां तक समाजवादी पार्टी की बात है, वो भी यादव-मुस्लिम वोट बैंक पर निर्भर है। उसकी ताकत इस बात पर निर्भर करती है कि वो इस वोट बैंक में और कितना जोड़ पाती है। पिछड़ों की पार्टी आज यादवों की पार्टी बन गई है जो मुस्लिम वोटों के सहारे सत्ता की लड़ाई में बची हुई है। जब तक ये मुस्लिम वोट बसपा के पास थे, वो भी सत्ता की लड़ाई का हिस्सा थी। अगर कांग्रेस सपा से किसी तरह मुस्लिम वोट बैंक छीन लेती है तो इस पार्टी की हालत भी बसपा जैसी हो जाएगी।

दलित एवं पिछड़े समाज का संघर्ष सामाजिक संघर्ष है लेकिन इस वर्ग में इतनी जातियां है कि उनका इकट्ठे होकर कोई भी संघर्ष कर पाना संभव नहीं है। इनके नेता जातिवाद से लड़ने का कितना भी दावा करें लेकिन सच्चाई यह है कि वो खुद जातिवादी मानसिकता के शिकार होते हैं। समाज के लिए संघर्ष करने का दावा करने वाले ज्यादातर दल किसी जाति विशेष तक सीमित हो जाते हैं। वैसे भी जातिवाद से लड़ाई कोई राजनीतिक संघर्ष नहीं है लेकिन इसे राजनीतिक लड़ाई बना दिया गया है। ऐसा क्यों है कि एक सामाजिक लड़ाई को राजनीतिक लड़ाई में तब्दील कर दिया गया है। वास्तव में सामाजिक संघर्ष त्याग और बलिदान मांगता है जबकि राजनीतिक संघर्ष सत्ता दिलाता है। यही कारण है कि जो दलित सामाजिक संघर्ष का हिस्सा होते हैं, वो थोड़ी सी सफलता के बाद ही राजनीति में आ जाते हैं।

इस पर विचार करने की जरूरत है कि क्यों आज दलितों और पिछड़ों की हर जाति अपनी राजनीतिक पार्टी बनाना चाहती है। वास्तव में हर जाति अपनी पहचान और अपने अधिकार चाहती है। इस वास्तविकता को राहुल गांधी ने भांप लिया है, इसलिए वो जाति जनगणना करवाना चाहते हैं। पहले मोदी सरकार इसके लिए तैयार नहीं थी लेकिन अब वो भी इसके लिए तैयार हो गई है। अगले साल होने वाली जनगणना में जाति को भी शामिल किया जाएगा। इसके बाद दलित और पिछड़ो की राजनीति करने वाले दलों के लिए ऐसी परेशानियां खड़ी होने वाली हैं जिसका उन्हें अभी तक अंदाजा ही नहीं है। जाति जनगणना के बाद कांग्रेस और भाजपा को कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन क्षेत्रीय दलों की राजनीति पर अस्तित्व का संकट आ सकता है। अभी तक जो जातियां किसी दल विशेष के साथ जुड़ी हुई थी, वो अपना उचित प्रतिनिधित्व पाने के लिए मोलभाव पर उतर सकती हैं। कई जाति आधारित सामाजिक संगठन समाजसेवा छोड़कर राजनीति में आ सकते हैं। कई ऐसे दल पैदा हो सकते हैं जिनका प्रभाव सिर्फ दो-तीन जिलों तक सीमित हो।

देखा जाए तो दलित-पिछड़ों का सारा सामाजिक संघर्ष सोशल मीडिया और किताबों तक सीमित रह गया है। राजनीति तो सिर्फ इस संघर्ष का शोषण कर रही है। वास्तव में जातियों की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों में बड़ा अंतर है। बेशक इन जातियों के बुद्धिजीवी और एक्टिविस्ट सवर्णों से संघर्ष की बात करते हो लेकिन इन जातियों का आपसी संघर्ष कहीं ज्यादा बड़ा है। बिहार में राष्ट्रीय जनता दल और यूपी में समाजवादी पार्टी के शासन ने दिखाया है कि पिछड़ों के राज में अन्य पिछड़ी जातियों और दलितों के लिए हालात ज्यादा खराब हो गए थे। इसका कारण यह है कि उन्हें अब सिर्फ सवर्णों के उत्पीड़न का सामना नहीं करना था बल्कि यादवों और मुस्लिमों से भी डर लगने लगा था। क्या कारण है कि भाजपा को यूपी में गैर-जाटव दलितों और अन्य पिछड़ी जातियों का बड़ा समर्थन हासिल हुआ है। जातिवाद से संघर्ष का नारा देने वालों ने जातिवाद को मजबूती देने का ही काम किया है। अब सामाजिक संघर्ष कहीं पीछे छूट गया है, सारी लड़ाई सत्ता पाने की रह गई है। सत्ता की लड़ाई भी कुछ नेताओं तक सीमित हो गई है क्योंकि नए नेतृत्व को उभरने से रोका जाता है। जाति आधारित राजनीतिक दल वंशवादी दलों में परिवर्तित हो गए हैं। अब जातिवाद का विरोध सिर्फ राजनीतिक फायदे के लिए किया जाता है. असलियत तो यह है कि जातिवाद से फायदा उठाया जा रहा है। जातिवाद की राजनीति का सबसे बड़ा नुकसान दलितों और पिछड़ों को यह हुआ है कि उन्हें वर्तमान सत्ताधारी दल भाजपा का विरोधी बनाया जा रहा है। जो दल लंबे समय से सत्ता में है और अभी दशकों तक सत्ता में या सत्ता के संघर्ष में रहेगा, उससे दूरी समाज के लिए कितनी घातक है, इसका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। दलित एवं पिछड़े समाज के बुद्धिजीवी और एक्टिविस्ट यह बात समझ नहीं पा रहे हैं कि उनके भारी विरोध के बावजूद उनके लोग भाजपा के साथ चले गए हैं। वास्तविकता यही है कि दलितों और पिछड़ों का आधे से ज्यादा वोट भाजपा के खाते में जाता है। मुस्लिम भाजपा के कट्टर विरोधी हैं लेकिन उनके बुद्धिजीवी और एक्टिविस्ट बड़ी चालाकी से काम कर रहे हैं, एक तरफ ये लोग अपने समाज में भाजपा के खिलाफ जबरदस्त नफरत पैदा कर रहे हैं तो दूसरी तरफ ये लोग मुस्लिम समाज को सरकार की योजनाओं का फायदा दिलाने के लिए पूरी मेहनत करते हैं। जहां तक दलित समाज की बात है, उसे मोदी सरकार की योजनाओं का इतना फायदा नहीं हो रहा है जितनी उसकी जनसंख्या का अनुपात है। कितनी अजीब बात है कि मुस्लिम अपनी जनसंख्या के अनुपात से दोगुना फायदा ले रहे हैं।

राष्ट्रवादी जनलोक पार्टी (सत्य) ने दिल्ली और उत्तर प्रदेश की कार्यकारिणी की घोषणा की: सिसोदिया

राहुल कुमार

नई दिल्ली: दिल्ली के अलीपुर में राष्ट्रवादी जनलोक पार्टी (सत्य) के राष्ट्रीय अध्यक्ष सत्यपाल सिंह सिसोदिया के नेतृत्व में दिल्ली प्रदेश और उत्तर प्रदेश की नई कार्यकारिणी की घोषणा की गई।

इस मौके पर राष्ट्रीय अध्यक्ष सत्यपाल सिंह सिसोदिया ने बताया कि इस दौरान मुख्य रूप से शेरसिंह राणा राष्ट्रीय संयोजक, ठाकुर दुष्यंत सिंह राष्ट्रीय संगठन महामंत्री, राष्ट्रीय सदस्य एस .एस. चौहान, मनमोहन सिंह कार्यकारी अध्यक्ष बिहार प्रदेश की मौजूदगी में सभी को पटका, टोपी, फूल माला पहनकर पार्टी ने सभी नवनियुक्त पदाधिकारियों का स्वागत किया गया।

जिसमें सर्वप्रथम अखिलेश प्रताप सिंह को राष्ट्रीय सह-संयोजक, पृथ्वीराज सिंह को अध्यक्ष उत्तर प्रदेश, रंजीत गांधी को उपाध्यक्ष उत्तर प्रदेश, लखेश्वरी सिंह अध्यक्ष पूर्वांचल उत्तर प्रदेश, ललित कुमार चौहान को रोहिलखंड उत्तर प्रदेश, राजीव चौहान को अध्यक्ष ब्रज क्षेत्र, विशाल ठाकरे को सचिव ब्रज क्षेत्र, अजय प्रताप सिंह सिंह सचिव युवा मोर्चा ब्रज क्षेत्र, महेश सिसोदिया महासचिव युवा मोर्चा पश्चिमी उत्तर प्रदेश, सुनील ठाकुर अध्यक्ष युवा मोर्चा ब्रज क्षेत्र नियुक्त किया गया।

उसके साथ-साथ दिल्ली की कार्यकारिणी में जितेंद्र सिंह (सोनू) प्रभारी, सूरजभान सिसोदिया सह-प्रभारी, ललित सिंह तोमर अध्यक्ष, राघवेंद्र सिंह तोमर उपाध्यक्ष, संपत सिंह शेखावत उपाध्यक्ष, अनिल सिंह राघव वरिष्ठ उपाध्यक्ष, अरुण सिंह परिहार उपाध्यक्ष, रामराज सिंह उपाध्यक्ष, चंद्रपाल सिंह चौहान महासचिव, मुकेश तोमर संगठन मंत्री, आलोक सिंह मीडिया प्रभारी, अभिषेक सिंह कोषाध्यक्ष, कृष्ण मुरारी सचिव, सुषमा सिंह सचिव, पवार सचिव, राम सिंह ठाकुर सचिव, जोगिंदर सिंह राणा अध्यक्ष युवा मोर्चा दिल्ली प्रदेश, ईश्वर सिंह राजपूत उपाध्यक्ष युवा मोर्चा, भारत सिंह राघव उपाध्यक्ष युवा मोर्चा, गुंजन सिंह उपाध्यक्ष युवा मोर्चा, विपिन सिंह ठाकुर युवा मोर्चा महासचिव, शिवम शर्मा महासचिव युवा मोर्चा, करण सिंह सिसोदिया सचिव, आशु राजपूत, अभय कांत सिंह सचिव युवा मोर्चा, जयप्रकाश चौहान अध्यक्ष बुराड़ी विधानसभा, तेजराम सिसोदिया अध्यक्ष वार्ड नंबर 5 बख्तावरपुर, दिनेश शर्मा अध्यक्ष कोर कमेटी दिल्ली प्रदेश, मुकेश जैन वरिष्ठ उपाध्यक्ष कोर कमेटी, सत्येंद्र सिसोदिया उपाध्यक्ष कोर कमेटी, मास्टर सुरेंद्र सिंह चौहान महासचिव कोर कमेटी पार्टी के द्वारा इन सभी को नियुक्ति पत्र देकर प्रदेशों में पार्टी को मजबूत करने की जिम्मेदारी दी। कई राज्यों से भारी संख्या में लोगों ने भाग लिया राष्ट्रीय अध्यक्ष सिसोदिया ने सभी नए पदाधिकारीयों को पार्टी के संगठन को मजबूत करने के साथ-साथ सभी को शुभकामनाएं दी।

नवरात्रों में कन्या पूजन का विशेष महत्व : महामंडलेश्वर स्वामी डॉ. आदित्यानंद महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन ।छटीकरा रोड़ स्थित चिंतामणि कुंज में शारदीय नवरात्रि के उपलक्ष्य में महामंडलेश्वर स्वामी डॉ. आदित्यानंद महाराज के पावन सानिध्य में चल रहा शतचंडी महायज्ञ अत्यंत श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ ।जिसके अंतर्गत सैकड़ों कन्या-लांगुराओं का पूजन-अर्चन कर उन्हें भोजन प्रसाद ग्रहण कराया गया ।साथ ही उन्हें वस्त्र, दक्षिणा एवं अनेक उपहार भी वितरित किए गए।

चिंतामणि कुंज के अध्यक्ष महामंडलेश्वर स्वामी डॉ. आदित्यानंद महाराज ने कहा कि नवरात्रों में कन्या पूजन का विशेष महत्व है ।इससे मां भगवती शीघ्र ही प्रसन्न होकर

भक्तों को मनवांछित फल प्रदान करती हैं ।इसीलिए चिंतामणि कुंज में वर्ष के दोनों नवरात्रों में शतचंडी महायज्ञ करने एवं कन्या-लांगुराओं का पूजन अर्चन व भोजन प्रसाद ग्रहण कराया जाता है।

ब्रज सेवा संस्थान के अध्यक्ष डॉ. गोपाल चतुर्वेदी,एडवोकेट ने कहा कि चिंतामणि कुंज श्रीधाम वृन्दावन का सिद्ध स्थल है। यहां प्रतिष्ठित देवी की प्रतिमा अत्यंत प्राचीन व चमत्कारी है। इसीलिए देश ही नहीं अपितु विदेशों तक के भक्त भी यहां दर्शनों के लिए निरंतर आते रहते हैं।

श्रीकृष्ण जन्मभूमि मुक्ति न्यास के अध्यक्ष एवं प्रमुख समाजसेवी महेंद्र प्रताप सिंह, एडवोकेट ने कहा कि नवरात्रों में कन्या पूजन करने से भक्तों को मां दुर्गा की अनन्त कृपा और आशीर्वाद मिलता है ।साथ ही भक्तों को रोगों व दुखों से छुटकारा मिलता है और घर में सुख-समृद्धि आती है।

इस अवसर पर प्रमुख समाजसेवी पण्डित बिहारीलाल वशिष्ठ, ब्रह्म कीर्ति रक्षक दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष पण्डित जुगेंद्र भारद्वाज, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, पण्डित राजेश शास्त्री आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे ।महोत्सव का समापन संत, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ।

चित्रकार द्वारिका आनंद को लखनऊ में मिला "यूपी रत्न सम्मान"

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। प्रख्यात चित्रकार व मुक्तानंद चित्रवीथि के संस्थापक द्वारिका आनंद को कला के क्षेत्र में दी गई उनकी अविस्मरणीय सेवाओं के लिए लखनऊ के गोमती नगर स्थित सी.एम.एस. के ऑडिटोरियम में ऑल इंडिया कॉन्फ्रेंस ऑफ इंटलेक्टुअलस (ए.आई.सी.ओ.आई.) के 47वाँ वार्षिक समारोह में ₹यूपी रत्न₹ सम्मान प्रदान किया गया। यह सम्मान उन्हें समारोह के अध्यक्ष नैनीताल हाईकोर्ट की लोक अदालत के न्यायाधीश, उत्तराखंड आर्बीट्रेशन काउंसिल के चेयरमैन जस्टिस राजेश टंडन, मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के पूर्व उप-मुख्यमंत्री व राज्यसभा सांसद डॉ. दिनेश शर्मा, प्रयागराज उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश जस्टिस राकेश शर्मा, ए.आई.सी.ओ.आई. के राष्ट्रीय महासचिव व सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता प्रकाश निधि शर्मा एवं भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्व वरिष्ठ अधिकारी व प्रख्यात समाजसेवी देवदत्त शर्मा (रिटायर्ड आई.ए.एस.) व ए.आई.सी.ओ.आई के उपाध्यक्ष डॉ. एस. फारुख आदि ने संयुक्त रूप से पगड़ी पहनाकर

व प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह एवं अंगवस्त्र आदि भेंट करके प्रदान किया।

समारोह के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली प्रदेश की एक दर्जन से भी अधिक विभूतियों को भी सम्मानित करके उन्हें ₹यूपी रत्न₹ की उपाधि प्रदान की गई।

बदायूं जिले में खनन माफिया का आतंक जारी

परिवहन विशेष न्यूज

बदायूं: उत्तर प्रदेश के बदायूं जिले में खनन माफिया का आतंक जारी है। योगी सरकार के खनन माफिया पर लगाम लगाने के दावों के बावजूद विकासखंड सालारपुर क्षेत्र के बिनावर व अचन्दपुर गांव में दिनदहाड़े अवैध मिट्टी खनन का कारोबार फल-फूल रहा है। कस्बा वासियों द्वारा बताया जा रहा है कि यह मिट्टी से भरी ट्रैक्टर ट्राली मंगलवार की सुबह से बिनावर थाने के बराबर से मैन चौराहा से निकलकर गुजर रही हैं। इसके बावजूद भी पुलिस प्रशासन एवं खनन विभाग अधिकारी बदायूं द्वारा अवैध खनन माफिया की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया और ना ही कोई कार्रवाई की गई।

स्थानीय सूत्रों के अनुसार, खनन माफिया बिना किसी डर के ट्रैक्टर-ट्रॉली के माध्यम से मिट्टी की निकासी कर रहे हैं। सड़कों पर धड़ल्ले से दौड़ते ट्रैक्टर-ट्रॉली इस अवैध कारोबार की गवाही दे रहे हैं। हैरानी की बात यह है कि स्थानीय प्रशासन और पुलिस इस गंभीर मामले पर चुप्पी साधे हुए हैं, जिससे माफियाओं के हौसले और बुलंद हो रहे हैं।

सूत्रों द्वारा मिली जानकारी से पता चला है कि मिट्टी के अवैध खनन का कारोबार, थाना बिनावर क्षेत्र के गांव मोहम्मदपुर व्यार के दो सगे भाई तस्लीम और अशलीन अली उर्फ बोना के ट्रैक्टर ट्रालियों से अवैध मिट्टी खनन कर सरकार के आदेशों को चुनौती दिया जा रहा है।

मामले की गंभीरता को देखते हुए जब मीडिया कर्मी ने खनन विभाग अधिकारी बदायूं बृज बिहारी लाल से संपर्क करने का प्रयास किया गया, तो उनका फोन लगातार रिसीव नहीं हुआ। हालांकि कुछ दिन पहले, बदायूं के खनन विभाग अधिकारी बृज बिहारी लाल ने आश्वासन दिया है कि वे बदायूं जिले के किसी भी क्षेत्र में मिट्टी के अवैध खनन का कार्य रोकने का प्रयास करेंगे और अवैध खनन माफियाओं पर जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

नवरात्र-दशहरा पर मिलावटखोरों पर सख्ती, खाद्य सुरक्षा विभाग ने लिए 5 नमूने

कासगंज अनिल राठौर।

नवरात्रि व दशहरा पर्व को देखते हुए खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग सक्रिय हो गया है। सोमवार को सहायक आयुक्त (खाद्य) आनंद कुमार देव के नेतृत्व में विभागीय टीम ने शहर और ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिष्ठानों पर छापेमारी की। इस दौरान टीम ने पांच खाद्य नमूने संग्रहित कर जांच के लिए भेजे हैं, साथ ही कई स्थानों पर संदिग्ध खाद्य सामग्री को नष्ट भी कराया गया।

खाद्य सुरक्षा टीम ने शहर व ग्रामीण क्षेत्रों में की छापेमारी, नमूने जांच के लिए भेजे, रंगीन खाद्य पदार्थ नष्ट कर चेतावनी दी

नवरात्रि व दशहरा पर्व को देखते हुए खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग सक्रिय हो गया है। सोमवार को सहायक आयुक्त (खाद्य) आनंद कुमार देव के नेतृत्व में विभागीय टीम ने शहर और ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिष्ठानों पर छापेमारी की। इस दौरान टीम ने पांच खाद्य नमूने संग्रहित कर जांच के लिए भेजे हैं, साथ ही कई स्थानों पर संदिग्ध खाद्य सामग्री को नष्ट भी कराया गया।

अधिकारियों ने बताया कि पर्व के दौरान मिलावटखोर सक्रिय हो जाते हैं, जिससे आमजन की सेहत पर खतरा मंडराता है। इसी के दृष्टिगत जिलाधिकारी के निर्देश पर विशेष अभियान चलाया गया। कार्रवाई के तहत इस्माइलपुर रोड स्थित मारखन चोर डेयरी से पनीर, नसीम के प्रतिष्ठान से सरसों का तेल व आटा, राजन डेयरी से घी, तथा पटियाली स्थित राजीव कुमार के प्रतिष्ठान से बेसन का नमूना लिया गया। प्राथमिक जांच में ये नमूने मानकों के विपरीत पाए गए हैं।

इसके अलावा नदरई गेट स्थित प्रभु पार्क क्षेत्र में 16 खाद्य पदार्थों की ऑन-द-स्पॉट जांच की गई। नसीम के प्रतिष्ठान से 58 किलो 400 ग्राम सरसों का तेल व आटा जब्त कर खाद्य कारोबारी की अभिरक्षा में सुपुर्द किया गया।

टीम ने सेंट जोसेफ स्कूल, श्री गणेश इंटर कॉलेज व बीएबी इंटर कॉलेज के पास लगने वाले फूड स्टॉल व ठेलों की भी जांच की। यहां रंगीन फिंगर चिप्स व आलू जैसे खाद्य पदार्थ पाए गए, जिन्हें तत्काल नष्ट करवा दिया गया। ठेला संचालकों को रंगीन खाद्य पदार्थों का प्रयोग न करने की सख्त चेतावनी दी गई।

इस दौरान छात्रों व आम जनता को मिलावटी खाद्य पदार्थों से सतर्क रहने और जागरूक रहने की सलाह दी गई। अभियान में खाद्य सुरक्षा अधिकारी अनिल कुमार, ओमवीर सिंह और प्रतिमा त्रिपाठी भी शामिल रहे।

बरेली में मौलाना तौकीर रजा के दामाद की प्रॉपर्टी पर चला बुलडोजर, गिराया गया गैराज

रिपोर्ट अंकित गुप्ता । बरेली में हिंसा के बाद पुलिस का एक्शन जारी है. मंगलवार को पुलिस ने मौलाना तौकीर रजा के दामाद मोहसिन रजा की प्रॉपर्टी पर बुलडोजर चलाया. अभी मोहसिन के गैराज को गिराया गया है. वहीं पुलिस ने मोहसिन रजा को गिरफ्तार कर लिया.

बरेली में मौलाना तौकीर रजा के दामाद की प्रॉपर्टी पर चला बुलडोजर, गिराया गया गैराज बरेली में मोहसिन रजा के गैराज को गिराया गया. बरेली में हिंसा के बाद पुलिस का एक्शन जारी है. मंगलवार को पुलिस ने मौलाना तौकीर रजा के दामाद मोहसिन रजा की प्रॉपर्टी पर बुलडोजर चलाया. अभी मोहसिन के गैराज को गिराया गया है. वहीं पुलिस ने मोहसिन रजा को गिरफ्तार भी कर लिया है. आरोप है कि जब पुलिस टीम बुलडोजर लेकर पहुंची तो मोहसिन रजा ने बदसलूकी करना शुरू कर दिया, जिसके बाद पुलिस ने कार्य में बाधा उत्पन्न करने के आरोप में मोहसिन को गिरफ्तार कर लिया।

ओमान रजा बरेली हिंसा का आरोपी

समाजवादी पार्टी के पार्षद ओमान रजा और मोहसिन रजा दोनों दरगाह आला हजरत के सज्जादानशीन मन्नानी मियां, जो मौलाना तौकीर रजा के भाई हैं, उनके दामाद हैं. अभी इनके गैराज पर बुलडोजर चला है. आरोप है कि नाले की जमीन पर कब्जा करके यह गैराज बनाया गया था. ओमान रजा बरेली हिंसा का आरोपी है. फिलहाल वह अभी फरार है. ओमान और मोहसिन दोनों भाई हैं.

सुरखा बानखाना में मोहसिन रजा की कोठी

बता दें कि प्रेमनगर थाना क्षेत्र के सुरखा बानखाना में मोहसिन रजा की कोठी है. शुरुआत में लगा कि पुलिस मोहसिन की कोठी पर बुलडोजर चलाने पहुंची है. कोठी के बगल में ही मोहसिन का एक गैराज है. इसी गैराज में बिना बिजली कनेक्शन से गाड़ियों को चार्ज किया जा रहा था. साथ ही यह गैराज नाले की जमीन पर कब्जा करके बनाया गया था.

गैराज पर चलाया गया बुलडोजर

बुलडोजर और पुलिस को देखकर मोहसिन ने विरोध करना शुरू कर दिया. इस पर पुलिस ने कुछ देर तक तो मोहसिन को समझाया, लेकिन फिर भी नहीं माना तो पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया. इसके बाद गैराज पर बुलडोजर चलाया गया. फिलहाल मौके पर भारी संख्या में पुलिस की टीम मौजूद है और बुलडोजर एक्शन की कार्रवाई जारी है.

'I Love Muhammad' पर हुआ था बवाल

बरेली में 'I Love Muhammad' को लेकर हुए बवाल के बाद पुलिस ने कड़ी कार्रवाई की है. उपद्रव के बाद इत्तेहाद-ए-मिल्लत काउंसिल (आईएमसी) प्रमुख मौलाना तौकीर रजा खान को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है. वहीं, तौकीर रजा के बेहद करीबी और आईएमसी के पूर्व जिलाध्यक्ष नदीम खां भी पुलिस की गिरफ्त में है।

बदायूं का पोस्टमार्टम हाउस फिर एक नए मामले में सुर्खियां में। माननीय न्यायालय से लेकर आम लोगों तक पोस्टमार्टम का भरोसा बरकरार था। लेकिन आज एक भ्रूण को पोस्टमार्टम होने के दौरान सांठ गांठ के चलते भ्रूण को झाड़ियों में फेंक दिया गया। मानवता तार तार होने में कोई कसर बाकी नहीं रही। परिजनों ने पोस्टमार्टम के अंदर हंगामा कर दिया....!

पटियाली सीओ संदीप वर्मा ने अवैध रूप से नीली बत्ती और हूटर लगी गाडी को किया सीज...

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

गाडी पर लिखा था मानवाधिकार सुरक्षा संगठन प्रभारी उत्तरप्रदेश, सीओ ने पुछा - आपको नीली बत्ती और हूटर लगाने की अनुमति किसने दी। गाडी मालिक ओमपाल ने कहा ₹सॉरी सर गलती हो गयी। कासगंज जनपद के पटियाली कोतवाली क्षेत्र का मामला।

कासगंज में एक दिन की डीएम बनीं क्रिस्टी मौर्य:डीएम कार्यालय में बैठकर सुनी फरियादियों की समस्याएं

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज। कासगंज में मिशन शक्ति अभियान के तहत कक्षा-11वीं की छात्रा क्रिस्टी मौर्या को एक दिन का जिलाधिकारी बनाया गया। उन्होंने जिलाधिकारी कार्यालय में बैठकर फरियादियों की समस्याओं को सुना और उनके समाधान के लिए निर्देश दिए।

एनआर पब्लिक स्कूल की छात्रा क्रिस्टी मौर्या ने इस दौरान डीएम कार्यालय आए लोगों की शिकायतें सुनीं। उनके सामने एक जमीनी विवाद से संबंधित प्रार्थना पत्र आया, जिस पर उन्होंने सदर एसडीएम को आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश दिया। क्रिस्टी ने एक ज्ञापन भी स्वीकार किया।

यह पहल मिशन शक्ति अभियान के तहत की गई थी। क्रिस्टी मौर्या कक्षा 10 की टॉपर रह चुकी हैं। जहां उन्होंने 95.6 प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे। तक एक दिन की डीएम बनी छात्रा पीड़ितों की समस्या सुन रही थी। तो जिले के डीएम प्रणय सिंह भी छात्रा के पास बैठे थे। जो छात्रा को डीएम के कामकाज के बारे में जानकारी दे रहे थे। डीएम का क्या काम होता है। काम को कैसे किया जाता है। इसके बारे में भी जिले के डीएम प्रणय सिंह ने छात्रा को जानकारी दी।

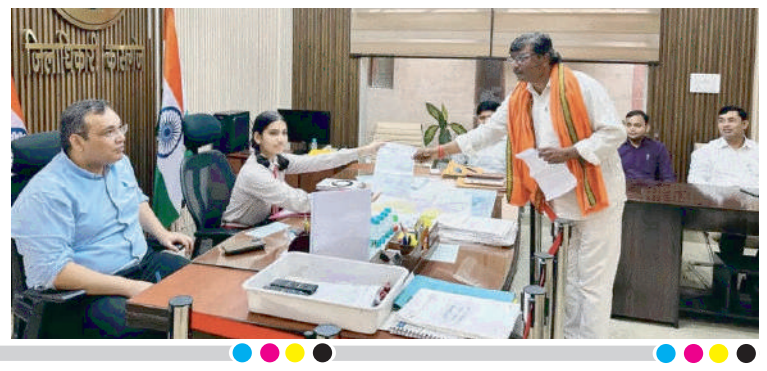

कासगंज समाचार महाअष्टमी पर घर-घर में हुई महागौरी की पूजा, 150 साल पुराने मां चामुंडा मंदिर में स्थापित हुआ

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

कासगंज समाचार महाअष्टमी पर घर-घर में हुई महागौरी की पूजा, 150 साल पुराने मां चामुंडा मंदिर में स्थापित हुआ धनुषाकार आस्था का सैलाब

शारदीय नवरात्रि के दक्षिणी शहर सहित आसपास के क्षेत्र में देवी महागौरी की भव्य पूजा-अर्चना की गई। घर-घर में देवी का स्वागत किया गया और भक्तों ने श्रद्धा भाव से माता रानी की आराधना कर परिवार की सुख-समृद्धि की कामना की। मंदिर परिसर में घंटे-घड़ियालों की गूंज और देवी भजनों से गुंजायमान हो रहा है। दुष्ट ने दुष्ट शरीर धारण किया और मां चामुंडा से अपने मन की प्रार्थना के लिए कहा।

शारदीय नवरात्रि के दक्षिणी शहर सहित आसपास के क्षेत्र में देवी महागौरी की भव्य पूजा-अर्चना की गई। घर-घर में देवी का स्वागत किया गया और भक्तों ने श्रद्धा भाव से माता रानी की आराधना कर परिवार की सुख-समृद्धि की कामना की। नगर के प्रसिद्ध मां चामुंडा देवी मंदिर में इस अवसर पर भक्तों का जनसैलाब निर्मित हुआ। मंदिर परिसर में घंटे-घड़ियालों की गूंज और देवी भजनों से गुंजायमान हो रहा है। दुष्ट ने दुष्ट शरीर धारण किया और मां चामुंडा से अपने मन की प्रार्थना के लिए कहा।

बताया जाता है कि यह मंदिर करीब 150 साल पुराना है और इसका इतिहास बेहद अद्भुत है। स्थानीय बौद्ध धर्म के अनुसार मां चामुंडा देवी स्वयं पीपल का एक प्राचीन वृक्ष से प्रकट हुई थीं। तभी से यह स्थान आश्रम के लिए अत्यंत पूजनीय बन गया है। कहा जाता है कि जो भी यहां भक्त मन और आस्था रखता है, उसके सभी मन और आस्था पूर्ण हो जाते हैं।

नवरात्रि के इस पावन अवसर पर मंदिर को विशेष रूप से अवतरित किया गया था। मंदिर समिति द्वारा शिष्यों की सुविधा के लिए विशेष व्यवस्थाएं की गईं, जिनमें प्रसाद वितरण, भजन-कीर्तन और सुरक्षा प्रबंधन भी शामिल था। महाअष्टमी के दिन कन्या पूजन का आयोजन भी धूमधाम से हुआ।

मां चामुंडा मंदिर की ऐतिहासिक और धार्मिक महत्ता हर साल हजारों लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है। नवरात्रि के दौरान यह स्थान पूरी तरह से आध्यात्मिक ऊर्जा से भरा होता है।

संगठन, अनुशासन और आत्मविश्वास का प्रतीक - राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

-संदीप सृजन

भारतीय समाज में यदि कोई संगठन संगठन, अनुशासन और आत्मविश्वास के आदर्शों का जीवंत प्रतीक है, तो वह है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस)।27 सितंबर 1925 (विजयादशमी) को नागपुर में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा स्थापित यह संगठन न केवल हिंदू समाज को एकजुट करने का माध्यम बना बल्कि लाखों युवाओं में राष्ट्रभक्ति, शारीरिक बल और मानसिक दृढ़ता का संचार करने वाला स्रोत भी सिद्ध हुआ। आरएसएस की शाखाएँ, जो पूरे देश में फैली हुई हैं, वहाँ न केवल व्यायाम और खेल होते हैं बल्कि एक ऐसा वातावरण रचता है जहाँ व्यक्ति का चरित्र निर्माण होता है और उस चरित्र से राष्ट्र का निर्माण होता है । आज, जब विश्व पटल पर भारत की सांस्कृतिक शक्ति उभर रही है, आरएसएस का योगदान संगठित प्रयासों के रूप में स्पष्ट दिखाई देता है।

आरएसएस की स्थापना का बीज 1925 में बोया गया, जब देश ब्रिटिश साम्राज्यवाद की चपेट में था। डॉ. हेडगेवार, एक चिकित्सक होने के साथ-साथ एक दूरदर्शी समाज सुधारक थे जिन्हें विनायक दामोदर सावरकर की हिंदुत्व पुस्तक ने गहराई से प्रभावित किया। उन्होंने महसूस किया कि हिंदू समाज की एकता की कमी ही देश को गुलाम बनाए रखने का कारण है। इसलिए, विजयादशमी के शुभ अवसर पर नागपुर के एक छोटे से मैदान में मात्र 15-20 युवाओं के साथ पहली शाखा शुरू की गई। उद्देश्य था: हिंदू अनुशासन के माध्यम से चरित्र निर्माण और हिंदू राष्ट्र की स्थापना।

आरएसएस का इतिहास संघर्षों से भरा है। 1948 में महात्मा गांधी की हत्या के बाद संगठन पर प्रतिबंध लगा लेकिन यह केवल 18 महीने चला। 1975 के आपातकाल में भी प्रतिबंधित होने पर स्वयंसेवकों ने भूमिगत रहकर लोकतंत्र की रक्षा की। 1992 के बाबरी विध्वंस के बाद भी प्रतिबंध झेला लेकिन हर बार संगठन मजबूत होकर उभरा। आज, 2025 में अपनी शताब्दी के करीब पहुँचते हुए, आरएसएस में 50-60 लाख सदस्य और 56,000 से अधिक शाखाएँ हैं जो इसे विश्व का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन बनाता है। यह इतिहास दर्शाता है कि कैसे संगठित प्रयास विपरीत परिस्थितियों में भी आत्मविश्वास को बनाए रखते हैं।

आरएसएस की विचारधारा हिंदुत्व पर आधारित है जो केवल धार्मिक नहीं बल्कि सांस्कृतिक और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। संस्थापक हेडगेवार का मानना था कि ₹हिंदू समाज में शारीरिक बल, मानसिक अनुशासन और चरित्र की कमी है जिसे दूर करना आवश्यक है।₹ संगठन का मूल मंत्र है: व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण। यह हिंदू, सिख, जैन, बौद्ध और आदिवासी समुदायों को एक परिवार के रूप में देखता है और अल्पसंख्यकों को भी हिंदू संस्कृति अपनाने का निमंत्रण देता है।

आरएसएस का उद्देश्य केवल राजनीतिक नहीं बल्कि सामाजिक उत्थान है। यह स्वदेशी, स्वावलंबन और राष्ट्रनिष्ठा पर जोर देता है। गुरुजी एम.एस. गोलवलकर ने कहा था, ₹हिंदू राष्ट्र का अर्थ है सांस्कृतिक एकता जहाँ सभी भारतीय हिंदू संस्कृति के मूल्यों से प्रेरित हों।₹ यह विचारधारा स्वयंसेवकों में आत्मविश्वास जगाती है क्योंकि यह उन्हें बताती है कि वे केवल व्यक्ति नहीं, राष्ट्र के निर्माणकर्ता हैं। वर्तमान सरसंघचालक मोहन भागवत हैं जो संगठन की दिशा निर्धारित करते हैं। उनके नीचे सरकार्यवाह (जैसे दत्तात्रेय होसबाले) कार्यकारी भूमिका निभाते हैं। संगठन को प्रांत, क्षेत्र, जिला, तहसील और मंडल स्तरों पर विभाजित किया गया है जहाँ प्रत्येक इकाई स्वायत्त होते हुए भी केंद्रीय निर्देशों का पालन करती है।

संगठन में कोई औपचारिक सदस्यता नहीं है; स्वयंसेवक शाखा में भागीदारी से जुड़ते हैं।

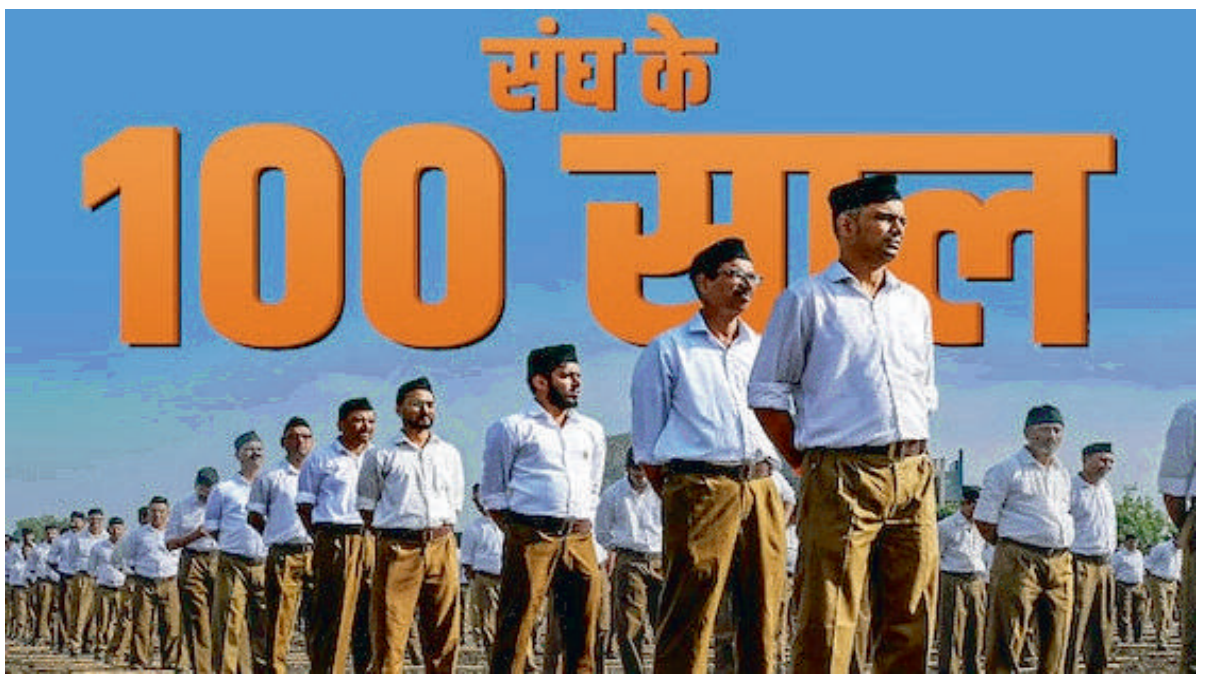

प्रचारक, पूर्णकालिक संगठन की रीढ़ हैं जो जीवन समर्पित कर देते हैं। लगभग 2,500 प्रचारक हैं, जिनमें पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी और वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जैसे नाम शामिल हैं। यह संरचना दर्शाती है कि कैसे आरएसएस एक विशाल वृक्ष की भाँति फैला है जहाँ हर पत्ता संगठित और अनुशासित है। कार्यकर्ताओं में 95 प्रतिशत गृहस्थ हैं जो दैनिक जीवन में संगठन के मूल्यों को जीते हैं। यह लचीलापन और गहराई संगठन को मजबूत बनाती है।

आरएसएस की आत्मा है उसकी शाखाएँ। ये दैनिक या साप्ताहिक सभाएँ हैं जो पार्कों या मैदानों में एक घंटे के लिए आयोजित होती हैं। शाखा में सूर्य नमस्कार, व्यायाम, खेल, परेड (समता), गीत, प्रार्थना और बौद्धिक चर्चा शामिल होती है। प्रभात शाखाएँ सुबह, सायं शाखाएँ शाम को लगती हैं। 2019 तक 84,000 से अधिक शाखाएँ थीं जिनमें 66 प्रतिशत छात्र शामिल हैं। प्रशिक्षण में लाठी, तलवार, भाला जैसे मार्शल आर्ट सिखाये जाते हैं जो शारीरिक फिटनेस के साथ-साथ मानसिक दृढ़ता विकसित करते हैं। शिविरों में प्राथमिक चिकित्सा और आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया जाता है। गुरुजी गोलवलकर ने कहा था, ₹शाखा केवल खेल-कूद नहीं, बल्कि राष्ट्रनिष्ठा का संस्कार है।₹ यह दैनिक दिनचर्या स्वयंसेवकों को अनुशासित बनाती है और आत्मविश्वास से भर देती है क्योंकि यहाँ हर कोई समान है, कोई भेदभाव नहीं। आरएसएस में अनुशासन केवल नियम नहीं बल्कि जीवन शैली है। शाखा में वर्दी (खाकी हाफ पैंट से अब भूरी पैंट तक विकसित), समयबद्धता और आज्ञाकारिता अनिवार्य है। महात्मा गांधी ने 1934 में एक शिविर का दौरा कर कहा था, ₹संघ में गजब का अनुशासन है, छुआछूत का नामोनिशान नहीं।₹ यह अनुशासन शारीरिक (योग, परेड) और मानसिक (चर्चा, चिंतन) दोनों स्तरों पर होता है।

स्वयंसेवक न्यूनतम अपेक्षाओं का पालन करते हैं, शाखा में नियमित भागीदारी, सेवा कार्य और राष्ट्रभक्ति। आपातकाल में भूमिगत रहकर स्वयंसेवकों ने अनुशासन का प्रमाण दिया जब उन्होंने लाखों लोगों को संगठित कर लोकतंत्र बहाल किया। आज भी, राहत कार्यों में – जैसे 1971 के ओडिशा चक्रवात या 2020 की कोविड महामारी में-आरएसएस का अनुशासन स्पष्ट दिखता है। यह गुण संगठन को विपत्तियों में अटल बनाए रखता है। आरएसएस स्वयंसेवकों में आत्मविश्वास का निर्माण करता है जो उसके मूल उद्देश्य का हिस्सा है। शाखा के खेल और नेतृत्व भूमिकाएँ युवाओं को सिखाती हैं कि वे अकेले नहीं, बल्कि एक बड़े परिवार का हिस्सा हैं। डॉ. हेडगेवार का विश्वास था कि ₹हिंदू समाज में पराक्रम की कमी है जिसे दूर कर आत्मविश्वास जगाना है।"

प्रशिक्षण शिविरों में चुनौतियाँ दी जाती हैं- जैसे रात्रि मार्च या आपदा सिमुलेशन-जो स्वयंसेवकों को संकटों का सामना करने की क्षमता देते हैं। दादरा-नागर हवेली मुक्ति संग्राम में आरएसएस स्वयंसेवकों ने गोवा के विसर्जन में भूमिका निभाई जो उनके आत्मविश्वास का प्रमाण है। आज भाजपा के नेताओं में पूर्व प्रचारकों का योगदान दिखता है जो दर्शाता है कि कैसे आरएसएस व्यक्तियों को राष्ट्रीय नेतृत्व के लिए तैयार करता है। राष्ट्रीय आंदोलनों में स्वतंत्रता संग्राम से लेकर राम जन्मभूमि तक आरएसएस ने संगठित भूमिका निभाई। 1977 के आंध्र चक्रवात में राहत कार्य किया। यह योगदान दर्शाता है कि कैसे अनुशासन और आत्मविश्वास सेवा में बदल जाते हैं। संगठन ने हिंदू समाज में एकता लाई जो आज भारत की वैश्विक छवि को मजबूत कर रही है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ संगठन, अनुशासन और आत्मविश्वास का प्रतीक है जो 100 वर्षों से राष्ट्र निर्माण में जुटा है। डॉ. हेडगेवार का सपना आज लाखों स्वयंसेवकों के माध्यम से साकार हो रहा है। जैसे गुरुजी गोलवलकर ने कहा, ₹संघ की सफलता हिंदू समाज में बढ़ते आत्मविश्वास में दिखती है।₹ भविष्य में भी, यह संगठन भारत को मजबूत बनाने में योगदान देगा। आरएसएस सिखाता है कि व्यक्ति का अनुशासित जीवन ही राष्ट्र का आधार है। यह प्रतीक न केवल हिंदू समाज का बल्कि पूरे भारत का गौरव है।

राष्ट्रीय स्तरपर मोबाइल चोरों, ज़ेब से पैसे उड़ाने वाले हुनरमंद चोरों को हत्या व रेप की धाराओं में लानें की सख्त ज़रूरत

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया
महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर वर्तमान आधुनिक और डिजिटल युग में अपराधों का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। जेबकटी, मोबाइल चोरी और डिजिटल वॉलेट से धन उड़ाने जैसी घटनाएं अब केवल स्थानीय समस्या नहीं रहीं, बल्कि एक वैश्विक चुनौती बन चुकी हैं। आज के हुनरमंद चोर इतनी सफाई से काम करते हैं कि पीड़ितों को पता ही नहीं चलता कि उनकी जेब से पैसा या मोबाइल कब और कैसे गायब हो गया। यह अपराध केवल आर्थिक नुकसान नहीं पहुँचाता, बल्कि सामाजिक असुरक्षा, मनोवैज्ञानिक दबाव और कानून व्यवस्था पर भी गहरा असर डालता है।पीड़ित अक्सर रिपोर्ट दर्ज नहीं कराते- 25 पर्सेंट तक ही रिपोर्ट दर्ज होने का मैंने अंदाज लगाया हूं । रिपोर्टिंग न होने के कारण अपराधियों का डिटेक्शन और ट्रैकिंग मुश्किल होती है।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र ऐसा मानता हूं कि आधुनिक शहरी भीड़, डिजिटल पेमेंट का प्रसार और त्योहारों पर बढ़ी भीड़-मास्ट्रेस का मिलन एक ऐसा परिदृश्य पैदा करता है जहाँ पारंपरिक जेबकटी अब केवल शौक़ीन अपराध नहीं बल्कि संगठित अपराधियों के लिए एक व्यवस्थित मुनाफ़े का साधन बन गया है। मोबाइल चुराने की कला सिर्फ़ "समर्थता" नहीं, बल्कि डिजिटलीकृत आर्थिक चोरी, जैसे मोबाइल वॉलेट रिक्त कर देना, ओटीपी चुराकर ट्रांज़ैक्शन करनें में तब्दील हो चुकी है। दुनियाँ के कई बड़े शहरों में ऐसा देखा गया है कि भीड़-भाड़ वाले सार्वजनिक क्षेत्र और त्यौहारों के आयोजन अपराधियों के लक्षित क्षेत्र बन जाते हैं। भारत में भीइस ओर अपराध तेज़ी से बढ़े है और अब यह अकेले व्यक्तिगत अपराध न रहकर रैकेट-आधारित संगठनों का हिस्सा बनते जा रहे है।हुनरमंद चोरों की विशेषता है उनकी चतुराई, टीमवर्क और भीड़-भाड़ का मूलभूत उपयोग। वे शोषण के ऐसे तरीक़े अपनाते हैं जिनमें पीड़ितों को घटना का एहसास तब होता है जब बहुत देर हो चुकी होती है। मोबाइल की चोरी के साथ ही डिजिटल धन का दुरुपयोग सिम स्वैप, ओटीपी का व्यवधान, फोन चोरी कर फिर उससे बैंक एप्स के लॉगिन, जैसी तकनीकें जोड़ दी गई हैं। नतीजा:पीड़ित न केवल एक वस्तु खोते हैं बल्कि उनकी आर्थिक सुरक्षा, निजी डाटा और भावनात्मक स्थिरता भी प्रभावित होती है। समाज पर इससे बड़ा प्रभाव पड़ता है सार्वजनिक जगहों पर असुरक्षा का भाव, त्योहारों पर घबराहट और छोटे व्यवसायियों के लिए ग्राहकों का कम आना।

साथियों बात अगर हम हुनरमंद चोरों की कार्यशैली और उनकी पहचान की करें तो, आधुनिक समय के जेबकतरे और मोबाइल चोर पारंपरिक चोरों से बिल्कुल अलग हैं। ये अपराधी न केवल शारीरिक रूप से चालाक होते हैं बल्कि मानसिक रूप से भी बेहद सजग रहते हैं। भीड़-भाड़ वाली जगहों जैसे बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, बाजार, धार्मिक मेले, त्योहारों के आयोजन, और मॉल्स में यह अपराधी अपनी "कला" का प्रदर्शन करते हैं।वे भीड़ का फायदा उठाकर मोबाइल और पर्स निकाल लेते हैं।कई बार दो-तीन लोगों का गैंग बनाकर काम करते हैंएक ध्यान भटकाता है, दूसरा चोरी करता है और तीसरा माल लेकर तुरंत भाग जाता है।चोरी के तुरंत बाद मोबाइल का सिम निकालकर या उसे स्विच ऑफ करके ब्लैक मार्केट में बेच देते हैं।इस स्थिति में पुलिस व जनता दोनों के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह है कि चेहरे पहचानना और अपराधियों को सार्वजनिक रूप से बेनकाब करना। अगर इन्हें पब्लिक डोमेन में उजागर किया जाए तो जनता सतर्क रहेगी और अपराधियों पर दबाव बनेगा।नवरात्र, दशहरा, दिवाली जैसे उत्सवों में लोगों का मन त्यौहार, खरीदारी और उत्साह में रम जाता है।अपराधी इन्हीं मौकों पर सक्रिय होते हैं क्योंकि सुरक्षा व्यवस्था अक्सर सामान्य से ढीली रहती है और भीड़ का भौतिक वातावरण अपराधियों को कामयाबी देता है। धार्मिक स्थलों, मॉल, मेट्रो स्टेशन, लोकल ट्रेन और मेले — ये सब उच्च जोखिम वाले स्थल बन जाते हैं। इसलिए त्योहारों के दौरान न केवल अतिरिक्त पुलिस बल की जरूरत है बल्कि विशिष्ट तकनीकी और सामुदायिक उपायों की भी आवश्यकता है।त्योहारों में भीड़ का फायदा उठाकर जेबकटी और मोबाइल चोरी बढ़ जाती है।लोग उत्सव के माहौल में लापरवाह हो जाते हैं और सतर्कता कम हो जाती है।कई बार चोर धार्मिक स्थलों, पंडालों और रथयात्राओं को भी निशाना बनाते हैं।इसलिए पुलिस को विशेष रूप से त्योहारों के समय अपराध नियंत्रण शाखा और मोबाइल स्क्वाड जैसी विशेष इकाइयां गठित करनी चाहिए।ड्रोन सर्विलांस, सीसीटीवी और इंटेलिजेंस नेटवर्क को मजबूत करके ही इस चुनौती से सख़्ती निपटा जा सकता है।

साथियों बात अगर हम मोबाइल चोरों और जेबकतरों के लिए कड़ी सज़ा: हत्या और रेप जैसे अपराधों की श्रेणी में लाने की मांग को समझने की करें तो, भारतीय न्याय संहिता 2023 में चोरी के मामलों के लिए जो धाराएं लागू होती हैं, उनमें अधिकतम सजा 3 से 7 साल तक की है। लेकिन मोबाइल और डिजिटल धन की चोरी आज के युग में सिर्फ मामूली चोरी नहीं रही। यह अपराध (1)सैकड़ों लोगों को कंगाल बना देता है (2)पीड़ितों का मानसिक संतुलन बिगाड़ देता है (3)डिजिटल फाइनेंस की विश्वसनीयता पर चोट करता है।इसलिए कई विशेषज्ञ मानते हैं कि ऐसे अपराधों को केवल "संपत्ति से जुड़ा अपराध" न मानकर, इसे गंभीर सामाजिक अपराध की श्रेणी में लाना चाहिए। यदि हत्या और रेप के मामलों की तरह कड़ी धाराएं और कठोर कारावास या उम्रकैद की सजा दी जाए, तो अपराधियों में भय व्याप्त होगा और घटनाओं में बहुत कमी आएगी।

साथियों बात अगर हम ऐसे अपराधों की जमानत और कानून की खामियां व संशोधन की आवश्यकता को समझने की करें तो, वर्तमान भारतीय न्याय संहिता 2023 में चोरी और मोबाइल लूट से जुड़े अपराधों के आरोपियों को अक्सर जमानत मिल जाती है।यही सबसे बड़ीसमस्या है (1) आरोपी जेल से बाहर आते ही दोबारा अपराध करने लगते हैं।(2) वे नई-नई जगहों पर जाकर सैकड़ों लोगों को नुकसान पहुंचाते हैं। (3) पीड़ितों को न्याय मिलने में वर्षों लग जाते हैं।इस स्थिति में जरूरी है कि कानून में संशोधन करके ऐसे अपराधों को गैर-जमानती श्रेणी में डाला जाए। साथ ही अपराधियों के लिए "दोहराव अपराध" की सख्त धाराएं लागू हों। यदि किसी व्यक्ति पर 2-3 बार ऐसे अपराध का आरोप सिद्ध हो तो उसे सीधे उम्रकैद या 20 साल से अधिक कारावास की सख़्त सजा दी जाए।

साथियों बात अगर हम वर्तमान समय में कानूनी खामियाँ और सुधार की आवश्यकता को समझने की करें तो वर्तमान आपराधिक कानून में कई ऐसी बातें हैं जो आधुनिक डिजिटल- युग की चुनौतियों के अनुरूप नहीं रहीं। मैं ऐसा मानता हूं कि मुख्य समस्याएँ और मेरे सुझाए गए सुधार इस प्रकार हैं (1) जमानत नीति और सख्ती की कमी, कई बार ऐसे आरोपियों को जमानत मिल जाती है और वे फिर से सक्रिय हो जाते हैं। समाधान: रेपीट-ऑफेन्डर धाराओं को कठोर कर, डिजिटल- आधारित और त्योहार-लक्षित अपराधों के लिए गैर-जमानती धाराएँ प्रस्तावित की जानी चाहिए। (2) धारा - संशोधन और संवैधानिक परखा-चोरी को जब सामाजिक विनाश के पैमाने पर मापा जाए, तो ऐसा अपराध 'सामाजिक अपराध' मानकर उसमें सख्त दंड और सुधारात्मक उपाय लागू किये जाने चाहिए। लेकिन यह ध्यान रखा जाए कि किसी भी संशोधन में संवैधानिक अधिकारों और मानवाधिकारों का उल्लंघन नहीं होना चाहिए, विधायी प्रक्रिया पारदर्शी और न्यायोचित होनी चाहिए। (3) रैकेट और संगठित अपराध पर केंद्रित धाराएँ- छोटे अपराध को संगठनात्मक स्तर पर दोषी ठहराने के लिए गिरोह-रैकेट धाराएँ (आर्गेनाइजेड क्राइम, क्रिमिनल कांस्पिरेसी, एंटीगैंग लॉस) प्रभावी बनानी होगी; साथ ही धनगमन और संपत्ति जब्ती के कानून तेज़ करने होंगे ताकि मुखिया का आर्थिक आधार काटा जा सके। (4) फास्ट-ट्रैक कोर्ट और खास जाँच टास्क फोर्स-डिजिटल धन से जुड़े मामलों में सबूत जल्दी मिट जाते हैं। इसलिए ऐसे मामलों के लिए फास्ट-ट्रैक न्यायालय और विशेष जाँच टीम बनानी चाहिए।(5)(a) पुलिसिंग मॉडल-विशेष शाखा, डेटाबेस और सामुदायिक साझेदारी - पुलिसिंग में सुधार बहु-आयामी होना चाहिए, यह केवल फोर्स बढ़ाने का मामला नहीं है। कुछ व्यावहारिक कदम: मोबाइल/जेबकटी स्पेशल स्क्वाड: शहरों और बड़े कस्बों में ऐसी स्पेशल यूनिट जो भीड़ वाले इलाकों और त्योहारों में तैनात रहें, स्पॉट इंटेलिजेंस और रैकेट-ट्रैकिंग करे (b) रोज़ाना हाज़िरी और नज़र-रहित निगरानी : मेरा सुझाव कि ऐसे अपराधियों की रोज़ थाने में हाज़िरी करानी चाहिए, यह तभी संवैधानिक और प्रभावी होगा जब उसे पुलिस रिकॉर्ड और निगरानी के साथ जोड़ा जाए; रोज़ हाज़िरी की नीतियाँ तब उपयोगी होंगी यदि वे न्यायालयिक आदेशों और पुनर्वसन कार्यक्रमों के साथ जुड़ी हों।

साथियों बात कर हम कॉल टू एक्शन, नागरिकों के लिये 10 तुरंत करने योग्य सुझावों को समझने की करें तो (1) भीड़ में अपने मोबाइल और पर्स को अंदर वाली नकदी-थैली में रखें।(2) त्योहारों पर अनावश्यक ध्यान भटकाने वाले लोगों से दूरी बनायें।(3) मोबाइल में मोबाइल- लॉक, बैकअप और रिमोट- शटडाउन फ़ीचर सक्रिय रखें।(4) संदिग्ध गतिविधि देखकर तुरन्त नज़दीकी पुलिस या हेल्पलाइन को सूचित करें।(5) किसी भी चोरी की घटना को रिपोर्ट करें, रिपोर्टिंग घटना को रोकने का पहला कदम है।(6) अपने बैंक/उपयोग किए गए ऐप्स में अलर्ट और 2 एफए चालू रखें।(7) अज्ञात लोगों को अपने फोन की स्क्रीन न दिखाएँ; सिम/बैंक डिटेल साझा न करें।(8) अगर हम किसी को देखते हैं जो बार-बार भीड़ में संदिग्ध व्यवहार कर रहा हो तो उसकी फोटो लेना (कानूनी दायरे में) और पुलिस को सौंपना उपयोगी हो सकता है।(9) बच्चों को सार्वजनिक सुरक्षा का प्रशिक्षण दें ताकि वे भीड़ में कभी अलग न हों।(10) पड़ोस और कम्युनिटी लेवल पर "वॉच ग्रुप" बनायें और पुलिस के साथ संपर्क रखें।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि राष्ट्रीय स्तरपर मोबाइल चोरों, ज़ेब से पैसे उड़ाने वाले हुनरमंद चोरों को हत्या व रेप की धाराओं में लानें की सख़्त ज़रूरत, ज़ेब से मोबाइल व पैसे उड़ाने वालों पर नक़ेल क़सनें भारतीय न्याय संहिता 2023 में संशोधन की ज़रूरत-उम्र कैद की कठोर कारावास के डोमेन में लाया जाए।

विजयादशमी : दशहरा : रावण दहन ही नहीं, बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक

चंद्र मोहन

विजयादशमी का पर्व केवल रावण दहन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह दैवीय शक्ति की विजय और व्यक्तिगत चरित्र के उत्थान का एक गहरा प्रतीक है.

यह वह दिन है जब देवी दुर्गा ने महिषासुर का वध कर संसार को उसके आतंक से मुक्त कराया था. इसी दिन देवी की विजय हुई थी, इसलिए इसे विजयादशमी कहते हैं.

विजयादशमी केवल बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक नहीं है बल्कि यह देवी दुर्गा की महिषासुर पर जीत का भी प्रतीक है और शक्ति की पूजा का पर्व है. शारदीय नवरात्रि के बाद मनाए जाने वाले इस पर्व पर देवी दुर्गा की शक्ति की उपासना की जाती है. प्राचीन काल से ही राजा-योद्धा इस दिन अपने शस्त्रों और औजारों की पूजा करते थे. विजयादशमी आत्म-विजय, आंतरिक बुराइयों जैसे काम, क्रोध, लोभ और अहंकार पर विजय पाने का भी एक महान अनुष्ठान है.

विजयादशमी देवी दुर्गा की महिषासुर पर विजय का दिन है जो शक्ति की विजय और स्त्री शक्ति का प्रतीक है.

इस दिन शस्त्र-पूजा की परंपरा है, जिसमें लोग अपने औजार, वाहन, किताबें और अन्य उपकरण पूजते हैं, जो ज्ञान और शक्ति के प्रति सम्मान व्यक्त करता है.

साहस और पराक्रम:

विजयादशमी शौर्य और पराक्रम के महत्व को भी दर्शाती है. प्राचीन काल में राजा इस दिन विजय की कामना के लिए रण-यात्रा पर प्रस्थान करते थे.

आंतरिक विजय:

यह दिन व्यक्ति को अपने अंदर के रावण को दहन करने और अहंकार, लोभ और क्रोध जैसी बुराइयों को त्यागकर सत्य व नैतिकता का मार्ग अपनाने की प्रेरणा देता है.

दशहरा केवल रावण दहन तक सीमित नहीं है, बल्कि हमें यह भी सिखाता है कि जीवन में चाहे कितनी भी बाधाएं आएं, यदि हम सत्य और धर्म के मार्ग पर चलते हैं तो विजय की प्राप्ति अवश्य होगी.

रावण दहन की परंपरा वास्तव में प्राचीन नहीं है, बल्कि यह आधुनिक समय में, खासकर भारत की स्वतंत्रता के बाद लोकप्रिय हुई. रांची में 1948 में पाकिस्तान से आए शरणार्थियों ने इस परंपरा की शुरुआत की थी, और 1953 में दिल्ली के रामलीला मैदान में भी बड़े स्तर पर रावण दहन शुरू हुआ.

यह परंपरा कब शुरू हुई और कैसे लोकप्रिय हुई:

रावण दहन की परंपरा वास्तव में प्राचीन नहीं है, बल्कि यह आधुनिक समय में, खासकर भारत की स्वतंत्रता के बाद लोकप्रिय हुई. रांची में 1948 में पाकिस्तान से आए शरणार्थियों ने इस परंपरा की शुरुआत की थी और 1953 में दिल्ली के रामलीला मैदान में भी बड़े स्तर पर रावण दहन शुरू हुआ.

यह परंपरा कब शुरू हुई और कैसे लोकप्रिय हुई:

बड़े पैमाने पर रावण दहन की प्रथा भारत की स्वतंत्रता के बाद ही विकसित हुई.

पाकिस्तान से भारत आए शरणार्थियों ने 1948 में रांची में रावण दहन की शुरुआत की थी जिससे यह परंपरा फैलने लगी.

दिल्ली के रामलीला मैदान में 1953 में पहली बार बड़े स्तर पर रावण दहन का आयोजन किया गया था जो इस परंपरा को लोकप्रिय बनाने में सहायक हुआ.

मैसूर का दशहरा कर्नाटक का राजकीय उत्सव है जो नवरात्रि के बाद विजयादशमी के दिन मनाया जाता है। यह 10 दिनों तक चलने वाला एक भव्य उत्सव है जिसमें शाही हाथियों का जुलूस (जिसे 'जम्बू सवारी' कहते हैं) प्रमुख है. उत्सव के दौरान पूरे शहर को सजाया और रोशनी से जगमगाया जाता है और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है। यह बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है और इसकी शुरुआत देवी चामुंडेश्वरी द्वारा राक्षस महिषासुर के वध से जुड़ी है.

यह 10 दिनों तक चलने वाला उत्सव है जिसकी शुरुआत नवरात्रि से होती है और अंतिम दिन विजयादशमी होती है.

इस उत्सव का महत्व देवी चामुंडेश्वरी द्वारा राक्षस महिषासुर का वध करने से है जो बुराई पर अच्छाई की जीत को दर्शाता है.

दशहरा उत्सव का सबसे पुराना लिखित इतिहास 15वीं शताब्दी के दौरान विजयनगर साम्राज्य के सम्राट देवराय द्वितीय के शासनकाल का है जिसे फारसी यात्री अब्दुल रज्जाक द्वारा भी प्रमाणित किया गया है जिन्होंने 1442-43 ईस्वी के दौरान इस त्योहार को देखा था.

मैसूर में दशहरा मनाने की परंपरा 1610 में राजा वाडियार द्वारा श्रीरंगपट्टनम में शुरू की गई थी. 1799 में राजधानी मैसूरु स्थानांतरित होने के बाद इसे शहर में भी मनाना शुरू कर दिया गया था. इस परंपरा की जड़ें 15वीं शताब्दी में विजयनगर साम्राज्य के दौरान शुरू हुईं थीं, जो 10 दिनों तक चलने वाला एक भव्य त्योहार है.

मैसूरु दशहरा की शुरुआत 1610 में राजा वाडियार ने श्रीरंगपट्टनम में की थी.

1799 में टीपू सुल्तान के पतन और राजधानी के श्रीरंगपट्टनम से मैसूरु स्थानांतरित होने के बाद, यह उत्सव 1799 में मैसूरु में आयोजित किया जाने लगा. यह त्योहार 15वीं शताब्दी में विजयनगर साम्राज्य के दौरान भी मनाया जाता था, जिसका प्रमाण है कि इसे मनाने की परंपरा काफी पुरानी है.

वर्तमान स्वरूप: आज भी मैसूरु दशहरा कर्नाटक का राजकीय उत्सव है और 10 दिनों तक भव्यता से मनाया जाता है.

भारत में कई ऐसी जगहें हैं जहाँ रावण दहन नहीं होता, क्योंकि वहाँ रावण को एक अलग रूप में पूजा जाता है या उसकी पूजा की मान्यता है। ऐसी 10 जगहों में उत्तर प्रदेश के बिसरख और बड़ागांव, मध्य प्रदेश का मंदसौर और रावणग्राम, राजस्थान का जोधपुर (मंडोर), आंध्रप्रदेश का काकीनाड, हिमाचल प्रदेश

का बैजनाथ, महाराष्ट्र का गढ़चिरौली, और कर्नाटक के कोलार और मंडया शामिल हैं.

रावण दहन न होने वाली 10 जगहें

बिसरख (उत्तर प्रदेश): इस गांव को रावण का ननिहाल माना जाता है और यहाँ रावण को सम्मान के साथ पूजा जाता है.

बड़ागांव (उत्तर प्रदेश): यहाँ के लोग रावण को अपना पूर्वज मानते हैं और दशहरे पर उनकी पूजा करते हैं.

मंदसौर (मध्य प्रदेश): इस शहर को मंदोदरी का मायका माना जाता है, इसलिए रावण को दामाद की तरह पूजा जाता है.

रावणग्राम (विदिशा, मध्य प्रदेश): यहाँ भी मंदोदरी के मायके होने की मान्यता है, इसलिए रावण की पूजा की जाती है.

जोधपुर (राजस्थान): मंडोर में रावण और मंदोदरी का मंदिर है और यहाँ के कुछ लोग खुद को रावण का वंशज मानते हैं.

काकिनाड (आंध्र प्रदेश): इस शहर में रावण की मूर्ति है और यहाँ के लोग रावण को एक शक्तिशाली सम्राट मानते हुए पूजा करते हैं.

बैजनाथ (हिमाचल प्रदेश): यहाँ रावण ने शिव की तपस्या की थी, इसलिए लोग उन्हें शिव का भक्त मानते हुए पूजा करते हैं.

गढ़चिरोली (महाराष्ट्र): यहाँ की गोंड जनजाति खुद को रावण का वंशज मानती है और रावण की पूजा करती है.

कोलार और मंडया (कर्नाटक): इन जिलों में रावण को शिव का परम भक्त मानकर पूजा जाता है.

कानपुर (उत्तर प्रदेश): यहाँ एक दशानन मंदिर है जो साल में सिर्फ दशहरे पर खुलता है और रावण की पूजा की जाती है.

भगवान विष्णु के द्वारपाल जय और विजय को तीन जन्मों में भगवान विष्णु के अवतारों द्वारा मारा गया था ताकि वे अपने श्राप से मुक्त हो सकें. पहले जन्म में, उन्होंने सतयुग में हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यप के रूप में जन्म लिया जिनका वध क्रमशः वराह और नृसिंह अवतारों द्वारा किया गया था। दूसरे जन्म में, त्रेतायुग में उन्होंने रावण और कुंभकर्ण के रूप में जन्म लिया जिनका वध भगवान राम ने किया था. तीसरे और अंतिम जन्म में, द्वापर युग में, उन्होंने शिशुपाल और दंतवक्र के रूप में जन्म लिया जिन्हें भगवान कृष्ण ने मारा था.

सतयुग:

जय और विजय ने हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यप के रूप में जन्म लिया.

भगवान विष्णु ने वराह अवतार लेकर हिरण्याक्ष का वध किया और नृसिंह अवतार लेकर हिरण्यकश्यप का वध किया.

त्रेतायुग:

जय और विजय ने रावण और कुंभकर्ण के रूप में जन्म लिया.

भगवान विष्णु ने राम के रूप में अवतार लिया और रावण और कुंभकर्ण दोनों का वध किया.

द्वापरयुग:

जय और विजय ने शिशुपाल और दंतवक्र के रूप में जन्म लिया.

भगवान विष्णु ने कृष्ण के रूप में अवतार लिया और शिशुपाल व दंतवक्र का वध किया.

दशहरा सिर्फ रावण दहन तक ही सीमित नहीं है; यह बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है, जो भगवान राम की रावण पर विजय का उत्सव है। इसके अलावा, यह आंतरिक बुराइयों जैसे क्रोध और अहंकार को त्यागकर सत्य और धर्म को अपनाने की प्रेरणा भी देता है. उत्तरी भारत में रावण दहन प्रमुख है, तो पूर्वी भारत में दुर्गा पूजा और दुर्गा विसर्जन के रूप में भी यह पर्व मनाया जाता है.

धार्मिक और नैतिक महत्व: दशहरा यह सिखाता है कि चाहे बुराई कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हो, अंततः अच्छाई की जीत होती है.

आंतरिक संघर्ष: यह पर्व हमें अपने अंदर की बुराइयों, जैसे क्रोध, लालच और अहंकार पर विजय पाने के लिए प्रेरित करता है.

क्षेत्रीय विविधता: उत्तर भारत में रावण दहन मुख्य है जबकि पूर्वी भारत में दुर्गा पूजा का उत्सव दशहरे के साथ मनाया जाता है, जहाँ देवी दुर्गा महिषासुर का वध करती हैं.

अन्य उत्सव: इस दिन कई जगहों पर रामलीला का मंचन होता है, और कुछ स्थानों पर शस्त्र पूजा और विजयदशमी के रूप में भी इसे मनाया जाता है.

जलते पुतले, बढ़ते रावण: दशहरे का बदलता अर्थ

- डॉ सत्यवान सौरभ

अधिक अब अकेले या विशेष रूप से अपने पति या पत्नी के साथ रहते हैं, भारत में अनुदैर्ध्य वृद्धावस्था अध्ययन के अनुसार। भले ही चिकित्सा प्रगति के कारण जीवन प्रत्याशा में वृद्धि हुई है, लेकिन बुजुर्ग लोगों की भावनात्मक और सामाजिक भलाई अक्सर अवहेलना होती है। विशेषज्ञ सावधान करते हैं कि अकेलापन पुरानी बीमारियों के रूप में स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। यह अवसाद का खतरा पैदा करता है, नींद को नुकसान पहुंचाता है और प्रतिरक्षा को नष्ट करता है।

"पुतलों का दहन नहीं, मन और समाज के भीतर छिपी बुराइयों का संहार ही दशहरे का असली संदेश है।"
दशहरे पर रावण के पुतले जलाना केवल परंपरा नहीं, बल्कि बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। लेकिन आज पुतले केवल मनोरंजन बनकर रह गए हैं, जबकि समाज में अहंकार, हिंसा, वासना और अन्य बुराइयाँ लगातार बढ़ रही हैं। असली रावण हमारे भीतर और समाज में मौजूद हैं। यही समय है कि हम अपने मन के रावणों की पहचान करें, उन्हें त्यागें और समाज से अपराध, छल-कपट और अन्य अधर्म को मिटाने का संकल्प लें। तभी दशहरा वास्तव में विजयादशमी बन सकता है।

हर साल जब दशहरे की शाम को रावण के विशाल पुतले धू-धू कर जलते हैं, तो दर्शकों की आँखों में उत्सव का रोमांच दिखाई देता है। पटाखों की गड़गड़ाहट, आतिशबाज़ी की चमक और भीड़ का शोर इस पर्व को एक रंगीन उत्सव में बदल देता है। लेकिन सवाल यह है कि क्या इस पूरे आयोजन का संदेश—बुराई पर अच्छाई की जीत—हमारे जीवन और समाज में कहीं उतर पाता है?

आज दशहरा एक मनोरंजन का ट्रेंड बनकर रह गया है। लोग पुतले जलाते हैं, फोटो और वीडियो बनाते हैं, सोशल मीडिया पर साझा करते हैं। लेकिन यह सोचने का समय शायद ही निकालते हैं कि यह रावण दहन केवल परंपरा निभाने के लिए नहीं, बल्कि हमें आत्ममंथन और सामाजिक सुधार का अवसर देने के लिए शुरू हुआ था।

रामायण की कथा में रावण केवल एक पात्र नहीं था, बल्कि वह उन बुराइयों का

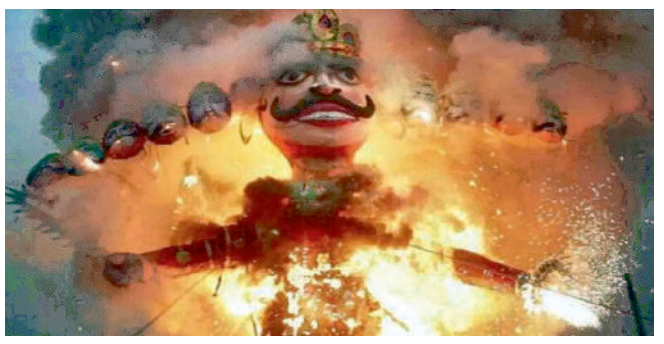

प्रतीक था जो इंसान को पतन की ओर ले जाती हैं—अहंकार, वासना, छल, क्रोध और अधर्म। रावण जैसा महाज्ञानी, शिवभक्त और शूरवीर भी अपनी एक गलती—वासना और अहंकार—के कारण विनाश को प्राप्त हुआ। दशहरा हमें यही याद दिलाने आता है कि यदि बुराई चाहे कितनी ही शक्तिशाली क्यों न हो, अंततः उसका नाश निश्चित है।

लेकिन आज दशहरे का स्वरूप बदल चुका है। अब रावण दहन व्यावसायिक और दिखावटी उत्सव में बदल गया है। हर साल पुतले और बड़े बनाए जाते हैं, पटाखों पर लाखों रुपये खर्च किए जाते हैं। रिपोर्टें बताती हैं कि पिछले कुछ वर्षों में रावण पुतलों की संख्या कई गुना बढ़ी है, पर समाज में अपराध और बुराइयों का ग्राफ घटने की बजाय बढ़ा ही है।

आज के दौर में रावण केवल पुतलों तक सीमित नहीं है। वह हमारे बीच, हमारे आस-पास, हमारे भीतर मौजूद है। समाज में अपराध, बलात्कार, हत्या, दहेज हिंसा, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार और नशे की लत जैसी घटनाएँ लगातार बढ़ रही हैं। रिश्तों का पतन भी चिंता का विषय है—मां-बाप, भाई-बहन, यहाँ तक कि बच्चों तक की हत्या की खबरें आए दिन सामने आती हैं। आज का इंसान ज्यादा पढ़ा-लिखा और आधुनिक है, लेकिन बुराइयाँ भी उतनी ही तेज़ी से पनप रही हैं।

विडंबना यह है कि जिस रावण को हम हर साल जलाते हैं, वह अकेला था। विद्वान था, नीतिज्ञ था, अपने परिवार और राज्य के प्रति कर्तव्यनिष्ठ था। उसकी एक गलती उसे विनाश की ओर ले गई। लेकिन आज का रावण—यानी आज का अपराधी और बुराई का प्रतीक—उससे कहीं अधिक क्रूर, धूर्त और निर्लज्ज है।

दशहरे का पर्व हमें यह याद दिलाने के लिए है कि बुराइयाँ कितनी भी ताकतवर क्यों न हों, उन्हें मिटाना ही होगा। लेकिन केवल पुतले जलाने से बुराइयाँ खत्म नहीं होंगी। हमें यह समझना होगा कि आज का रावण बाहर ही नहीं, भीतर भी है। हर इंसान के भीतर अहंकार, क्रोध, वासना, ईर्ष्या और लालच जैसे रावण मौजूद हैं। जब तक इनका दहन नहीं होगा, तब तक समाज में शांति और न्याय संभव नहीं।

पुतला जलाने के साथ हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने जीवन से कम-से-कम एक बुराई को अवश्य दूर करेंगे। दशहरे का संदेश तभी सार्थक होगा जब समाज सामूहिक रूप से भ्रष्टाचार, हिंसा, नशाखोरी, दहेज और महिला शोषण जैसी बुराइयों के खिलाफ खड़ा होगा।

आज के दौर का सबसे बड़ा संकट यह है कि समाज बुराइयों के प्रति संवेदनहीन होता जा रहा है। हर दिन अख़बारों में दुष्कर्म, हत्या और भ्रष्टाचार की खबरें छपती हैं, लेकिन हम उन्हें सामान्य मानकर टाल देते हैं। पुतला जलाने के बाद हम चैन से घर लौट आते हैं, मानो बुराई का अंत हो चुका हो। हकीकत यह है कि आज के रावण सर्वव्यापी हैं। वे महलों में भी रहते हैं और झोपड़ियों में भी। वे पढ़े-लिखे भी हैं और अशिक्षित भी। वे राजनीति, व्यापार, शिक्षा और समाज के हर क्षेत्र में फैले हुए हैं।

राम केवल एक ऐतिहासिक या धार्मिक पात्र नहीं, बल्कि आदर्श और मूल्यों का प्रतीक हैं। राम का अर्थ है धर्म का पालन। राम का अर्थ है सत्य और न्याय के लिए संघर्ष। राम का अर्थ है मर्यादा और कर्तव्यनिष्ठा। लेकिन आज का समाज राम के गुणों को अपनाने के बजाय केवल राम के नाम का राजनीतिक और धार्मिक उपयोग कर रहा है। परिणाम यह है कि रावण जलते तो हैं, पर मन के रावण और समाज के रावण और अधिक शक्तिशाली होकर खड़े हो जाते हैं।

दशहरा हमें अवसर देता है कि हम रुककर सोचें—क्या हम अपने भीतर के रावण को पहचान पा रहे हैं? क्या हम अपने जीवन से एक भी बुराई कम कर पाए हैं? क्या हम समाज को बेहतर बनाने के लिए कोई ठोस कदम उठा रहे हैं? यदि इन सवालों का जवाब ₹नहीं₹ है, तो हमें स्वीकार करना होगा कि रावण दहन केवल एक परंपरा बनकर रह गया है।

सबसे बड़ी ज़रूरत यह है कि हम केवल पुतले जलाने की रस्म न निभाएँ, बल्कि अपने भीतर और समाज में मौजूद रावणों को पहचानें और उनका संहार करने का साहस दिखाएँ। तभी दशहरा एक सच्चे अर्थ में विजयादशमी बन पाएगा। जब-जब हम अपने भीतर के अहंकार, वासना और लोभ को परास्त करेंगे, तब-तब हमारे भीतर का राम जीवित होगा। और तभी हम कह सकेंगे कि रावण सचमुच मरा है।

जलवायु परिवर्तन के दौर में किसान की नई कहानी

[अनिश्चित मानसून, बदलती खेती: भारतीय किसान का नया संघर्ष]

मानसून, भारतीय कृषि की रीढ़, अब जलवायु परिवर्तन के कारण अनिश्चितता का प्रतीक बन चुका है। पहले, किसान प्रकृति की लय के साथ अपनी फसलों की योजना बनाते थे—बुआई से कटाई तक, सब कुछ मौसम के संगीत में बंधा था। लेकिन अब, अनियमित वर्षा, सूखा, बाढ़ और ओलावृष्टि ने इस प्राचीन लय को भंग कर दिया है। यह केवल मौसम का बदलाव नहीं, बल्कि एक गहरा सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिवर्तन है, जो भारतीय किसानों की दिनचर्या, जीवनशैली और सामुदायिक ढांचे को पुनर्परिभाषित कर रहा है। यह परिवर्तन खेतों से कहीं आगे बढ़कर ग्रामीण भारत की आत्मा को झकझोर रहा है, जिसके कई आयाम अभी पूरी तरह उजागर नहीं हुए हैं। जलवायु परिवर्तन ने मानसून के स्वभाव को अप्रत्याशित बना दिया है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के आंकड़े बताते हैं कि पिछले दो दशकों में मानसून की शुरुआत और समाप्ति में 7-10 दिनों की अनिश्चितता बढ़ी है। कुछ क्षेत्रों में 30% अधिक बारिश दर्ज हुई, तो कहीं सूखे की मार पड़ी। पहले, जून के मध्य में बुआई शुरू हो जाती थी, लेकिन अब किसान मौसम पूर्वानुमान ऐप्स और कृषि विशेषज्ञों की सलाह पर निर्भर हैं। यह बदलाव केवल तकनीकी नहीं, बल्कि मानसिक और सामाजिक स्तर पर एक नई सोच की मांग करता है। इस बदलाव का एक महत्वपूर्ण पहलू है तकनीक का अनिवार्य समावेश। पहले, पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित अनुभव ही खेती का आधार था। लेकिन अब, मिट्टी की नमी मापने वाले सेंसर, ड्रोन आधारित फसल निगरानी और मौसम डेटा ऐप्स किसानों के लिए जीवन रेखा बन गए हैं। मिसाल के तौर पर, पंजाब और हरियाणा के कुछ अग्रणी किसानों ने ड्रोन तकनीक से कीट प्रबंधन और सिंचाई को 20-30% अधिक कुशल बनाया है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के अनुसार, डिजिटल कृषि उपकरण अपनाने वाले किसानों की उत्पादकता में औसतन 15% की वृद्धि हुई है। लेकिन यह तकनीक सभी के लिए सुलभ नहीं है। भारत के 86% छोटे और सीमांत किसान वित्तीय और शैक्षिक बाधाओं के कारण इससे वंचित हैं, जिससे ग्रामीण भारत में डिजिटल असमानता की खाई चौड़ी हो रही है—नीति निर्माताओं के लिए यह एक गंभीर चुनौती है। जलवायु परिवर्तन का असर केवल खेतों तक सीमित नहीं; यह ग्रामीण भारत की सामाजिक और मानसिक संरचना को भी गहरे स्तर पर प्रभावित कर रहा है। खेती यहाँ सिर्फ पेशा नहीं, बल्कि एक सामुदायिक जीवनशैली है। गाँवों में त्योहार, सामूहिक मेलजोल और उत्सव जैसे गणेश चतुर्थी या होली पहले फसल चक्र के साथ जुड़ते थे। लेकिन अनिश्चित मानसून ने इस सामाजिक ताने-बाने को छिन्न-भिन्न किया है। राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण (2015-16) के मुताबिक, ग्रामीण क्षेत्रों में तनाव और चिंता के मामले बढ़ रहे हैं, जिसमें कृषि पर निर्भरता और मौसम की अनिश्चितता प्रमुख कारण हैं। यह मानसिक स्वास्थ्य संकट अभी तक कम चर्चित है, लेकिन यह ग्रामीण भारत के सामाजिक ढांचे को धीरे-धीरे कमजोर कर रहा है। जलवायु परिवर्तन ने भारतीय किसानों के लिए आर्थिक जोखिमों को कई गुना बढ़ा दिया है। राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) की रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में 50% से अधिक किसान कर्ज के बोझ तले दबे हैं, और मानसून की अनिश्चितता से फसल नुकसान इस ऋण चक्र को और गहरा रहा है। फसल की विफलता न केवल आय छीनती है, बल्कि अगली फसल के लिए निवेश की क्षमता को भी कमजोर करती है। ***प्रो. आरके जैन "अरिजीत"***

गांव में विज्ञान: ग्रामीण जीवन में परिवर्तन के लिए एक नई रोशनी

विजय गर्ग

सदियों से ग्रामीण जीवन परंपरा, प्रकृति और पीढ़ियां-पीढ़ी के अनुभव द्वारा निर्देशित किया गया है। लेकिन आज विज्ञान गांवों में एक शांत और शक्तिशाली परिवर्तन शक्ति के रूप में उभरा है - नई आशा, अवसर और उज्ज्वल भविष्य।

कृषि: परंपरा से नवाचार तक

किसान अब अनुमान लगाने और मानसून की बारिश पर पूरी तरह निर्भर नहीं हैं। मृदा परीक्षण, ड्रिप सिंचाई, जैविक उर्वरक और उच्च उपज वाली फसलों की किस्मों जैसी वैज्ञानिक विधियां पर्यावरण की रक्षा करते हुए उत्पादकता बढ़ाने में मदद करती हैं। विज्ञान द्वारा संचालित मोबाइल एप्लिकेशन और मौसम पूर्वानुमान किसानों को बोने, पानी देने और फसल काटने के समय पर मार्गदर्शन करते हैं।

स्वास्थ्य और स्वच्छता: विज्ञान जीवन बचा रहा है

स्वास्थ्य शिविरों, टीकाकरण ड्राइव और किफायती नैदानिक उपकरणों ने गांव के दरवाजे पर स्वास्थ्य देखभाल को करीब लाया है। स्वच्छ पेयजल, स्वच्छता और संतुलित पोषण के बारे में जागरूकता - वैज्ञानिक समझ पर आधारित - ने उन बीमारियों को कम कर दिया है जो ग्रामीण समुदायों पर भारी शुल्क लेती थीं।

शिक्षा: नई क्षितिज खोलना

जब विज्ञान गांवों में स्कूल पहुंचता है, तो यह जिज्ञासा और रचनात्मकता को जन्म देता है। प्रयोग, मॉडल और डिजिटल कक्षाएं बच्चों को पाठ्यपुस्तकों से परे सीखने में मदद करती हैं, जिससे कई लोग इंजीनियर, डॉक्टर या शोधकर्ता बनने का सपना देखते हैं। विज्ञान मेलों और जागरूकता कार्यक्रम समुदायों को नवाचार का उपयोग करके स्थानीय समस्याओं का समाधान करने में भी सक्षम बनाते हैं।

ऊर्जा और पर्यावरण: मार्ग प्रकाश

छतों पर सौर पैनल, घरों में बायोगैस प्लांट और ऊर्जा कुशल स्टोव न केवल लागत कम कर रहे हैं बल्कि प्रदूषण भी कम कर रहा है। विज्ञान ने गांवों को नवीकरणीय ऊर्जा प्रदान की है, जिससे घरों में प्रकाश, सिंचाई के लिए बिजली और बाहरी दुनिया से संपर्क सुनिश्चित हो गया है।

विज्ञान के माध्यम से महिला सशक्तिकरण

खाद्य प्रसंस्करण और पैकेजिंग के वैज्ञानिक तरीकों का उपयोग करने वाले स्व-सहायता समूहों से लेकर छोटे व्यवसायों के लिए डिजिटल कौशल सीखने वाली महिलाओं तक, विज्ञान गांवों में महिलाओं को उद्यमी और नेता बनने की शक्ति प्रदान कर रहा है।

सतत विकास का मार्ग

गांवों में विज्ञान परंपराओं की जगह लेने के बारे में नहीं है - यह ज्ञान को आधुनिक नवाचार से जोड़ने के बारे में है। वैज्ञानिक उपकरणों को अपनाते हुए सांस्कृतिक मूल्यों का सम्मान करके ग्रामीण जीवन स्वस्थ, समृद्ध और भविष्य के लिए तैयार हो रहा है।

मूलतः विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं और आविष्कारों के बारे में नहीं है - यह परिवर्तन की एक नई रोशनी है जो ग्रामीण जीवन को बढ़ा सकती है, जिससे गांव आत्मनिर्भर, टिकाऊ और मजबूत बन सकते हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार,

गांधी का ग्राम स्वराज और आज की राजनीति

आज का युग तकनीकी उन्नति, वैश्वीकरण और जटिल सामाजिक-राजनीतिक गतिशीलता का दौर है, जहां हर क्षेत्र में परिवर्तन की तीव्र गति दिखाई देती है। ऐसे में महात्मा गांधी और उनके दर्शन, गांधीवाद की प्रासंगिकता पर सवाल उठना स्वाभाविक है। क्या अहिंसा, सत्य, स्वदेशी और सर्वोदय जैसे सिद्धांत आज की सत्ता-केंद्रित राजनीति और उपभोक्तावादी संस्कृति में प्रासंगिक हैं? गांधी का जीवन और विचार आज भी हमें प्रेरित करते हैं, लेकिन आधुनिक संदर्भों में उनकी व्याख्या और अनुप्रयोग की राह आसान नहीं है। फिर भी, उनके विचार मानवता, नैतिकता और सामाजिक न्याय की ऐसी नींव प्रदान करते हैं, जो समय की कसौटी पर खरी उतरती है।

गांधी का दर्शन केवल स्वतंत्रता संग्राम तक सीमित नहीं था; यह एक समग्र जीवन पद्धति थी, जो मानवीय मूल्यों और सामाजिक समानता पर टिकी थी। उनकी अहिंसा का सिद्धांत न केवल ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ एक शक्तिशाली हथियार था, बल्कि छुआछूत, जातिगत भेदभाव और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ भी प्रभावी रहा। आज, जब हिंसा आतंकवाद, सांप्रदायिक तनाव और डिजिटल युग की विषाक्त बहसों के रूप में वैश्विक स्तर पर फैल रही है, गांधी की अहिंसा एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। यह केवल शारीरिक हिंसा से परहेज नहीं, बल्कि मन, वचन और कर्म में शुद्धता का आह्वान करती है। सोशल मीडिया पर बढ़ते ध्रुवीकरण और आक्रामकता के दौर में, गांधी का संयम और सहानुभूति पर आधारित यह सिद्धांत न केवल प्रासंगिक है, बल्कि अत्यंत आवश्यक भी है। यह हमें त्वरित प्रतिक्रियाओं के बजाय गहन चिंतन और संवाद की राह दिखाता है।

गांधी का स्वदेशी का सिद्धांत आज के पर्यावरणीय संकट और जलवायु परिवर्तन के दौर में नई प्रासंगिकता ग्रहण करता है। स्वदेशी केवल विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार नहीं, बल्कि स्थानीय संसाधनों का सम्मान, आत्मनिर्भरता और टिकाऊ जीवनशैली का प्रतीक था। आज, जब उपभोक्तावाद और संसाधनों का अंधाधुंध दोहन पर्यावरण को नष्ट कर रहा है, गांधी की सादगी और न्यूनतम संसाधन उपयोग की वकालत एक प्रभावी समाधान बन सकती है। भारत में 'आत्मनिर्भर भारत' और 'मेक इन इंडिया' जैसी पहलें, भले ही आंशिक रूप से, गांधी के स्वदेशी सिद्धांत से प्रेरित हैं, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था और छोटे उद्यमों को बढ़ावा देती हैं। हालांकि, वैश्विक व्यापार और बड़े पैमाने पर उत्पादन पर आधारित आधुनिक अर्थव्यवस्था में स्वदेशी को पूरी तरह लागू करना चुनौतीपूर्ण है। फिर भी, गांधी का यह विचार हमें पर्यावरणीय जिम्मेदारी और टिकाऊ विकास की दिशा में सोचने के लिए प्रेरित करता है।

आज के युग में, जब आर्थिक असमानता, सत्ता का दुरुपयोग और पर्यावरणीय संकट वैश्विक चुनौतियां बन चुके हैं, गांधी का सर्वोदय सिद्धांत—सभी के कल्याण का दर्शन—एक प्रेरक मार्गदर्शक बन सकता है। विश्व बैंक के अनुसार, भारत में धन का असमान वितरण तेजी से बढ़ रहा है। गांधी का मानना था कि समाज का सच्चा विकास तभी संभव है, जब उसका सबसे कमजोर तबका सशक्त हो। यह विचार आज के सामाजिक न्याय और समावेशी विकास के लक्ष्यों के साथ गहराई से जुड़ता है। फिर भी, सरकारी नीतियां और योजनाएं अक्सर तात्कालिक लाभ और वोट बैंक की राजनीति के जाल में फंसकर गांधीवादी दृष्टिकोण से भटक जाती हैं। यदि नीति-निर्माता सर्वोदय को अपनाएं, तो यह असमानता के खिलाफ एक प्रभावी उपाय हो सकता है, जो समाज के हर वर्ग को सशक्त बनाने की दिशा में काम करेगा।

गांधी की राजनीतिक दृष्टि—सत्ता को जनसेवा का साधन मानने की सोच—आज की भ्रष्टाचार और नैतिक पतन से ग्रस्त राजनीति में एक कठिन लेकिन आवश्यक आदर्श प्रस्तुत करती है। उनका ग्राम स्वराज का सपना, जो स्थानीय भागीदारी और आत्मनिर्भरता पर आधारित था, पंचायती राज में आंशिक रूप से दिखता है, पर केंद्रीकृत शासन और नौकरशाही की जटिलताएं इसे पूरी तरह लागू होने से रोकती हैं। गांधी का सत्याग्रह—नैतिक और अहिंसक प्रतिरोध—आज के हिंसक और राजनीति से प्रेरित आंदोलनों के बीच दुर्लभ है। फिर भी, 'चिपको आंदोलन' जैसे पर्यावरणीय अभियानों या सामाजिक न्याय के लिए शांतिपूर्ण प्रदर्शनों में गांधीवादी तत्वों की झलक मिलती है, जो उनके विचारों की जीवंतता को दर्शाती है।

गांधी के विचारों की ताकत उनकी सार्वभौमिकता और लचीलेपन में निहित है। उनकी 'नई तालीम' की अवधारणा, जो शिक्षा को आत्मनिर्भरता और नैतिकता से जोड़ती थी, आज की डिग्री-केंद्रित और कौशल-प्रधान शिक्षा प्रणाली के लिए एक वैकल्पिक दृष्टिकोण पेश करती है। यह शिक्षा को केवल रोजगार का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी और व्यक्तिगत विकास का आधार बनाती है। हालांकि, गांधीवादी तरीकों की धीमी गति और धैर्य की मांग आधुनिक समाज की त्वरित परिणामों की चाहत के सामने चुनौती बनती है।

सबसे बड़ी विडंबना यह है कि गांधी के नाम का तो खूब उपयोग होता है—उनकी जयंती पर मूर्तियों को माला पहनाई जाती है—पर उनके सिद्धांतों को व्यवहार में लाने की इच्छाशक्ति कमजोर दिखती है। फिर भी, पर्यावरण कार्यकर्ता, सामाजिक सुधारक और शांति के पैरोकार आज भी गांधी से प्रेरणा लेते हैं। चाहे वह डिजिटल युग की विषाक्तता के खिलाफ अहिंसा हो, पर्यावरण संरक्षण और स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए स्वदेशी हो, या सामाजिक समानता के लिए सर्वोदय—गांधी के विचारों को आधुनिक संदर्भों में ढालकर लागू किया जा सकता है।

गांधी का सबसे शक्तिशाली संदेश था—परिवर्तन की शुरुआत स्वयं से करनी होती है। यदि आज का समाज और राजनीति इस संदेश को आत्मसात कर ले, तो गांधीवाद न केवल प्रासंगिक रहेगा, बल्कि एक न्यायपूर्ण, टिकाऊ और समावेशी विश्व की नींव बन सकता है। उनके विचार हमें याद दिलाते हैं कि सच्चा बदलाव धीमा हो सकता है, लेकिन उसका प्रभाव गहरा और स्थायी होता है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

संयुक्त परिवारों का स्वर्ण युग

विजय गर्ग

मानव जीवन के तीन चरण होते हैं। प्राचीन काल में, संयुक्त परिवारों में बुजुर्ग, पति/पत्नी, उनके बच्चे, मामा/मामी, उनके बच्चे, पोते-पोतियाँ, परपोते-परपोतियाँ आदि होते थे, अर्थात चार पीढ़ियाँ, परिवार की चार इकाइयाँ एक ही छत के नीचे रहती थीं। ऐसे परिवारों को संयुक्त परिवार कहा जाता है। संयुक्त परिवारों का अस्तित्व का काल समाज का स्वर्णिम काल था, क्योंकि संयुक्त परिवार की संरचना एक लघु-संगठन की तरह थी, जिसमें पंद्रह से बीस परिवार के सदस्य एक साथ रहते थे। परिवार में सबसे बड़ा बुजुर्ग साहूकार या चौधरी की भूमिका निभाता था। उनके पहनावे के साथ-साथ, बापू का खुंडा एक सामाजिक प्रतीक था। परिवार में सबसे बड़ी बेटी को एक जिम्मेदार और सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। बाकी सदस्य उन दोनों का सम्मान करते थे। वे उन पर विश्वास करते थे। संयुक्त परिवारों में शिष्टाचार और अच्छे व्यवहार की प्रधानता थी। परिवार में रिश्तों का सम्मान और गर्मजोशी उचित तरीके से देखी जाती थी। रिश्ते प्राकृतिक होते थे, भौतिकवादी नहीं। संयुक्त परिवारों में बच्चे दादा-दादी की देखरेख में होते थे। और वे परिवार के बाकी सदस्यों के प्यार और स्नेह से पले-बढ़े। जैसा कि कहावत है, 'ब्याज धन से ज़्यादा कीमती होता है।' बच्चों का पालन-पोषण उनके दादा-दादी ने प्यार से किया। बच्चों को बड़ों की गोद और लोरियों की गर्माहट का आनंद मिला। संयुक्त परिवारों में उन्होंने अपने बड़ों से स्वाभाविक शिक्षा, अच्छी आदतें, नैतिक मूल्य, भाईचारा, सहनशीलता, संस्कृति, धैर्य, संतोष, संयम और जीवन भर की गतिविधियाँ सीखीं। संयुक्त परिवार

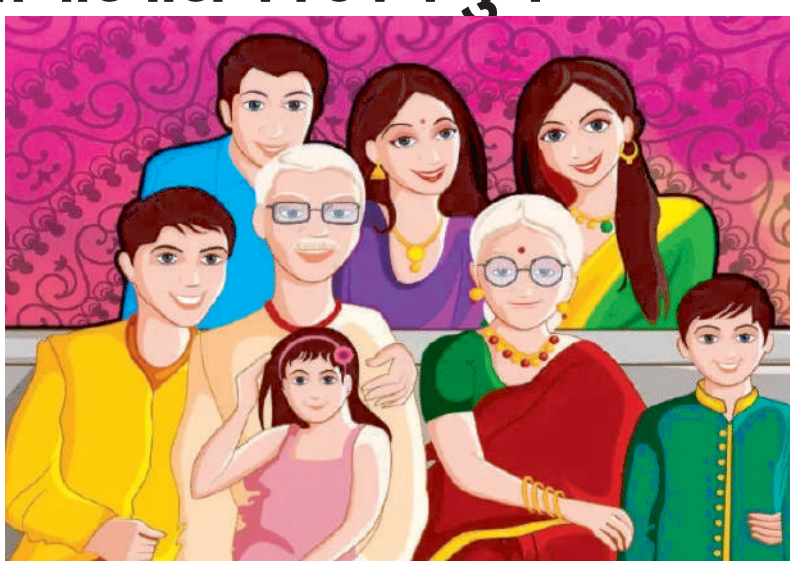

बच्चों और युवाओं के लिए अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त करने के स्कूल थे। संयुक्त परिवारों के अस्तित्व के दौरान, परिवारों का मुख्य व्यवसाय कृषि और पशुपालन था। स्कूली शिक्षा का व्यापक प्रसार नहीं था। परिवार के सदस्य एक-दूसरे के काम में साथ-साथ काम करते थे। वे सब मिलकर, धैर्य, संतोष और संयम के साथ अपना-अपना काम करते हुए, परिवार को आर्थिक रूप से मजबूत बनाते थे। महिलाएँ साझी रसोई में मिलकर खाना बनातीं और सबसे बड़ी बेटी खाना परोसती, और परिवार के किसी भी सदस्य के बीच कोई भेदभाव नहीं किया जाता था। संयुक्त परिवारों में, बड़ों के सानिध्य में बच्चों का पालन-पोषण उनके जीवन में एक सुखद रंग भर देता था। आज संयुक्त परिवार टूट गए हैं। भौतिकवादी युग और आवश्यकताओं की अधिकता के कारण एकल परिवार अस्तित्व में आ गए हैं। परिवार सिकुड़ रहे हैं। एकल परिवारों में भी टूटने का खतरा मंडरा रहा है। बच्चे कम उम्र में ही विदेश जा रहे हैं। बुजुर्ग माता-पिता इधर-उधर अकेलेपन का दंश झेल रहे हैं। परिवारों में भी बुजुर्गों को बोझ समझा जाने लगा है। बुजुर्गों को वृद्धाश्रमों में धकेला जा रहा है। संवेदनशीलता कम हो गई है। समय के बदलाव के साथ बहुत कुछ बदल गया है। संयुक्त परिवारों के ज़माने को याद करके, बुजुर्ग एक-दूसरे से बातें करके शांति पाते हैं। जो समय बचता है, वह है अच्छे समय की अच्छी यादों को ताज़ा करके। वे खर्च कर रहे हैं।

शहर की चकाचौंध में छुपा शांति का ठिकाना: सन्नाटा ज़ोन

शहरों की चकाचौंध और अनवरत कोलाहल के बीच एक नई चाहत उभर रही है—'सन्नाटा ज़ोन' की खोज। यह कोई साधारण स्थान नहीं, बल्कि शहरी जीवन की आपाधापी में खोई शांति को पुनर्जनन की एक जरूरत है। कोविड-19 की वैश्विक त्रासदी और डिजिटल दुनिया के निरंतर दबाव ने लोगों को एकांत की तलाश में प्रेरित किया है। यह खोज केवल व्यक्तिगत सुकून की चाह नहीं, बल्कि सामाजिक, मानसिक और आर्थिक दृष्टिकोण से एक परिवर्तनकारी कदम है। शहर, जो कभी सपनों और संभावनाओं के प्रतीक थे, अब तनाव, असुरक्षा और अंतहीन दौड़ का पर्याय बन चुके हैं। ऐसे में, सन्नाटा ज़ोन न केवल एक आश्रय है, बल्कि आधुनिक जीवन की जटिलताओं से मुक्ति का रास्ता भी है।

शहरी जीवन की सबसे बड़ी विडंबना है सामाजिक संबंधों का अतिप्रवाह। कार्यस्थल की प्रतिस्पर्धा, सामाजिक मेलजोल की अपेक्षाएं और सोशल मीडिया की आभासी दुनिया ने लोगों को ऐसी जटिल उलझन में फंसा दिया है, जहां आत्म-चिंतन के लिए समय निकालना असंभव-सा लगता है। कोविड महामारी ने इस सामाजिक ढांचे को हिला दिया। लॉकडाउन के दौरान एकाकीपन ने लोगों को अपने भीतर झांकने का अवसर दिया, और कई ने अनुभव किया कि निरंतर सामाजिक संपर्क की आवश्यकता एक भ्रामक दबाव है। सन्नाटा ज़ोन इस दबाव से मुक्ति का मार्ग बन रहा है। यह वह स्थान है, जहां व्यक्ति बिना किसी बाहरी अपेक्षा के अपने विचारों और भावनाओं से संवाद कर सकता है। उदाहरण के लिए, दिल्ली और मुंबई जैसे महानगरों में लोग अब शांत कैफे, पार्क या पुस्तकालयों की तलाश में हैं, जहां वे बिना व्यवधान के स्वयं को समझ सकें। सामाजिक दृष्टिकोण से, सन्नाटा ज़ोन व्यक्ति को अनावश्यक सामाजिक बंधनों से आजादी देता है और अपनी पहचान को पुनर्परिभाषित करने का अवसर प्रदान करता है। यह न केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता को बढ़ावा देता है, बल्कि गहरे और सार्थक रिश्तों को भी प्रोत्साहित करता है। जब व्यक्ति स्वयं से संतुष्ट होता है, तभी वह दूसरों के साथ प्रामाणिक और सशक्त संबंध स्थापित कर सकता है।

आधुनिक शहरी जीवन मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक गंभीर चुनौती बन चुका है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में डिप्रेशन और एंग्जायटी के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं, और शहरों में यह समस्या और भी गहरी है। सूचनाओं का अतिप्रवाह, कार्यस्थल का दबाव और सोशल मीडिया की तुलनात्मक संस्कृति ने मानसिक शांति को दुर्लभ बना दिया है। डिजिटल जीवन ने इस संकट को और गहराया है। स्मार्टफोन और इंटरनेट ने हर पल को सूचनाओं और तुलनाओं से भर दिया, जिससे मन का सुकून छिन गया। सन्नाटा ज़ोन इस संदर्भ में एक मनोवैज्ञानिक शरणस्थल है। यह वह स्थान है, जहां व्यक्ति ध्यान, आत्मनिरीक्षण या साधारण मौन के माध्यम से अपने मन को स्थिर कर सकता है। मिसाल के तौर पर, बेंगलुरु जैसे तकनीकी केंद्र में युवा पेशेवर अब 'साइलेंट रिट्रीट' या 'मेडिटेशन स्पेस' की तलाश में हैं, जहां वे डिजिटल शोर से मुक्त होकर सुकून के पल बिता सकें। मनोवैज्ञानिक शोध बताते हैं कि नियमित अंतराल पर मौन और एकांत में समय बिताने से तनाव कम होता है, एकाग्रता बढ़ती है और भावनात्मक स्थिरता में सुधार होता है। सन्नाटा ज़ोन न केवल मानसिक स्वास्थ्य को पुनर्जनन करता है, बल्कि व्यक्ति को अपनी भावनाओं और विचारों को समझने का अवसर भी देता है। यह दीर्घकालिक मानसिक लचीलापन विकसित करने का एक प्रभावी माध्यम है, जो शहरी जीवन की चुनौतियों से निपटने में सहायता करता है।

आर्थिक दृष्टिकोण से सन्नाटा ज़ोन की प्रासंगिकता को नजरअंदाज करना असंभव है। शहरी जीवन की बढ़ती लागत और कार्यस्थल की तीव्र प्रतिस्पर्धा ने लोगों को अधिक उत्पादक और रचनात्मक होने के लिए प्रेरित किया है, लेकिन निरंतर शोर और दबाव इस रचनात्मकता को दबा देते हैं। सन्नाटा ज़ोन एक ऐसा वातावरण प्रदान करता है, जहां व्यक्ति अपने विचारों को व्यवस्थित कर नवाचार की प्रेरणा पा सकता है। कोविड के बाद वर्क-फ्रॉम-होम मॉडल ने लचीलापन तो दिया, लेकिन बर्नआउट की समस्या को भी बढ़ाया। सन्नाटा ज़ोन एक किफायती समाधान है—यह कोई महंगा रिसॉर्ट नहीं, बल्कि घर का एक शांत कोना, पार्क की बेंच या छोटी लाइब्रेरी हो सकता है। उदाहरण के लिए, चेन्नई में लोग समुद्रतटों या शांत बगीचों में सुकून तलाश रहे हैं। यह शांत वातावरण कर्मचारियों की उत्पादकता बढ़ाता है, क्योंकि मौन में लिए गए निर्णय अधिक विचारशील और प्रभावी होते हैं। साथ ही, यह मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से निपटने की लागत—जैसे चिकित्सा और परामर्श—को कम करता है। दीर्घकाल में, सन्नाटा ज़ोन व्यक्तिगत और संगठनात्मक आर्थिक लाभ का आधार बनता है, जो समाज के लिए भी समृद्धिकर है।

सन्नाटा ज़ोन की सांस्कृतिक और पर्यावरणीय प्रासंगिकता भी गहरी है। भारतीय संस्कृति में योग, ध्यान और एकांत को प्राचीन काल से आत्मज्ञान का मार्ग माना गया है, लेकिन आधुनिक शहरी जीवन ने इस विरासत को धुंधला कर दिया। कोविड और डिजिटल थकान ने लोगों को फिर से इस ओर मोड़ा है। सन्नाटा ज़ोन न केवल व्यक्तिगत शांति का स्रोत है, बल्कि पर्यावरणीय स्थिरता को भी बढ़ावा देता है। शहरों में शोर प्रदूषण और भीड़ न केवल मानसिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाते हैं, बल्कि पर्यावरणीय संतुलन को भी बिगाड़ते हैं। हरे-भरे पार्क, शांत नदी किनारे या छोटे बगीचे जैसे सन्नाटा ज़ोन व्यक्तिगत कल्याण को बढ़ाते हैं और पर्यावरण संरक्षण में योगदान देते हैं। यह अवधारणा व्यक्तिगत और सामूहिक कल्याण को एकजुट करती है।

रोजगार का भविष्य: इंसान बनाम आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस

आज विज्ञान और तकनीक का युग है।विज्ञान और तकनीक के इस युग ने मनुष्य को बहुत कुछ दिया है और एआइ भी निश्चित रूप से इनमें से एक है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज हम सभी एआइ(आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के जमाने में सांस ले रहे हैं और वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) तेजी से हमारे जीवन का हिस्सा बनती जा रही है। एआइ से काम करना आज बहुत आसान या यूं कहें कि सरल हो गया है। शिक्षा से लेकर स्वास्थ्य, कृषि, उधोग व व्यापार, परिवहन, सुरक्षा, बैंकिंग व वित्त, मनोरंजन, घर और दैनिक जीवन, अंतरिक्ष तक आज कौनसा क्षेत्र है, जहां एआइ से काम नहीं हो रहा है ? यानी कि सब जगह आज एआइ का धड़ल्ले से इस्तेमाल या प्रयोग किया जा रहा है।शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, संचार, बैंकिंग, कृषि, उद्योग और सुरक्षा जैसे लगभग सभी क्षेत्रों में एआई का प्रयोग बढ़ने से जहां अनेक नए अवसर पैदा हो रहे हैं, वहीं रोजगार के परिदृश्य में भी बड़े बदलाव देखने को मिल रहे हैं।कई विशेषज्ञों का यह मानना है कि आने वाले वर्षों में एआई पारंपरिक नौकरियों को प्रभावित करेगी और काम करने के तरीकों में मूलभूत परिवर्तन लाएगी।पाठक जानते हैं कि मानव की तुलना में एआई विभिन्न कार्यों को तेजी और सटीकता से करने में सक्षम है। उदाहरण के लिए, आज के समय बैंकिंग सेक्टर में डाटा एंट्री, ग्राहक सेवा(कस्टमर सर्विस) या लेन-देन संबंधी प्रक्रियाओं को चैटबॉट और ऑटोमेशन द्वारा पूरा किया जा रहा है। इसी प्रकार, फैक्टरियों में मशीन लर्निंग और रोबोटिक्स का इस्तेमाल, उत्पादन प्रक्रिया को तेज और त्रुटिरहित बनाने के लिए हो रहा है। परिणामस्वरूप, कई जगह मानव श्रमिकों(मैनपावर) की आवश्यकता घटने लगी है। बहरहाल, यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि एआई का प्रभाव मुख्यतः उन क्षेत्रों पर अधिक होगा, जहां कार्य दोहराए जाते हैं और निर्णय सीमित जानकारी के आधार पर लिए जाते हैं। उदाहरण के तौर पर कस्टमर सपोर्ट के लिए पहले जहां कॉल सेंटर में हजारों कर्मचारी कार्य करते थे, आज वहां चैटबॉट और वर्चुअल असिस्टेंट यह काम कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो कस्टमर सपोर्ट तो एआइ के कारण पूरी तरह से खत्म हो सकती है।इसी प्रकार से निर्माण उद्योग की बात करें तो वहां उत्पादन, पैकेजिंग और क्वालिटी चेक जैसे कार्य रोबोट द्वारा किए जा रहे हैं। आज डिलीवरी ड्रोन से काम हो रहा है, सेल्फ ड्राइविंग गाड़ियां आ चुकीं हैं, ये सब एआइ के कारण संभव हुआ है, यह ठीक है लेकिन भविष्य में ये सब परिवहन के क्षेत्र में ड्राइवरों और डिलीवरी कर्मचारियों की मांग कम कर सकते हैं। आज एआइ के कारण लेखा-जोखा और बैंकिंग का काम आसान हो गया है। एआई आधारित सॉफ्टवेयर तुरंत गणना, विश्लेषण और रिपोर्ट तैयार कर सकते हैं, पहले इसके लिए मैनपावर की जरूरत होती थी। आज एआइ का उपयोग मीडिया के क्षेत्र में और कंटेंट तैयार करने में किया जा रहा है। समाचार लेखन, अनुवाद और वीडियो संपादन जैसे काम भी अब आंशिक रूप से एआई कर रहा है, ऐसे में मैनपावर की जरूरत पहले की तुलना में काफी कम हो गई है। लेकिन यहां यह भी एक तथ्य है कि हालांकि, एआई से नौकरियां खत्म होंगी, लेकिन साथ ही नए रोजगार भी बनेंगे। उदाहरण के लिए, एआई सिस्टम को डिजाइन करने, उसका रखरखाव करने और उसे सुरक्षित बनाने के लिए विशेषज्ञों की आवश्यकता होगी। आज के युग में निरंतर डाटा वैज्ञानिक, मशीन लर्निंग इंजीनियर, साइबर सिक्योरिटी विशेषज्ञ और एआई नैतिकता से जुड़े पदों की मांग लगातार बढ़ रही है। इसके अतिरिक्त, यह भी एक तथ्य है कि एआई के कारण हेल्थकेयर, शिक्षा और कृषि क्षेत्र समेत अनेक क्षेत्रों में में नए नवाचार होंगे, जिससे नई तरह की नौकरियां पैदा होंगी। संक्षेप में कहें तो एआइ के दोनों पहलू हैं। इसमें अवसर (अपार्चुनिटीज) भी हैं और चुनौतियाँ (चैलेंजेज) भी हैं। सबसे बड़ी चुनौती यह है कि पारंपरिक नौकरियों पर निर्भर लोगों को नए कौशल सिखाना और तकनीक के अनुकूल बनाना आज के समय की बड़ी मांग है।इसके लिए स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम चलाए जाने की आवश्यकता है। इसके अलावा, एआई का नैतिक और जिम्मेदार उपयोग सुनिश्चित करना भी जरूरी है ताकि यह केवल मुनाफे का साधन न रहकर मानव कल्याण का साधन बने। पाठकों को बताता चलूं कि एआई मशीन आधारित तकनीक है, इसमें मानव जैसी भावनाएँ, संवेदनाएँ या नैतिक मूल्य स्वयं से मौजूद नहीं होते। यह केवल डेटा, एल्गोरिद्म और प्रोग्रामिंग पर आधारित होकर कार्य करता है। इसलिए इसका नैतिक और जिम्मेदार उपयोग पूरी तरह से मानव पर निर्भर है और एआइ जिम्मेदार और नैतिक उपयोग तभी संभव है जब इंसान इसे नियंत्रित, नियोजित और पारदर्शी तरीके से अपनाए। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि ओपनएआइ के सीईओ सैम ऑल्टमैन और वालमार्ट के सीईओ डग मैक्मिलन ने हाल ही में खुलकर यह बात कही है कि एआइ से काम करने के तरीके बदलेंगे और बहुत सारी नौकरियां प्रभावित होंगी। सैम ऑल्टमैन ने यह चेतावनी दी है कि एआइ के विकास से लगभग 30-40 % कार्य (टास्क) मानवों द्वारा आज की तरह किए जाने वाले काम होंगे, एआइ उन्हें करने लगेगा। उन्होंने कहा है कि यह जरूरी नहीं कि पूरी नौकरियाँ खत्म हों, बल्कि 'टास्क' का हिस्सा बदलेगा।वास्तव में कुछ कामों में मानवता की भूमिका जैसे कि दूसरों की देखभाल करना, दूसरे लोगों के प्रति संवेदनशील होना और ऐसे कौशल, जिन्हें मशीनें पूरी तरह से न दोहरा सकेंगी, भविष्य में और अधिक महत्वपूर्ण होंगी।आल्टमेन का यह मानना है कि एआइ सिस्टम उम्मीद से कहीं तेज गति से आगे बढ़ रहे हैं और आने वाले वर्षों में आगे निकलकर सुपरइंटेलिजेंस के स्तर तक पहुंच सकता है। वास्तव , यह ऐसी समस्याओं का हल खोज पाएगा जिनसे इंसान खुद नहीं निपट सकते हैं। इधर, डग मैक्मिलन (वालमार्ट सीईओ) ने यह बात कही है कि 'प्रायः हर नौकरी बदलेगी।' यानी हर कार्य में एआइ टूल्स, ऑटोमेशन और नए तरीके काम में आएँगे। वास्तव में, एआइ के कारण बदलाव नकारात्मक और सकारात्मक दोनों तरह के होंगे। कुछ नौकरियाँ घटेंगी, तो वहीं दूसरी ओर कुछ नए अवसर भी उत्पन्न होंगे। वालमार्ट के डग मैक्मिलन ने समूह की एक कांन्फ्रेंस में चेतावनी देते हुए कहा है कि एआइ वर्क फोर्स के हर क्षेत्र को छुएगी। यहां गौरतलब है कि वालमार्ट फिलहाल अपने 21 लाख कर्मचारियों को एआइ में प्रशिक्षित कर रहा है। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि हमारे देश में ज्यादातर नौकरियाँ मानव श्रम पर निर्भर हैं, और हमारे यहां एआइ-चालित बदलाव तेजी से महसूस होंगे। विशेष रूप से कॉल सेंटर, दस्तावेजी काम, बुनियादी विश्लेषण इत्यादि में।लेकिन भारत में युवा शक्ति, तकनीकी शिक्षा की उपलब्धता, आनुवांशिक क्षमता और अंग्रेज़ी ज्ञान जैसे फायदे भी हैं और यदि लोगों को सही दिशा में प्रशिक्षित किया जाए, वे इन बदलाव का लाभ उठा सकते हैं। आज जरूरत इस बात की है कि लर्निंग, रि-स्किलिंग और नीति-निर्माण पर ध्यान दिया जाए। अंत में यही कहूंगा कि निस्संदेह, एआई रोजगार जगत में क्रांति ला रहा है। कई नौकरियां समाप्त होंगी, तो कई नई नौकरियां भी पैदा होंगी। फर्क केवल इतना होगा कि काम का स्वरूप बदल जाएगा और लोगों को अपने कौशल(स्किल्स) को समय-समय पर अपडेट करना होगा। इसीलिए आज के समय में यह बहुत ही महत्वपूर्ण और आवश्यक है कि हम एआई से डरने के बजाय इसे अवसर के रूप में स्वीकार करें और खुद को बदलते समय के साथ ढालें। यही वह रास्ता है जिससे हम एआई के प्रभाव को सकारात्मक दिशा में मोड़ सकते हैं। निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि एआई न तो पूर्ण रूप से वरदान है और न ही अभिशाप। यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम इसे किस तरह अपनाते हैं। यदि हम रचनात्मक सोच, तकनीकी शिक्षा और कौशल-विकास पर ध्यान दें तो एआई नई संभावनाओं के द्वार खोलेगा। लेकिन यदि हम इसके नकारात्मक प्रभावों को नजरअंदाज करेंगे, तो यह बेरोजगारी और सामाजिक असमानता का कारण भी बन सकता है।सच तो यह है कि एआइ के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही पहलू हैं। एआइ के सकारात्मक पहलू की बात करें तो यह नई नौकरियों के सृजन,काम की गुणवत्ता में सुधार, उत्पादकता में वृद्धि,सुरक्षा और जोखिम प्रबंधन की दृष्टि से एक वरदान है। वहीं दूसरी ओर एआइ से नौकरियों के खत्म होने के साथ ही साथ कौशल असमानता का खतरा पैदा हो सकता है।एआइ में मानव भावनाओं का अभाव होता है।एआइ से इंसान के अपने सोचने और समस्या हल करने की क्षमता कमजोर हो सकती है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

वास्तविक डेमोक्रेसी तभी जब वह सायास डेमोग्राफी बदले बिना हो

विवेक रंजन श्रीवास्तव

लोकतंत्र का आधार "जनता के लिए, जनता के द्वारा, जनता का शासन।" यह विचार अपने आप में सरल, स्पष्ट और सार्वभौमिक है किंतु जब इसे सामाजिक संरचना, जातीय विविधता और जनसंख्या के बदलते स्वरूप के सन्दर्भ में देखा जाए, तब इसकी जटिलता और चुनौतीपूर्ण स्वरूप सामने आता है। भारत जैसे विशाल, विविध और बहुलतावादी देश में यह प्रश्न और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है ।क्या लोकतंत्र तब भी उतना ही प्रभावी और निष्पक्ष रह पाता है जब उसकी जनसांख्यिकीय (डेमोग्राफिक) संरचना लगातार बदलती रहे? क्या इंटेंशनली डेमोग्राफी बदलना और किसी खास राजनीतिक पार्टी के समर्थक बसा कर चुनाव जीत जाना लोकतंत्र है?

डेमोग्राफी का सीधा सम्बन्ध जनसंख्या की जातीय, धार्मिक, भाषाई और सांस्कृतिक बनावट से है। लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में प्रतिनिधित्व का सिद्धांत महत्वपूर्ण होता है ।हर समूह, हर वर्ग को उसका उचित स्थान और आवाज़ मिले परंतु जब डेमोग्राफिक समीकरण किसी विशेष समूह की अत्यधिक वृद्धि या अन्य समूहों के हाशिए पर जाने की दिशा में बदलते हैं, तब यह संतुलन टूटने लगता है। इस असंतुलन का सीधा प्रभाव लोकतांत्रिक संस्थाओं की निष्पक्षता, नीति निर्माण और सामाजिक न्याय पर पड़ता है।

वर्तमान समय में अनेक देशों में यह संकट उभरकर सामने आया है कि डेमोग्राफिक परिवर्तन चाहे वह प्रवास (migration) के कारण हो या प्रजनन दर के अंतर से, राजनीतिक परिदृश्य को प्रभावित करता है। भारत में भी यह मुद्दा संवेदनशील और गंभीर होता जा रहा है। यदि एक विशेष धार्मिक या जातीय समूह की जनसंख्या अत्यधिक बढ़ती है, और अन्य समूह सांस्कृतिक, आर्थिक या शैक्षिक पिछड़ाव के कारण पिछड़ते हैं तो यह न केवल सामाजिक विषमता को जन्म देता है बल्कि लोकतंत्र के भीतर बहुमतवाद (majoritarianism) की विकृत छाया भी फैलने लगती है।

लोकतंत्र बहुमत से चलता है, यह बात सही है परंतु एक परिपक्व लोकतंत्र वह होता है जहाँ बहुमत की ताकत का दुरुपयोग न हो और अल्पसंख्यकों की आवाज़ भी समान रूप से सुनी जाए। इसके लिए डेमोग्राफिक संतुलन आवश्यक है। यह संतुलन केवल संख्यात्मक ही नहीं होता बल्कि अवसरों, संसाधनों और प्रतिनिधित्व में भी होता है। यदि किसी विशेष क्षेत्र में कोई एक समुदाय जनसंख्या में इतना अधिक बढ़ जाए कि वह अन्य सभी समुदायों की राजनीतिक आवाज़ को दबा दे तो वहाँ लोकतंत्र केवल एक 'सांख्यिकीय खेल' बनकर रह जाता है, उसके नैतिक और न्यायपूर्ण मूल्य बिखरने लगते हैं।

भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों, केरल, पश्चिम बंगाल, असम और दिल्ली जैसे क्षेत्रों में यह चिंता समय-समय पर उठती रही है कि जनसांख्यिकीय बदलावों के कारण मूल निवासी या परंपरागत समुदायों का प्रभाव कम होता जा रहा है। जब जनसंख्या असंतुलन की दिशा में बढ़ती है तो उससे सामाजिक तनाव, सांस्कृतिक संघर्ष और राजनीतिक ध्रुवीकरण जन्म लेता है। इस प्रक्रिया में लोकतंत्र का मूल उद्देश्य समावेशिता, सहभागिता और न्याय कमजोर पड़ जाता है।

यह कहना आवश्यक है कि डेमोग्राफिक नियंत्रण का अर्थ किसी समुदाय विशेष को निशाना बनाना नहीं होना चाहिए बल्कि यह प्रयास होना चाहिए कि सभी समुदायों को शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण और आर्थिक विकास के समान अवसर मिलें ताकि संपूर्ण समाज संतुलित और स्थिर गति से आगे बढ़े। जब सभी वर्गों में प्रजनन दर, जीवन स्तर और संसाधनों तक पहुँच में संतुलन होता है, तभी लोकतंत्र सशक्त और वास्तविक बनता है।

दूसरी ओर, यदि किसी समुदाय की जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि होती है परंतु वह शिक्षा, आर्थिक सहभागिता और समरसता की दिशा में पीछे रहता है तो इससे केवल उसका ही नहीं, पूरे राष्ट्र का सामाजिक और राजनीतिक ताना-बाना प्रभावित होता है। अतः जनसांख्यिकीय संतुलन केवल सांख्यिकीय चुनौती नहीं है बल्कि यह लोकतंत्र की स्थिरता और सामाजिक समरसता का आधार है।

इसके अतिरिक्त, 'वोट बैंक की राजनीति' भी डेमोग्राफिक असंतुलन को भुनाने का कुटिल प्रयास करती है। यदि किसी समुदाय की जनसंख्या राजनीतिक दलों के लिए बहुमूल्य मतदाता संख्या में परिवर्तित हो जाती है तो नीति निर्धारण उस समुदाय की तुष्टिकरण की दिशा में झुक जाता है जिससे नीति का उद्देश्य 'सार्वजनिक कल्याण' से हटकर 'राजनीतिक लाभ' हो जाता है। इससे लोकतंत्र की आत्मा पर गहरी चोट पहुँचती है।

इसलिए, वास्तविक लोकतंत्र की संकल्पना केवल चुनावों, मतदाता सूची या संसदीय व्यवस्था तक सीमित नहीं होनी चाहिए। यह एक सामाजिक अनुबंध है जिसमें हर नागरिक, हर समुदाय और हर संस्था का संतुलित सहभाग आवश्यक है। यह तभी सम्भव है जब डेमोग्राफी एक स्थिर और संतुलित स्थिति में रहे । न कोई समुदाय अत्यधिक प्रभुत्व में हो, न कोई पूरी तरह उपेक्षित समावेशी भाव प्रधान हो ।

भारत की विविधता इसकी शक्ति है, लेकिन यह शक्ति तभी टिकाऊ बन सकती है जब जनसंख्या के सभी घटक बराबरी के सहभागी बनें। इसके लिए जनसांख्यिकीय संतुलन, समरसता, और समान अवसरों की व्यवस्था को प्राथमिकता देनी होगी। वास्तविक लोकतंत्र का उदय तब होगा जब संख्या के खेल से परे जाकर, मूल्यों, मर्यादा और सहभागिता की राजनीति को अपनाया जाएगा । यह तभी सम्भव है जब सायास डेमोग्राफी बदले बिना, लोकतांत्रिक प्रदर्शन हो ।

स्वदेशी सप्ताह के अंतर्गत "स्वदेशी एवं विदेशी उत्पादन" विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

रिपोर्ट अंकित गुप्ता

गंजडुंडवारा।(अनिल राठौर)

नाथूराम सुशीला देवी सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज गंजडुंडवारा में आज स्वदेशी सप्ताह के अंतर्गत "स्वदेशी एवं विदेशी उत्पादन" विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में नगर के प्रमुख शिक्षण संस्थानों—Q.H. इंटर कॉलेज, वैदिक कन्या इंटर कॉलेज, H.N. इंटर कॉलेज, नाथूराम सुशीला देवी सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज —के प्रतिभागी भैया-बहनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

प्रतियोगिता का निर्णय जिला बौद्धिक प्रमुख अर्चित सिंह चौहान एवं नगर के प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. पंकज वर्मा ने किया। निर्णायकों का स्वागत विद्यालय के प्रधानाचार्य गिरीश कुमार द्वारा गीता ग्रंथ भेंट कर किया गया।

प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए

प्रथम स्थान नाथूराम सुशीला देवी सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज गंजडुंडवारा के भैया माधव उपाध्याय ने प्राप्त किया।

द्वितीय स्थान भी इसी कॉलेज की बहन अनुष्का सिंह को मिला।

तृतीय स्थान Q.H. इंटर कॉलेज की बहन शिजा मुस्ताख रहीं।

इस वाद-विवाद प्रतियोगिता का संयोजन विद्यालय के हिंदी प्रवक्ता अवनीश कुमार एवं नवीन द्विवेदी द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के अंत में वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. पंकज वर्मा ने भैया-बहनों के समक्ष स्वदेशी एवं विदेशी वस्तुओं के प्रमुख नाम एवं उत्पाद रखे और छात्रों को स्वदेशी अपनाने पर विशेष जोर दिया।

अंत में विजेताओं को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। सभी प्रतिभागियों को भी प्रमाण पत्र देकर प्रोत्साहित किया गया।

प्रधानाचार्य गिरीश कुमार ने अपने उद्बोधन में कहा कि स्वदेशी अपनाना मात्र एक विचार नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक सशक्त कदम है। इस प्रकार की प्रतियोगिताएँ छात्रों में जागरूकता के साथ-साथ राष्ट्रप्रेम की भावना भी जागृत करती हैं।

यह आयोजन विद्यालय परिवार के साथ-साथ नगर के शैक्षणिक वातावरण के लिए अत्यंत प्रेरणादायी सिद्ध हुआ।

सीरवी समाज, कोरेमुला बड़ेर द्वारा आयोजित नवरात्रि महोत्सव का समापन हवन यज्ञ एवं पूर्णाहुति के साथ हुआ। अवसर पर उपस्थित संरक्षक प्रभुराम परिहारिया,अध्यक्ष कालूराम काग, सचिव डायाराम लवेटा, सह सचिव राजाराम गेहलोत, अमराराम राठौड़, पं. बाबूलाल शर्मा व अन्य।

ज्ञान से विनाश तक: रावण की कहानी में हमारा आज

"कभी-कभी पराजित होने वाले ही सबसे गहरी जीत का बीज बो जाते हैं।" यह कथन रावण के चरित्र को एक नई दृष्टि देता है। रामायण का खलनायक रावण केवल बुराई का प्रतीक नहीं, बल्कि मानव मन की जटिलता का दर्पण है। उसके दस सिर न तो महज शारीरिक विशेषता हैं, न ही अतिशयोक्ति। वे मनुष्य के भीतर की बहुआयामी प्रकृति, उसकी शक्तियों और कमजोरियों का गहरा दार्शनिक प्रतीक हैं। हर दशहरे पर रावण का पुतला जलता है, लेकिन क्या हमने कभी सोचा कि उसके दस सिर हमें क्या सिखाते हैं?

रावण के दस सिर मानव मन की विविधता को उजागर करते हैं। कोई भी व्यक्ति एकरूप नहीं होता। रावण इसका जीवंत उदाहरण है—वह शिव का परम भक्त, जिसने शिव तांडव स्तोत्र रचा; वेदों और शास्त्रों का प्रकांड विद्वान; संगीत और युद्धकला में निपुण। फिर भी, वही रावण अपनी वासना और अहंकार में डूबकर सीता का हरण करता है और अपने विनाश को आमंत्रित करता है। उसके दस सिर हमें सिखाते हैं कि हर मनुष्य में अनेक पहचानें, भावनाएँ और इच्छाएँ सह-अस्तित्व में रहती हैं। असली ताकत इनका संतुलन बनाए रखने में है। यदि यह संतुलन टूटता है, तो रावण की तरह मनुष्य स्वयं अपने पतन का कारण बन जाता है।

दार्शनिक दृष्टि से, रावण के दस सिरों को चार वेदों और छह शास्त्रों के प्रतीक के रूप में भी देखा जाता है। रावण के पास अपार ज्ञान था, लेकिन उसका अहंकार और महत्वाकांक्षा उस ज्ञान की गुलाम बन गई। यह हमें एक कालजयी शिक्षा देता है: ज्ञान अपने आप में पूर्ण नहीं है; उसका उपयोग उसकी दिशा तय करता है। आज के युग में, जब तकनीक और बुद्धि का दुरुपयोग समाज को विनाश की ओर ले जा सकता है, रावण का यह पहलू हमें आत्म-मंथन के लिए विवश करता है: क्या हमारा ज्ञान सृजन की ओर अग्रसर है, या विनाश की ओर?

रावण के दस सिरों को मानव मन की दस नकारात्मक प्रवृत्तियों—अहंकार, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, वासना, अन्याय, असत्य और ईर्ष्या—के रूप में भी देखा जाता है। ये प्रवृत्तियाँ हर मनुष्य के भीतर किसी न किसी रूप में मौजूद हैं। रावण इनका चरम प्रतीक है, क्योंकि उसने इन्हें नियंत्रित करने के बजाय पोषित किया। दशहरा हमें यही संदेश देता है: असली विजय बाहर के रावण को जलाने में नहीं, बल्कि अपने भीतर के इन दस सिरों पर विजय पाने में है। यह एक आंतरिक युद्ध है, जो हर व्यक्ति को स्वयं से लड़ना पड़ता है।

रावण के दस सिर केवल रामायण की कथा का हिस्सा नहीं, बल्कि मानव मन की जटिलता का गहरा प्रतीक हैं। दशहरे पर हर साल रावण का पुतला जलता है, लेकिन क्या हमने कभी सोचा कि उसके दस सिर हमें क्या सिखाते हैं? मनोविज्ञान कहता है कि हर व्यक्ति के भीतर कई व्यक्तित्व-खंड होते हैं—कभी दयालु, कभी क्रोधी, कभी परोपकारी, तो कभी स्वार्थी। रावण के दस सिर इन खंडों का प्रतीक हैं, जो एक साथ सक्रिय होकर मन को अस्थिर करते हैं। उसका पतन हमें सिखाता है कि जब तक हम इन खंडों को एकीकृत नहीं करते, तब तक शांति और संतुलन असंभव है। रावण का अंत हमें यह प्रश्न पूछने को मजबूर करता है: क्या हम अपने भीतर के इन सिरों को नियंत्रित कर पा रहे हैं?

रावण के दस सिर शक्ति के दुरुपयोग और अहंकार के बोझ का प्रतीक हैं। पुराणों में कई पात्रों ने अपार शक्ति हासिल की, लेकिन अहंकार ने उनका विनाश किया। रावण की शक्ति उसके दस सिरों में थी, लेकिन यही सिर उसके लिए अभिशाप बन गए। यह हमें सिखाता है कि शक्ति तभी सार्थक है, जब वह विनम्रता और करुणा के साथ उपयोग हो। अन्यथा, वह स्वयं को और समाज को नष्ट कर देती है। आज के युग में, जब कॉरपोरेट लालच, राजनीतिक अहंकार, और तकनीकी दुरुपयोग समाज को खोखला कर रहे हैं, रावण की यह सीख और भी प्रासंगिक है।

रावण की पत्नी मंदोदरी ने बार-बार उसे अहंकार और वासना से बचने की चेतावनी दी, लेकिन रावण के दस सिरों का शोर इतना तेज था कि वह विवेक की आवाज़ को दबा देता था। यह शोर आज भी हमारे भीतर है—सोशल मीडिया की उथल-पुथल, भौतिकवादी इच्छाओं का कोलाहल, और अंतहीन तुलनाओं का शोर। मंदोदरी हमें अपने अंतर की आवाज़ सुनने की प्रेरणा देती है। क्या हम उस शोर में अपने विवेक को सुन पा रहे हैं?

रावण के दस सिर आज हर जगह दिखते हैं। लालच का सिर कॉरपोरेट नीतियों में, क्रोध का सिर टूटते रिश्तों में, वासना का सिर सामाजिक अपराधों में, और असत्य का सिर भ्रामक प्रचार में हावी है। दशहरा हमें इन आधुनिक रावणों को पहचानने और उन पर विजय पाने का आह्वान करता है। यह केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि आत्म-निरीक्षण का अवसर है। असली विजयादशमी तब मनती है, जब हम अपने भीतर के रावण—अहंकार, क्रोध, लोभ, वासना आदि—को पहचानकर उसकी कमजोरियों पर काबू पा लेते हैं। रावण का पुतला जलाना महज एक प्रतीक है; सच्चा युद्ध तो हमारे अंतर्मन में लड़ा जाता है। हमें अपने दस सिरों—अहंकार, क्रोध, लोभ, और अन्य दुर्गुणों—पर नियंत्रण करना होगा। यह युद्ध कठिन है, पर यही वह पथ है जो हमें सच्ची विजय तक ले जाता है।

रावण के दस सिर यह दर्शाते हैं कि मनुष्य एक जटिल प्राणी है, जिसमें अच्छाई-बुराई, शक्ति-कमजोरी, और ज्ञान-अज्ञान का मिश्रण होता है। रावण का पतन सिखाता है कि संतुलन के अभाव में ये शक्तियाँ विनाशकारी बन सकती हैं। दशहरा का गहरा संदेश यही है कि हमें अपने भीतर के रावण को समझकर उस पर विजय प्राप्त करनी होगी। तभी हम अपने जीवन को सार्थक और पूर्ण बना सकते हैं। रावण के दस सिर केवल एक खलनायक की कथा नहीं, बल्कि आत्म-जागरूकता और आत्म-सुधार का एक गहन दार्शनिक संदेश हैं।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी(मप्र)

पुलिस एसआई नौकरी धोखाधड़ी रैकेट का भंडाफोड़

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : पुलिस एसआई की नौकरी में धोखाधड़ी। एक अभ्यर्थी गिरफ्तार। परीक्षा आयोजित करने वाली संस्था ने बड़े पैमाने पर धोखाधड़ी की। पुलिस सब-इंस्पेक्टर की नौकरी में धोखाधड़ी का बड़ा सौदा किया गया था। परीक्षा आयोजित करने वाली संस्था ही अभ्यर्थियों को विशेष कोचिंग के लिए हैदराबाद ले जा रही थी।पुलिस ने एक बड़ी साज़िश को नाकाम कर दिया है। पुलिस 120 अभ्यर्थियों को श्रीकाकुलम, आंध्र प्रदेश से ओडिशा के ब्रह्मपुर ले आई है। वहाँ उनसे पूछताछ जारी है।

बताया जा रहा है कि पुलिस उन्हें आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम से गिरफ़्तार करने के बाद पूछताछ के लिए ब्रह्मपुर ला रही है। पुलिस इस बात की जाँच कर रही है कि नौकरी में इस धोखाधड़ी के पीछे कौन है। ओडिशा पुलिस में सब-इंस्पेक्टर पद के लिए होने वाली परीक्षा में प्रश्नपत्र लीक करने की एक बड़ी योजना बनाई गई थी। अभ्यर्थियों को 3 बसों में श्रीकाकुलम, आंध्र प्रदेश ले जाया गया था। वहाँ छोड़ने के बाद, अभ्यर्थियों को उत्तर सहित प्रश्नपत्र दिया जाता। वे पूरी तैयारी के साथ परीक्षा देते। लेकिन पुलिस को इससे पहले ही इस साज़िश का पता चल गया। कल रात पुलिस ने श्रीकाकुलम से 120 अभ्यर्थियों को गिरफ़्तार किया। बताया जा रहा है कि परीक्षा कराने वाला संगठन उन्हें धोखाधड़ी के लिए ले जा रहा है। पुलिस सभी को पूछताछ के लिए ब्रह्मपुर ला रही है। शक है कि इसमें बहुत बड़े लोग शामिल हैं।

इस बीच, ओडिशा पुलिस ओपीआरबी ने नकल के खिलाफ कार्रवाई करने की इच्छा जताई है। इसके लिए ओपीआरबी ने एक हेल्पलाइन नंबर जारी किया है। अभ्यर्थी इस नंबर 9040493223 पर कॉल करके शिकायत दर्ज करा सकते हैं। एसआई परीक्षा 5/6 अक्टूबर को होगी। नकल के बाद निष्पक्षता के साथ परीक्षा आयोजित करने के लिए कदम उठाए गए हैं।

दुर्गा पूजा केलिए भूबनेश्वर में ट्रैफिक जाम असहनीय हो गया है

मनोरंजन सासमल , वरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : ट्रैफिक जाम असहनीय हो गया है। सौ मीटर चलने में एक घंटा लग जाता है। कल भारत-पाकिस्तान के हाई-वोल्टेज मैच के बावजूद सड़कों पर भारी भीड़ थी। लोग ट्रैफिक जाम में फँसे हुए थे और दहशत में थे। आज सातवें दिन भी दिन में भीड़ देखी गई। सड़कों पर गाड़ियों की कतारें लगी हुई हैं।एक बार जाम में फँसने के बाद बात खत्म। छोटे-बड़े, सभी तरह के वाहन फँसे हुए हैं। वाहनों का अंदर जाना मुश्किल हो गया है। घंटों जाम लगा रहता है। दूसरी ओर, कुछ लोग अपने वाहन सड़क पर छोड़कर भाग रहे हैं, तो कुछ मंडप के सामने वाहन पार्क करके पूजा देख रहे हैं। नतीजतन, यातायात की समस्या बढ़ती जा रही है।

इस बीच, राजधानी के 193 मंडपों के लिए 61 प्लाटून पुलिस बल तैनात किया गया है, जबकि 24 मंडपों में सोने-चाँदी के आभूषणों की सुरक्षा के लिए बंदूकधारी पुलिस तैनात की गई है। इसके अलावा, श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए हर मंडप में सीसीटीवी कैमरे लगाना अनिवार्य कर दिया गया है। भुवनेश्वर में कुल 61 प्लाटून पुलिस बल, 3 प्लाटून केंद्रीय बल, आतंकवाद निरोधक विशेष सामरिक इकाई और 20 प्लाटून होमगार्ड तैनात किए गए हैं।

महिलाओं की सुरक्षा के लिए एचईआर या शक्ति वाहिनी दल अलर्ट पर है। पुलिस ने किसी भी अप्रिय स्थिति से निपटने के लिए विभिन्न मंडपों के सामने अस्थायी नियंत्रण कक्ष स्थापित किए हैं। कटक में स्थिति और भी गंभीर है। प्रसिद्ध दुर्गा पूजा में प्रवेश करने के बाद लोग भीड़ से बाहर नहीं निकल पा रहे हैं। कमिश्नरेट पुलिस ने यातायात संबंधी दिशानिर्देश जारी किए हैं, फिर भी स्थिति को नियंत्रित करना पुलिस के लिए एक बड़ी चुनौती बन गया है।

स्लाइट में नैनोमैटेरियल्स पर प्रेरणादायी व्याख्यान एवं अंतरराष्ट्रीय छात्रवृत्ति अवसरों पर चर्चा का आयोजन

लोंगोवाल,30 सितंबर (जगसीर सिंह)-

संत लोंगोवाल इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (स्लाइट), लोंगोवाल में निदेशक प्रो. (डॉ.) मणिकांत पासवान के नेतृत्व में नैनोमैटेरियल्स पर एक ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायी सत्र का सफल आयोजन किया गया। यह विशेष व्याख्यान इलेक्ट्रॉनिक्स एवं कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग विभाग द्वारा आयोजित किया गया, जिसमें मलेशिया यूनिवर्सिटी की प्रतिष्ठित वैज्ञानिक प्रो. (डॉ.) लिन ने विशेषज्ञ वक्ता के रूप में अपने विचार साझा किए।

सत्र के दौरान प्रो. (डॉ.) लिन ने नैनोमैटेरियल्स के आधुनिक तकनीकी एवं शोध संबंधी पहलुओं पर विस्तृत जानकारी दी तथा छात्रों को इस क्षेत्र में उपलब्ध अवसरों के लिए प्रेरित किया। उन्होंने विशेष रूप से विभिन्न देशों में उपलब्ध छात्रवृत्ति योजनाओं की जानकारी साझा की, जिससे छात्र उच्च शिक्षा एवं शोध कार्य हेतु अंतरराष्ट्रीय अवसरों का लाभ उठा सकें। इस अवसर पर संस्थान के संकाय सदस्यों और बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। निदेशक प्रो. (डॉ.) मणिकांत पासवान ने कहा कि ऐसे व्याख्यान विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करते हैं और उन्हें नई दिशा प्रदान करते हैं।

झारखंड के मुख्य सचिव पद से अल्का तिवारी को भावभीनी बिदाई, अविनाश का स्वागत

मुख्यमंत्री ने अल्का तिवारी के सेवाकाल की सराहना की

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची, मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने आज झारखंड मंत्रालय में मुख्य सचिव पद से सेवानिवृत्त हो रही वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी अलका तिवारी को भावभीनी विदाई दी। इस मौके पर मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कहा कि निवर्तमान मुख्य सचिव अलका तिवारी ने अपने कार्यकाल के दौरान बेहतर प्रशासनिक क्षमता का परिचय देते हुए राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं एवं नीतियों के क्रियान्वयन में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने कहा कि उनके मार्गदर्शन से राज्य सरकार की कई महत्वाकांक्षी योजनाओं को सफलतापूर्वक लागू करने में मदद मिली है।

मुख्यमंत्री ने उनके सेवा काल की सराहना करते हुए कहा कि श्रीमती तिवारी ने सदैव ईमानदारी, निष्ठा और कर्तव्यपरायणता के साथ कार्य किया। उन्होंने राज्य प्रशासन को एक नई दिशा दी और प्रशासनिक परंपराओं को मजबूती दी। मुख्यमंत्री ने उन्हें भविष्य के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए आशा व्यक्त की कि आगे भी वे अपने अनुभव और मार्गदर्शन से समाज को लाभान्वित करती रहेंगी।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने नवनियुक्त मुख्य सचिव अविनाश कुमार को पदभार ग्रहण करने पर शुभकामनाएं देते हुए कहा कि अविनाश कुमार की कार्यकुशलता, दूरदर्शिता एवं प्रशासनिक अनुभव से राज्य प्रशासन को और अधिक मजबूती मिलेगी तथा राज्य सरकार की विकास की योजनाओं के कार्यान्वयन में तेजी आएगी।

इस अवसर पर नवनियुक्त मुख्य सचिव अविनाश कुमार, राज्य के नए विकास आयुक्त अजय कुमार सिंह सहित विभिन्न विभागों के प्रधान सचिव/सचिव तथा वरिष्ठ पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

सारंडा को अभ्यारण घोषित करने निर्देश पर पर मंत्रियों का समूह पहुंचा सारंडा

बड़ी तादाद में लोग मिले झारखंड सरकार के मंत्रियों से जताई आपत्ति

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

किरीबुरू, पश्चिमी सिंहभूम के छोटानागरा मचानगुटू मैदान में सोमवार को झारखंड सरकार की विधानसभा स्तरीय समिति की मौजूदगी में एक बड़ी आमसभा हुई. इसका उद्देश्य सारंडा को वन्य अभ्यारण wildlife sanctuary घोषित करने के प्रस्ताव पर ग्रामीणों की राय लेना था.जिस सारंडा के गर्भ से करोड़ों अरबों की कमाई सरकार को होती आ रही है . इस सभा में पंचायत प्रतिनिधि, मुंडा-मानकी, जनप्रतिनिधि व सामाजिक संगठन के लोग शामिल हुए. कार्यक्रम स्थल पुलिस मौजूद थी .

इस सभा की अध्यक्षता वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने की । सारंडा के डीएफओ अभिरूप सिन्हा के के व्यक्तव्य के बाद लोगों ने कहा कि जनता की राय ही अंतिम रिपोर्ट का आधार बनेगी. ग्रामीणों ने जमीन, परंपरागत अधिकार, पूजा स्थल और वनोपज संरक्षण की मांग उठायी. खदानों के बंद होने और रोजगार न मिलने पर नाराजगी जतायी. विस्थापन की आशंका और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी पर भी सवाल उठे.

जहां चिड़िया खदान अस्पताल की बदहाली और पोंगा नदी पर पुल नहीं बनने का मुद्दा प्रमुख रहा. विभिन्न गांवों के प्रतिनिधियों ने कहा कि ग्रामसभा की अनुमति के बिना अभ्यारण्य का कोई औचित्य नहीं है.

GoM in Saranda Meets Villagers on Wildlife Sanctuary

सैंक्चुअरी के पक्ष में तर्क दिया गया कि इससे वन्यजीवों का संरक्षण होगा. ईको-टूरिज्म को बढ़ावा मिलेगा. पर्यावरणीय संतुलन बना रहेगा. वहीं, इसका विरोध करने वालों ने कहा कि खेती, चराई, वनोपज और रोजगार पर असर पड़ेगा. विस्थापन की स्थिति बनेगी. समिति के अध्यक्ष झारखंड सरकार के वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने कहा कि सरकार लोकतांत्रिक प्रक्रिया का सम्मान करती है और जनता की भावनाओं के विपरीत कोई निर्णय नहीं

टीम में मंत्री दीपक बिरुवा, चमरा लिंडा, संजय प्रसाद यादव और दीपिका पांडेय सिंह मौजूद रहे। इनके साथ सांसद जोबा माझी, विधायक सोनाराम सिंकू, निरल पूर्ति, सुखराम उरांव, जगत माझी, जिला परिषद सदस्य लक्ष्मी सोरेन, उपायुक्त चंदन कुमार, पुलिस अधीक्षक अमित रेणु और सारंडा डीएफओ अभिरूप सिन्हा समेत कई आफिसर मौजूद रहे।

महेश्वर की त्रयोदशी शक्तिपीठ : साधना और श्रद्धा का अलौकिक तीर्थ

नर्मदा तट पर स्थित महेश्वर नगरी केवल ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर ही नहीं, बल्कि शक्ति साधना और देवी आराधना का अद्वितीय केंद्र भी है। होल्कर काल से लेकर आज तक यह नगर अपनी आध्यात्मिक परंपरा, कुलदेवी उपासना और धार्मिक उत्सवों के लिए प्रसिद्ध रहा है।

मान्यता है कि महेश्वर में स्थित तेरह प्रमुख शक्तिपीठ साधकों और श्रद्धालुओं की समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं। इन पीठों से जीवन में सुख, समृद्धि, शांति और ऋणमुक्ति का आशीर्वाद प्राप्त होता है। यहाँ प्रत्येक देवी किसी न किसी समाज या कुल की कुलदेवी के रूप में पूजित है, जिससे यह नगर सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान का जीवंत प्रतीक बनता है।

त्रयोदशी शक्तिपीठों की महिमा

महेश्वर के ये तेरह शक्तिपीठ अपनी-अपनी विशिष्टता और महत्व रखते हैं—

भवानी माता मंदिर (स्वाहा पीठ) – नगर की प्राचीन आराध्या, जिनकी साधना से विजय और कल्याण की प्राप्ति होती है।

माता का रुप तीनों पहर अलग अलग दर्शन देता।भोर में बाल्यावस्था में ,मध्यपहर में किशोरीसा तेज रुप और संध्या काल में अपनी वृहदरुप में भक्तों को आशीर्वाद देती है।

कालिका माता मंदिर – उग्र स्वरूप में प्रतिष्ठित माता, शक्ति और पराक्रम की अधिष्ठात्री।

सप्तश्रृंगी माता मंदिर – सप्तशक्ति स्वरूप में स्थित, यह पीठ भक्तों को दृढ़ता और साहस प्रदान करता है।

ऋणमुक्तेश्वर माता मंदिर, सहस्त्रधारा (कोटितीर्थ पीठ) – यहाँ दर्शन मात्र से जीवन के समस्त ऋणों से मुक्ति की मान्यता है।

सप्त मात्रिका मंदिर (सप्तपुरी पीठ) – नर्मदा तट पर स्थित यह मंदिर नगर की आध्यात्मिक धारा को निरंतर जीवंत बनाए रखता है।

महालक्ष्मी मंदिर (ब्रम्हपुरी पीठ) – लगभग 400 वर्ष प्राचीन, स्वयंभू प्रतिमा पर माता कमल पर विराजित हैं और दोनों ओर गज प्रतिष्ठित हैं।

बड़ी माताजी (भद्रकाली माता) – राजेश्वर मंदिर के सम्मुख, भगवान राजेश्वर की कुलदेवी के रूप में प्रतिष्ठित।

हिंगलाज देवी मंदिर – शक्तिपीठ स्वरूप में प्रसिद्ध, यहाँ भक्तों को मातृस्नेह और अदम्य शक्ति का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

शीतला माता मंदिर (पुत्र-पुत्री रत्न पीठ) – संतान प्राप्ति और पारिवारिक सुख-शांति की अधिष्ठात्री।

बागेश्वरी माता मंदिर – भक्ति और आराधना का पावन केंद्र।

सती माता मंदिर – त्याग, श्रद्धा और धर्मनिष्ठा की प्रतीक।

लालबाई-फुलबाई माता मंदिर – लोकश्रद्धा और जनआस्था का प्रतीक।

नागेश्वरी माता मंदिर (सली समाज) – सली समाज की कुलदेवी, नागेश्वरी स्वरूप में प्रतिष्ठित।

भक्ति, शक्ति और कृपा का संगम

महेश्वर की त्रयोदशी शक्तिपीठ केवल आस्था के केंद्र नहीं हैं, बल्कि नगर की सामाजिक-सांस्कृतिक जीवनधारा के संरक्षक भी हैं। नवरात्रि और अन्य पर्वों पर यहाँ भव्य आयोजन होते हैं, जिनमें नगर की गलियाँ देवी भक्ति से आलोकित हो उठती हैं।

होल्कर काल से चली आ रही इन पीठों की परंपरा आज भी अखंड रूप से जीवित है। मान्यता है कि ईश्वर सर्वपूजनीय है, परंतु कुलदेवी के बिना पूजा अधूरी मानी जाती है। यही कारण है कि महेश्वर की ये तेरह शक्तिपीठ प्रत्येक समाज के लिए विशेष महत्व रखते हैं।

नर्मदा तट पर स्थित इन पीठों की आध्यात्मिक ऊर्जा साधकों को साधना की गहराई में ले जाती है और श्रद्धालुओं को आशीर्वाद का अनुभव कराती है। यहाँ आने वाला प्रत्येक भक्त मातृशक्ति की कृपा से अपने जीवन में ऋणमुक्ति, शांति और कल्याण का अनुभव करता है

महेश्वर की त्रयोदशी शक्तिपीठ परंपरा श्रद्धा, भक्ति और शक्ति आराधना की अनवरत धारा है। यह केवल महेश्वर की आध्यात्मिक पहचान ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण क्षेत्र की सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर भी है। नर्मदा तट पर बसे ये देवी पीठ महेश्वर को एक दिव्य आध्यात्मिक धाम बनाते हैं, जिसकी ख्याति भारत ही नहीं, बल्कि विश्वभर में फैली हुई है।

सात माताओं का स्नान महात्म्य

नर्मदा तट पर स्थित सात माताओं के घाट पर नवरात्रि में स्नान का अद्वितीय महत्व है।

मान्यता है कि यहाँ स्नान करने से समस्त पाप क्षीण हो जाते हैं और सातों माताएं अपनी दिव्य कृपा से भक्तों को शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक बल प्रदान करती हैं।

नर्मदा महात्म्य में कहा गया है—

नर्मदा के दर्शन मात्र से पाप नष्ट हो जाते हैं,

स्पर्श करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है,

और जल पान करने से अमृत तुल्य फल मिलता है।

नवरात्रि में ब्रह्ममुहूर्त, प्रातः 4 बजे से ही भक्त श्रद्धा भाव से स्नान हेतु पहुँचते हैं।

उगते हुए सूर्य को अर्घ्य अर्पण करना जीवन में नई ऊर्जा, उत्साह और सौभाग्य का संचार करता है।

साथ ही, यह स्नान शरीर को स्वास्थ्य प्रदान कर आत्मा को निर्मल कर देता है।

भोर का यह दृश्य जब लहरों पर आरती की ज्योतियाँ झिलमिलाती हैं,

शंख-घंटियों की गूंजती ध्वनि और ₹जय माँ नर्मदा₹ के उद्घोष से आकाश गूँज उठता है—

तब यह घाट साधना और श्रद्धा का अलौकिक तीर्थ प्रतीत होता है।

देवी स्तुति में कहा गया है—

या देवी सर्वभूतेषु शक्ति-रूपेण संस्थिता,

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।

नवरात्रि के इस पावन अवसर पर सात माताओं का स्नान न केवल तन और मन को शुद्ध करता है,

बल्कि साधक को शक्ति, साहस और जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा भी प्रदान करता है।

स्वाति सिंह राठौर साहिबा महेश्वर मध्यप्रदेश

गंडीम्मैसमा दोमरा पोचमपल्ली स्थित हनुमानजी मंदिर में नवरात्रि के अवसर पर हनुमान जी को चांदी का मुकुट भेंट किया गया। अवसर पर उपस्थित राजशेखर रेड्डी, महेन्द्र रेड्डी, दिनेश सीरवी, मुरली मनोहर (पप्पू भाई), जगदीश सीरवी,पंडित जी किरण आचार्य, व अन्य।

अंततः झारखंड से चोरी हथनी बिहार से बरामद ,छपरा में बिक्री हुई थी 27 लाख में जयमती

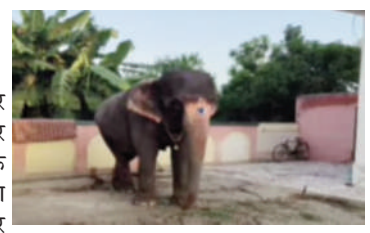

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची , पलामू से चोरी हुई हथिनी जयामति आखिरकार बरामद कर ली गई है. मादा हाथी को बिहार में छपरा के अमनौर से बरामद कर लिया गया है. हथिनी को अमनौर के पहाड़पुर के रहने वाले गोरख सिंह नामक व्यक्ति को 27 लाख रुपए में बेचा गया था. उत्तर प्रदेश की मिर्जापुर के रहने वाले नरेंद्र कुमार शुक्ला ने 12 सितंबर को पलामू के मेदिनीनगर के सदर थाना में एक आवेदन दिया था और जयमति नामक हथिनी की चोरी की शिकायत की थी. पूरे मामले में पलामू के सदर थाना की पुलिस अनुसंधान कर रही थी. हाथी में चिप भी लगा हुआ था. इसी क्रम में पलामू पुलिस को सूचना मिली. जिसके बाद एसपी के निर्देश पर टीम का गठन किया गया था. पलामू के सदर थाना की पुलिस को सूचना मिली थी कि हथिनी बिहार के छपरा के अमनौर के इलाके में एक व्यक्ति को बेचा गया है. इसी सूचना के आलोक में सदर थाना की पुलिस सोमवार बिहार गई और हाथी को जप्त किया. इसमें स्थानीय थाना और छपरा के वन विभाग ने भी सहयोग किया. जिस वक्त मामला दर्ज किया गया था उस वक्त हथिनी की कीमत एक करोड़ रुपए बताई गयी थी. पलामू के सदर थाना प्रभारी लालजी ने बताया कि पुलिस के अनुसंधान में कई बातों की जानकारी

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com

(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**